महाराज पृथ्वीसिंह 'रसनिधि'

कृत

रतनहजारा

संपादक

हरिमोहन मालवीय

शक १८९०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

महाराज पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' कृत

रतनहजारा

सम्मेलन आकार ग्रन्थमाला-पुष्प—८

महाराज पृथ्वीसिंह 'रसनिधि'

कृत

रतनहजारा

संपादक

हरिमोहन मालवीय
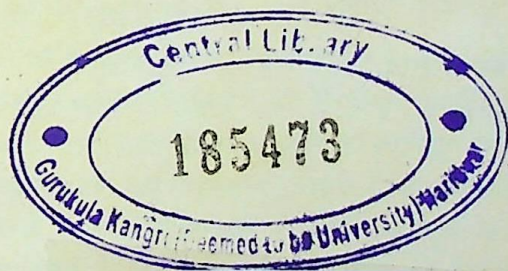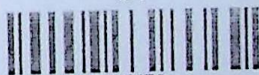
शक १८९०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रकाशक
मौलिचन्द्र शर्मा
सचिव, प्रथम शासन निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रथम संस्करण : १९६८
मूल्य : २०-००

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन विगत अनेक वर्षों से देश के विभिन्न अंचलों से हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह और संरक्षण का कार्य करता आ रहा है। लगभग आठ सहस्र ग्रन्थों के इस बृहत् संग्रह में अनेक ग्रन्थ ऐसे भी हैं, जो अप्रकाशित एवं महत्वपूर्ण हैं और जिनके प्रकाश में आने से हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि हो सकती है। इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखकर प्रथम शासन निकाय के कार्यकाल में विशेषज्ञ विद्वानों की एक परामर्शदातृ समिति का गठन किया गया और उसके निर्देशन में आठ हस्तलिखित ग्रन्थों के सम्पादन एवं प्रकाशन की एक योजना बनायी गयी। इस योजना के सात ग्रन्थ अब तक प्रकाशित हो चुके हैं और अन्तिम आठवाँ ग्रन्थ रसनिधि कृत 'रतन-हज़ारा' अध्येताओं के लिए प्रस्तुत है। इस योजना के दूसरे चरण में हिन्दी के प्राचीनतम जैन ग्रन्थों तथा आयुर्वेद और ज्योतिष के ग्रन्थों के सम्पादन एवं प्रकाशन-कार्य को हाथ में लिया जा रहा है।

इस कृति का सम्पादन प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के रीडर श्री उमाशंकर शुक्ल के निर्देशन में श्री हरिमोहन मालवीय ने किया है। सम्पादन-कार्य में श्री शुक्ल जी का सम्मेलन को जो महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहा है, उसके लिए सम्मेलन की ओर से मैं आभार प्रकट करता हूँ। इस पुस्तक के सम्पादक श्री मालवीय भी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने विभिन्न स्रोतों से सामग्री का संग्रह एवं चयन कर प्रस्तुत पुस्तक को अधिक प्रामाणिक एवं सर्वांगीण बनाने का यत्न किया है।

प्रस्तावित योजना के आठ अप्रकाशित एवं महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थों के निर्देशन तथा सम्पादन के लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान करने की कृपा की है। उसी के अन्तर्गत यह आठवाँ ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। एतदर्थ मैं सम्मेलन की ओर से भारत

सरकार के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। आशा है कि अज्ञात एवं दुर्लभ कृतियों को प्रकाश में लाने की इस उपयोगी योजना के संचालन के लिए भविष्य में भी भारत सरकार से सम्मेलन को वित्तीय सहायता प्राप्त होती रहेगी।

अपने बहुमूल्य ग्रन्थ संग्रहों को भेंट स्वरूप प्रदान करने में सम्मेलन को जिन साहित्य प्रेमी एवं उदारचेता महानुभावों का योगदान प्राप्त होता रहा, उनमें जयपुर (राजस्थान) निवासी, कविवर पद्माकर के वंशज, श्री कमलाकर 'कमल' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रस्तुत पुस्तक की आधारभूत हस्तलिखित प्रति श्री 'कमल' जी द्वारा १९५१ ई० में सम्मेलन को प्राप्त हुई थी। उन्होंने अपना सारा संग्रह सम्मेलन को भेंट स्वरूप प्रदान करने के साथ-साथ अनेक व्यक्तियों को भी उसके लिए प्रेरित कर सम्मेलन की एवं हिन्दी जगत् की बहुत बड़ी सहायता की है। सम्मेलन की ओर से श्री 'कमल' जी के प्रति मैं सादर कृतज्ञता अर्पित करता हूँ। आशा है, भविष्य में भी सम्मेलन को उनका उदार सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

मौलिचन्द्र शर्मा
सचिव
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

विषय-सूची

संकेत विवृति

क० — कन्हड़गढ़ की प्रति का पाठ

छं० — छंद

छं० सं० — छंद संख्या

द० — दतिया से प्राप्त हस्तलिखित प्रति

प्र० — प्रभाकर द्वारा की हुई प्रतिलिपि

भा० -- भारतजीवन प्रेस द्वारा प्रकाशित रतनहजारा

रतनहजारा का विषय-विभाजन

———

भूमिका

रसनिधि-परिचय

'बुन्देल वैभव' के सम्पादक श्री गौरीशंकर द्विवेदी को छोड़कर शेष सभी विद्वानों ने सेंहुड़ा के जागीरदार पृथ्वीसिंह को ही रसनिधि कवि माना है। श्री द्विवेदी को रतन हजारा की एक प्रति ओरछा राज्य के भूतपूर्व दीवान नसरत जमाँ खां के संग्रहालय में मिली थी जिसमें 'श्री महाराजाधिराज श्री राजा प्रथीसिंघ जू देव कृति लिख्यते' लिखा था। इसी के आधार पर श्री द्विवेदी ने लिखा है कि 'इससे प्रतीत होता है कि या तो रसनिधि बहुत ही बड़े जागीरदार रहे होंगे या फिर महाराज पृथ्वीसिंह ओरछा-नरेश ही जिनका यही जन्म-काल, कविता-काल और शासन-काल था, ये महानुभाव हों, क्योंकि जागीरदार को महाराजाधिराज श्री राजा इत्यादि नहीं लिखा जाता।"[१]

ओरछा के जिस महाराज पृथ्वीसिंह का उल्लेख श्री द्विवेदी जी ने किया है उनका वृत्त श्री गोरेलाल ने 'बुन्देलखण्ड के संक्षिप्त इतिहास' में इस प्रकार दिया है, 'उदितसिंह के मरने पर उसके नाती अमरसिंह का लड़का पृथ्वीसिंह राजा हुआ। इसके समय वि० सं० १७९९ में मराठों ने झाँसी, मऊ, रानीपुरा, और बरुआसागर के परगने निकाल लिये। इसके समय अहमदशाह अब्दाली की चढ़ाई, मुहम्मदशाह की मृत्यु और अहमदशाह का राज्यारोहण ये ही मुख्य घटनायें दिल्ली में हुई थीं। यह वि० सं० १८०९ में मरा।'[२] इतिहासकार गोरेलाल ने कहीं भी ओरछा के पृथ्वीसिंह के कवि होने का उल्लेख नहीं किया है। किन्तु अक्षर अनन्य के सन्दर्भ में उन्होंने लिखा है कि 'अनन्य दतिया राज्य के अन्तर्गत सेंहुड़ा

---

१. बुन्देल वैभव, पृ० ३८१।
२. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पृ० १५५।

के निवासी और जाति के कायस्थ थे। दतिया के राजा दलपतराय के पुत्र और सेंहुड़ा के जागीरदार पृथ्वीचन्द्र के ये गुरु थे।[1] यह स्मरणीय है कि जिस दलपतराय के पुत्र पृथ्वीचंद्र की चर्चा यहाँ पर इतिहासकार ने अक्षर अनन्य के सन्दर्भ में की है, उन्हीं को दतिया के वंश-वृक्ष में पृथ्वी सिंह लिखा है। श्री गोरेलाल तिवारी द्वारा प्रस्तुत दतिया के राजाओं का वंशवृक्ष[2] इस प्रकार है।
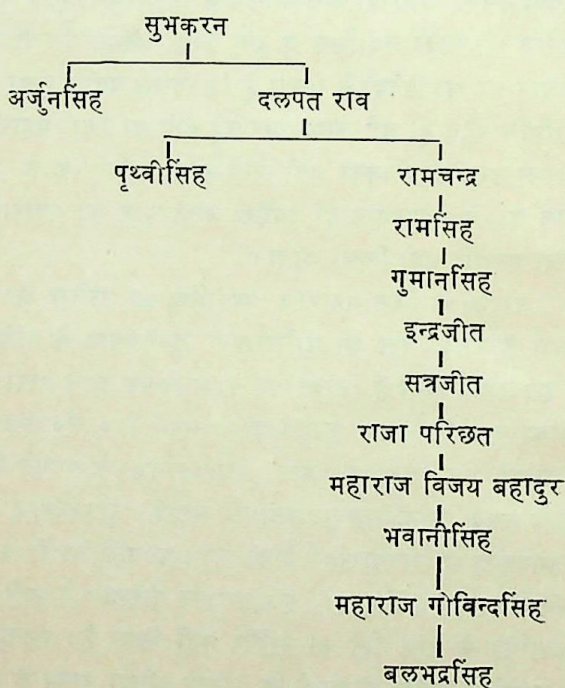
१. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पृ० २२६।
२. वही, पृ० ३९३।

वंशवृक्ष आदि से यह सिद्ध है कि सेंहुड़ा के पृथ्वीसिंह को ही पृथ्वीचंद्र भी कहा गया है। विशेष रूप से अक्षर अनन्य की प्रकाशित कृतियों में पृथ्वीचन्द्र नाम उपलब्ध होता है। श्री अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव का मत है कि 'पृथ्वीसिंह का नाम पृथ्वीचंद्र, प्रथीसिंह और पृथ्वीसिंह तीनों ही मिलता है।. . .श्री अक्षर अनन्य ने पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' को समझाते हुए तथा उन्हें ज्ञान-मार्ग का उपदेश देते हुए जो चिट्ठे लिखे हैं उनमें प्रथीचंद और प्रथीसिंह दोनों ही नाम मिलते हैं।"[1]

सेंहुड़ा के जागीरदार पृथ्वीसिंह को ही यदि महाराज के प्रशस्ति-सूचक सम्बोधन से प्रतिलिपिकार ने विभूषित किया हो तो कोई आश्चर्य नहीं है। वे साधारण जागीरदार नहीं थे। उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व था। सेंहुड़ा, दतिया से छत्तीस मील दूर काली सिंध के तट पर बसा था और यहीं से वे युद्ध और राजनीति का संचालन करते थे। महाराज पृथ्वीसिंह का पूर्वजों की भाँति ही मुगल शासकों से अच्छा सम्बन्ध था। अवधवासी लाला सीताराम ने भी लिखा है कि—'दतिया के महाराज दलपतराव बड़े वीर और मुगल-सम्राट् के बड़े खैरख्वाह थे। उनके पिता महाराज शुभकरन जी ने मुगल साम्राज्य की बड़ी सेवा की थी और उनके मरने पर औरंगजेब ने बड़ा शोक प्रकाश किया और उनके उत्तराधिकारी महाराज दलपतराव को पंचहजारी का पद दिया। दलपतराव ने सन् १६८३ से १७०७ तक राज्य किया। उनके ५ कुँवर थे। पहले कुँवर महाराज रामचंद्र उनके उत्तराधिकारी हुए और दूसरे कुँवर पृथ्वीसिंह को, जिन्हें अक्षर अनन्य अपने ज्ञानयोग में पृथ्वीचंद राय कहता है, स्योढ़ा की जागीर मिली।[2]

पहले दतिया और सेंहुड़ा की जागीर ओरछा राज्यान्तर्गत थी। कालान्तर में ओरछा राज्य मुगल छत्रछाया में चला गया और दतिया को मुगल संरक्षण में जाना पड़ा। फिर कभी भी यदि बुन्देलों और मुगलों में

---

१. **विंध्य साहित्य संकलन, पृ० १७७ ।**
२. **प्रेमदीपिका की भूमिका, पृ० १२, १३।**

संघर्ष हुआ तो दतिया मुगलों के साथ था, और सेंहुड़ा भी। सेंहुड़ा को दतिया से अलग जागीर के रूप में अस्तित्व देने का श्रेय भी पृथ्वीसिंह को ही था, इससे पूर्व वह दतिया का ही भाग था।

छत्रसाल और मुगलों के इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मदशाह बंगश (उपस्थिति-काल सं० १७७८) के संघर्ष में प्रारम्भ में सेंहुड़ा के पृथ्वीसिंह ने मुगलों का साथ दिया था। यह संघर्ष महाराज छत्रसाल द्वारा पीरखाँ को कालपी से निकाल देने के कारण हुआ था, किन्तु सं० १७८६ में बाजीराव पेशवा द्वारा बुन्देलों को जो सहायता मिली थी, उससे अनेक हिन्दू नरेशों ने मुसलमानों का साथ छोड़ दिया था। इतिहास मौन है कि उस स्थिति में पृथ्वीसिंह की क्या नीति थी? क्योंकि आगे चलकर मुगलों के साथ केवल मौदहा के जागीरदार जयसिंह तथा ओरछा के राजा के छोटे भाई लक्ष्मणसिंह ही थे। यह संघर्ष छत्रसाल द्वारा जैतपुर दुर्गविजय के बाद समाप्त हुआ, जबकि मुहम्मद खां बंगश को किला छोड़कर भागना पड़ा था। इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण जागीरदार को यदि प्रतिलिपिकार ने महाराजाधिराज आदि के विरुद से स्मरण किया हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वास्तव में पृथ्वीसिंह के पिता दलपतराव ने संवत् १७४० से सं० १७६३ वि० तक राज्य किया था। श्री अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव के अनुसार १७६३ वि० में औरंगजेब के लड़के आजमशाह के पक्ष में युद्ध करते समय एक तोप का गोला आपके हाथ में लगा और उसी समय आपका देहावसान हो गया।[1] श्री श्रीवास्तव ने पृथ्वीसिंह की राज्य-प्राप्ति का समय १७६७ वि० लिखा है। दलपतिराव का जन्मकाल १७०० वि० है, इसके आधार पर उनके पाँच पुत्रों में तृतीय पुत्र पृथ्वीसिंह का जन्मकाल सं० १७३० श्रीवास्तवजी ने सुझाया है।

रतनहजारा में कवि रसनिधि ने अपने वास-स्थान और स्वभाव का एक स्थान पर संकेत दिया है। कवि का कथन है—

---

१. विंध्य साहित्य संकलन, पृ० १७६।

इत जमुना रमना उतै बीच जहांनाबाद।
तामै बसि नेकी करौं करौं न वाद विवाद॥१८५॥

उपर्युक्त छंद पर विचार करने से यही प्रतीत होता है कि 'रमना शब्द 'रेवा' (नर्मदा) का अपभ्रंश रूप है। बुंदेलखंड की सीमा का द्योतन करते हुए प्राचीन कवियों ने 'रेवा' शब्द का उल्लेख किया है। 'बुंदेलखंड के इतिहास' लेखक दीवान प्रतिपालसिंह ने बुंदेलखंड की सीमा के संबंध में स्वनिर्मित छंद में यमुना और रेवा का उल्लेख किया है—

उत्तर समतल भूमि गंग जमुना सु-बहति है।
प्राची दिस कैमूर, सोन, कासी सु-लसति है॥
दक्खिन रेवा विंध्याचल तन सीतल करनी।
पच्छिम में चंचल चंचल सोहति मनहरनी॥[1]

बुंदेलखंड की सीमा-रेखा का वर्णन करते समय नर्मदा और जमुना का ही उल्लेख प्रायः इतिहास-ग्रंथों में मिलता है। महाराज छत्रसाल के राज्य की सीमा का निर्देश करते हुए भी कहा गया है—

'इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस।'

अतएव कवि ने अपने बुंदेलखंड के निवास का आत्मसाक्ष्य ही उपर्युक्त छंद में प्रस्तुत किया है। 'जहाँनाबाद' का आशय यहां पर आबाद-क्षेत्र (संसार) से ही है वह किसी नगर या स्थान का नाम नहीं प्रतीत होता।

रसनिधि के गुरु अक्षर अनन्य

अक्षर अनन्य तथा रतनहजारा के कवि महाराज पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' के सम्बन्ध में बहुत पहले ही विद्वानों का ध्यान गया था। सन् १९०६-८

---

१. बुन्देल वैभव, पृष्ठ ५०।

के नागरी प्रचारिणी सभा के खोज-विवरण में बाबू श्यामसुन्दरदास ने राजा पृथ्वीचंद या पृथ्वीराज के विषय में यह लिखा है—

"कुँवर प्रिथीराज, सन आफ दलपतराय (१६९७–१७०९) आफ दतिया। ही वाज हिमसेल्फ गुड पोएट ऐन्ड रोट अन्डर द नान-द-प्लम रसनिधि। द पोएट अक्षर अनन्य फ्लोरिश्ड एट हिज कोर्ट।"

इसी भाँति उसी खोज-रिपोर्ट में अक्षर अनन्य का भी परिचय इस प्रकार दिया गया है—

"अक्षर अनन्य (१६५३ ए० डी०)। ही वाज ए कायस्थ आफ सेंहुड़ा, ए विलेज इन द दतिया स्टेट। ही वाज ए सन्यासी वेलवर्स्ड इन द वेदान्तिक सिस्टेम आफ फिलोसोफी। ही वाज सो स्किल्ड इन द मीट्रिकल कम्पोजीशन दैट ही आफेन स्पोक इन वर्स। वन्स महाराज छत्रसाल आफ पन्ना इनवाइटेड हिम टु हिज कोर्ट, बट ही डिक्लाइन्ड टु अटेन्ड। ही वाज द फर्स्ट मैन टु ट्रान्सलेट द दुर्गा सप्तशती इन्टू हिंदी वर्स। हिज डिसेन्डैन्ट्स आर स्टिल फाउन्ड इन द दतिया स्टेट। बीइंग द स्प्रिचुअल प्रिसेप्टर आफ कुँवर प्रिथीराज, ही रिसीव्ड, फ्राम हिम सम विलेजेज इन द वे आफ जागीर व्हिच ही हैन्डेड ओवर टु हिज ब्रदर।"

अक्षर अनन्य और महाराज पृथ्वीसिंह का गुरु-शिष्य संबंध था। अनन्य ग्रंथावली[1] में अक्षर अनन्य रचित राजयोग, ज्ञानयोग, विज्ञानयोग और विज्ञानबोध ग्रंथ संकलित हैं। इन ग्रंथों में अक्षर अनन्य ने पृथ्वीचंद्र नरेश को संबोधित करते हुए विविध विषयों का ज्ञान कराने का प्रयास किया है। स्थान-स्थान पर अक्षर अनन्य ने लिखा है—

१. वेद प्रमाण अनन्य भने यह भेद सुनो पृथिचन्द्र नरेश्वर।

राजयोग १–४

२. यह भेद सुनो पृथिचन्द्र राय। कल चारिहु को साधन उपाय।

राजयोग १–१

---

१. अनन्य ग्रन्थावली, सं० ठकुर सूर्यकुमार वर्मा, ना० प्र० सभा, १९१३।

३. सुख मारग यह पृथिचन्द्र राइ। इहि सम न आहि दूज उपाइ।

राजयोग त्रोटक १९–२

४. राजयोग सिद्धान्त यह सुनो राज प्रथिचन्द्र।

राजयोग दोहा १–१

५. प्रथीचन्द्र नृपराज तुम्हारे ज्ञान सुनन की इच्छा।
भाँति भाँति को ज्ञान जगत में सुनो हमारी शिक्षा।

६. अक्षर अनन्य देत सिख पूरी बड़ा ज्ञान गुरु अर्चा।
प्रथीचंद्र नृपराज जानिये या सम और न चर्चा।।

विज्ञान बोध २८

७. प्रथीचन्द नृपराज आपसो ज्ञान कथा हम भाखें।
भांति भांति सम्बोधन करिके संभ्रम कहूँ न राखें।।

विज्ञान बोध—१

अनन्य ग्रंथावली कृतियों के ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा ने 'विज्ञान बोध परिचय' के अन्तर्गत अक्षर अनन्य और राजा पृथ्वीचंद्र के संबंध में लिखा है—

'अनन्य ने अपनी कविता में राजा प्रथीचन्द्र को सम्बोधन करके कविता की है। परन्तु इस बात का ठीक-ठीक पता नहीं चलता कि ये राजा प्रथीचंद्र कौन थे। हमारे एक मित्र ने हमें सूचना दी है कि मौजा गिरवासा परगना सोढ़ा रियासत दतिया निवासी राजा प्रथीचन्द्र के लिए ही यह कविता अनन्य कवि ने बनाई थी। उनके कथन और कविता की भाषा देखकर जाना जाता है कि अनन्य कवि बुन्देलखण्ड वासी जरूर थे। अनन्य कवि ने अपनी कविता में अपने निवास-स्थान का कहीं पर भी परिचय नहीं दिया और न अपने ग्रन्थों के बनाने का समय ही दिया है। सुना जाता है कि आप जाति के कायस्थ थे और राजा प्रथीचंद्र के दीवान थे।[1]

---

१. अनन्य ग्रन्थावली, पृ० १, २।

आगे श्री सूर्यकुमार वर्मा ने एक घटना का भी उल्लेख इस प्रकार किया है—

'एक दिन वे राजा के व्यवहार से विरक्त होकर घर से निकल साधु हो गए। जब आप घर पर कई दिन हो गए वापस न आए तब राजा ने तलाश करवाई। आपका पता लगने पर राजा स्वयं लेने गये। जिस समय राजा आपके पास गए आप पैर पसारे लेटे थे। आपने राजा के आने पर न तो उनका स्वागत किया और न उठकर बैठे। राजा ने अपना अनादर समझकर पूछा । 'पैर पसारे कब से ?' आपने उत्तर दिया, 'हाथ समेटा तब से' अर्थात् जब से हाथ समेट लिया, माँगना या लेना छोड़ दिया, तब से पैर फैला दिए। राजा जवाब सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें समझा-बुझाकर फिर वापस ले गये। उसी समय राजा के लिए आपने 'राजयोग' ग्रन्थ बनाया।[1] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने न जाने किस आधार पर इस घटना को महाराज छत्रसाल के साथ घटित बताया है।[2] श्री अवधनिवासी सीताराम ने महात्मा अक्षर अनन्य कृत प्रेम दीपिका की भूमिका अगहन सुदी ५ सं० १९३५ में लिखी थी। इसमें भी महाराज पृथ्वीसिंह और अक्षर अनन्य के गुरु-शिष्य सम्बन्ध में श्री सीताराम जी ने लिखा है--

'कुँवर पृथ्वीसिंह को, . . .अक्षर अनन्य ज्ञानियों में पृथ्वीराय कहता है, . . । अक्षर अनन्य ने कविता में अपना नाम अछिर अच्छिर, आछिर अनिन्न और अनिन्न लिखते हैं। जाति के कायस्थ इन्हीं (पृथ्वीचंदराय) के गुरु थे।[3]

श्री बाजूराय द्विज दास जो कि अक्षर अनन्य के प्रपौत्र थे उनके द्वारा लिखित वंशावली में अक्षर अनन्य और पृथीचंद्र (पृथ्वीसिंह) का उल्लेख मिलता है। अक्षर अनन्य के पूर्वजों के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है कि--

---

१. अनन्य ग्रन्थावली पृ० २।
२. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० ९१।
३. प्रेमदीपिका, पृ० १२, १३।

नगर ओरछे में बसे, कायथ मानिक चंद।
फूलचंद तिनके अनुज, निसदिन आनन्द कंद।।
धरमदास जेठे भये, लहुरे ,मंगद राम।
मंगद के सुत दो भये, जेठे केसवराय।।
मानसाह लहुरे भये, प्रभुपद प्रीति सुहाय।।
केशवराय सुबुद्धि सुत, भये मुकुट मन दान।
भावसिंह लहुरे भये, सहज सुखन की खान।।
पूरन पुन्य प्रताप जग, भानसाह को नन्द।
अक्षर अनन्य सुकुलकलस, प्रकटो आनन्दकंद।

आगे लिखा है—

श्रवण करत बुन्देल मनि, प्रथीचंद नरनाह।
आनलिये आसन निकट, अतिहित प्रेम उदाह।।

इस वृत्त से यह भी सिद्ध है कि प्रथीचंद्र का सम्बन्ध स्वामी अक्षर अनन्य से अति प्रगाढ़ था। अक्षर अनन्य और रसनिधि के एक चित्र का भी उल्लेख मिलता है, जिसमें रसनिधि के दरबार में अक्षर अनन्य राधाकृष्ण की पूजा करते हुए चित्रित किये गये हैं।[1]

रसनिधि के गुरु अक्षर अनन्य भी असाधारण विद्वान् और सुकवि थे। बाबू श्यामसुन्दरदास ने सर्वप्रथम अक्षर अनन्य कृत निम्नलिखित ग्रन्थों का उल्लेख किया है—

१. अनुभव तरंग, २. राजयोग, ३. प्रेमदीपिका (जिसमें उद्धव का मथुरागमन वर्णित है) ४. ज्ञानबोध (विज्ञान योग–दे० अनन्य ग्रन्थावली) ५. ज्ञान पचासा (ज्ञान योग–दे० अनन्य ग्रन्थावली) ६. दैवशक्ति पच्चीसी (शक्ति पच्चीसी, या अनन्य पच्चीसी) ७. भवानी स्तोत्र, ८. वैरागतरंग, ९. योगशास्त्र तथा १०. कविता संग्रह।

---

१. विंध्य साहित्य संकलन , पृ० १७८।

लाला सीताराम ने प्रेमदीपिका की भूमिका में अक्षर अनन्य कृत १८ ग्रन्थों का उल्लेख किया है—

१. सिद्धान्त बोध, २. ज्ञान बोध, ३. हरसम्वाद भाषा, ४. योग-शास्त्र स्वरोदय, ५. अनन्य योग, ६. राजयोग, ७. अनन्य की कविता, ८. दैवशक्ति पच्चीसी (शक्ति पच्चीसी, अनन्य पच्चीसी), १०. प्रेम दीपिका ११. उत्तम चरित्र। (श्री दुर्गाभाष), १२. अनुभव तरंग, १३. ज्ञान बोध, श्री सरस मंजावली, १५. ब्रम्हज्ञान १६. ज्ञान पचासा, १७. भवानी स्तोत्र तथा १८ वैराग्य तरंग, (प्रेम दीपिका की भूमिका)

श्री अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव ने विंध्य साहित्य संकलन में लिखा है कि—इतिहास-लेखकों ने आपके ३१ ग्रन्थों का उल्लेख किया है—१. राजयोग, २. विज्ञानयोग, ३. ध्यानयोग, ४. सिद्धान्त बोध, ५. विवेक दीपिका, ६. ब्रम्हज्ञान ७. अन्य प्रकाश, ८. उत्तम चरित्र, ९. अनुभव तरंग, १०. प्रेम दीपिका, ११. ज्ञानबोध, १२. ज्ञान पचासा, १३. दैव-शक्ति पचासा, १४. भवानी स्तोत्र, १५. योगशास्त्र, १६. कविता संग्रह, १७. विज्ञान बोध, १८. अंक बत्तीसी, १९. विवेक शतक, २०. निरवार शतक, २१. विवेक तरंग, २२. वैराग्य तरंग, २३. उपासना सार, २४. प्रह्लाद चरित्र, २५. अनन्य योग, २६. हरसम्वाद, २७. श्री सरस मंजावली, २८. योगशास्त्र, २९. ज्ञान बोध, ३०. ज्ञान योग और ३१, योगशास्त्र स्वरोदय।[१]

श्री श्रीवास्तव ने इनमें से २५ ग्रन्थों के प्राप्त होने की बात कही है। इससे यह सिद्ध है कि अक्षर अनन्य असाधारण प्रतिभा के संत थे जिनके व्यक्तित्व की छाया रसनिधि पर अवश्य ही प्रभावी रूप में पड़ी थी।

अक्षर अनन्य और पृथ्वीसिंह के पत्र

दतिया पुस्तकालय की सूची में रसनिधि के पत्र का उल्लेख पृ०

---

१. विंध्य साहित्य संकलन, पृ० १४५।

संख्या ६२ पर मिलता है। सम्भवतः ये पत्र वही हैं जिनके लेखक अक्षर अनन्य हैं, जिन्होंने रसनिधि के नाम पत्र लिखे थे। इसे अक्षर अनन्य का चिट्ठा कहा गया है।

ये चिट्ठे सेंहुड़ा में रहकर अक्षर अनन्य ने उपदेश देने के निमित्त पृथ्वीसिंह को सम्बोधित करते हुए लिखे थे। श्री अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव ने इन चिट्ठों के सम्बन्ध में लिखा है कि इनको अक्षर अनन्य ने सिन्धु के रमणीक तट पर बैठकर लिखा था और प्रथीसिंह के पास चिट्ठी के रूप में भिजवाया था। इसी का इनके नाम अक्षर अनन्य के चिट्ठा तथा प्रथीसिंह मत प्रबोध दोनों ही मिलते हैं। इनके अतिरिक्त अलग-अलग चिट्ठे विभिन्न नाम के प्राप्त होते हैं।[1]

श्री श्रीवास्तव के अनुसार इस प्रकार के चिट्ठों की संख्या १३ है जो एक ही ग्रन्थ के भाग हैं। इनके अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों में महाराज प्रथीसिंह का उल्लेख नहीं मिलता।

श्री श्रीवास्तव के अनुसार नागरी प्रचारिणी सभा से जो अनन्य ग्रन्थावली प्रकाशित हुई है उसमें इसी पुस्तक के चिट्ठों को संकलित किया गया है। भ्रम से उन चिट्ठों को संपादक श्री सूर्यकुमार वर्मा तथा श्री श्यामसुन्दरदास जी ने अलग-अलग पुस्तकें मान ली हैं।

अक्षर अनन्य से रसनिधि का संपर्क

अक्षर अनन्य से महाराज पृथ्वीसिंह की भेंट का भी एक आख्यान प्रचलित है, जिसके अनुसार धामपंथ के प्रवर्त्तक महात्मा प्राणनाथ से प्रभावित होकर महाराज पृथ्वीसिंह उनके अनुयायी बनना चाहते थे। महात्मा प्राणनाथ ने यह भी प्रलोभन दिया था कि वे सेंहुड़ा (पृथ्वीसिंह के राज्य) में हीरे की एक खान का पता देंगे। महाराज के इस निर्णय से रानी को क्षोभ हुआ और उसने पत्र द्वारा ओरछा से महात्मा अक्षर अनन्य को

---

१. विंध्य साहित्य संकलन, पृ० २४२।

बुला लिया। अक्षर अनन्य के सेंहुड़ा पहुँचने पर महात्मा प्राणनाथ चले गए और महाराज अनन्य जी की बात मान गए।

एक अन्य वृत्तान्त का उल्लेख भी मिलता है, जिसके अनुसार पृथ्वीसिंह तथा उनकी रानी बहुधा ओरछे में रामचन्द्र जी के दर्शन करने के लिए आया करते थे। समय-समय पर राजदम्पति की अक्षर अनन्य से भेंट हुआ करती थी। धीरे-धीरे जब पृथीसिंह अक्षर अनन्य की विद्वत्ता और उनके ज्ञान पर मुग्ध हो गये तो उन्हें अपना गुरु मानकर सेंहुड़ा ले आये। सेंहुड़ा में सिन्धु नदी के तट पर सनकुआ नामक अत्यन्त रमणीक स्थान पर अक्षर अनन्य अपनी साधना में तन्मय होकर रहने लगे। इसका अन्त:साक्ष्य प्रभाण हमें उन्हीं की रचनाओं से प्राप्त होता है—

सिन्धु नदी बन दण्डक सो, सनकादि सनकादि सो क्षेत्र सदा जल गाजैं।
कासी सो बास घने मठ शम्भु के साधु, समाज जै बोल सदा जै।।
कोट अटूट बनो गिरिपै प्रथु सो, प्रथीचन्द नरेश विराजै।
उद्धित मंदिर तीर नदी तिहि आसन अस्थिर आछिर साजै।।

आयबो जैबो हमारो नहीं सनकादि के धाम में आसन मंडी।
तीरत देवता राज समाननि जात नहीं भूमना सब छंडी।।
विंध्य साहित्य संकलन, पृ० १३२

इस वृत्तान्त से यह सिद्ध हो जाता है कि अक्षर अनन्य पृथीसिंह के गुरु थे न कि दीवान जैसा विद्वानों ने आज तक यत्र-तत्र लिखा है।

रसनिधि की कृतियाँ

आचार्य शुक्ल ने रतनहजारा के अतिरिक्त अरिल्ल और 'मांझों का संग्रह' कृतियों की चर्चा रसनिधि के प्रसंग में की है। डॉ० स्नातक ने रतन हजारा के अतिरिक्त विष्णुपद कीर्तन, कवित्त, बारहमासी, रसनिधि-

सागर, गीति संग्रह, अरिल्ल, हिंडोला, आदि ग्रन्थों के खोज में प्राप्त होने की चर्चा की है। श्री श्रीवास्तव ने रसनिधि कृत १५ ग्रन्थों का अनुमान करते हुए नौ ग्रन्थों की नामावली प्रस्तुत की है—१. रतन हजारा, २. विष्णुपद, ३. स्फुटदोहा, ४. हिंडोरा, ५. अरिल्ल, ६. रसनिधि की कविता, ७. रसनिधि सागर, ८. रसनिधि के दोहे, और ९. रतन सागर। श्री गौरीशंकर द्विवेदी ने बुन्देल वैभव में १. कवित्त, २. बारहमासी, ३. गीत संग्रह अन्य तीन कृतियों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया था। अब तक केवल 'रतन हजारा' ही प्रकाशित हुआ है, जिसको आ० शुक्ल एवं डॉ० स्नातक ने 'प्रकाशित दोहा संग्रह' कहा है।

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण (सन् १९००–१९५५ ई०) के द्वितीय खंड में पृष्ठ २२१ पर रसनिधि कवि के नाम के साथ कुछ कृतियों की सूचनाएँ मिलती हैं जिनके आधार पर रसनिधि रचित बलदेव षटक, अरिल्ल और मांझ अथवा अरिल्लें, रसनिधि की कविता, रसनिधि के दोहा, दोहरा या दोहों का संग्रह तथा रसनिधि सागर[1] पृथ्वीसिंह रसनिधि की रचनाएँ हैं। वास्तव में रसनिधि की कविता एवं रसनिधि के दोहा ये दो कृतियाँ निश्चय ही रसनिधि कवि रचित किसी ग्रंथ के भाग हैं जिसे अन्वेषकों ने अपने मन से यह नाम दे दिया है।

मुक्तक-काव्य परम्परा और रसनिधि

रतन हजारा भी बिहारी सतसई की भाँति मुक्तक काव्य की प्रतिनिधि रचना है। मुक्तक मुक्त शब्द में कन् प्रत्यय के योग से बनता है जिसका अर्थ होता है अपने आप में सम्पूर्ण अर्थ-निरपेक्ष मुक्त वस्तु। ध्वन्यालोक

---

१. हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण—नागरी प्रचारिणी सभा, पृष्ठ २२१।

की लोचन टीका में मुक्तक की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है—मुक्त शब्द से स्वार्थ अपने ही अर्थ में 'क' प्रत्यय लगाकर मुक्तक बनता है। मुक्त का अर्थ है बन्धन रहित अथवा स्वतन्त्र।

मुक्तकमन्येन नालिंगितं तस्य संज्ञायां कन्'

ध्वन्यालोक लोचन टीका ७७

एक अन्य विद्वान् के अनुसार मुक्तक उस द्रव्य का नाम है जो छोड़ा जा चुका हो और जिसका कलेवर छोटा हो—

मुच्यतेऽस्येति मुक्तम् ह्रस्वं द्रव्यं मुक्तकम्

आचार्य विश्वनाथ (१४ वीं श० वि०) की परिभाषा है, छन्दों में लिखे काव्य को पद्य कहते हैं, यदि वह दूसरे पद्य से निरपेक्ष हो तो मुक्तक कहलाता है—

छन्दोबद्धपदं पद्यं तेन मुक्तेन मुक्तकम्।

साहित्य दर्पण ६।३१५

मुक्तमन्येन नालिंगतं तस्य संज्ञायां कन्।

पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन रसचर्वणं क्रियते तदेव मुक्तकम्।

अगले पिछले पद्यों से जिसका सम्बन्ध न हो, अपने विषय को प्रकट करने में अकेला ही समर्थ हो, ऐसे पद्य को मुक्तक कहते हैं।"

आनन्दवर्धनाचार्य के मतानुसार:—

मुक्तकेषु हि प्रबन्धोज्ज्वलरसबन्धाभिनिवेशिनः कवयो दृश्यन्ते। यथा ह्यमरुकस्य कवेर्मुक्तकाः शृंगारस्यन्दिनः प्रबन्धायमानाः प्रसिद्धा एव।

एक ग्रन्थ में जिस रस-स्थापना का पूरा प्रबन्ध कवि को करना पड़ता है वही बात कवि को एक मुक्तक में लाकर रखनी पड़ती है। जिस प्रकार

अमरुक कवि के मुक्तक श्रृंगार रस-प्रवाह के कारण प्रबन्ध की समता प्राप्त करने में प्रसिद्ध है। मुक्तक में अलौकिकता लाने के लिए कवि को अभिधा से बहुत कम और ध्वनि-व्यंजना से अधिक काम लेना पड़ता है, यह उसके चमत्कार का मुख्य केन्द्र है। अग्निपुराण में मुक्तक के लिए लिखा है 'मुक्तक : श्लोक एवैकश्चमत्कारक्षमः स्वयम्' अर्थात् मुक्तक उस रचना को कहते हैं जो अपना अर्थ व्यक्त करने के लिए स्वतः समर्थ हो।"

उपर्युक्त आचार्यों के मतानुसार यह निश्चित हो जाता है कि एकाकी भावपूर्ण छन्द ही मुक्तक है। मुक्तकों को प्रभावी के बनाने के लिए रस, और व्यंजना का निर्वाह सामासिक पद-रचना के साथ-साथ किया जाता है। मुक्तक काव्य गुणों से युक्त वह कृति है जिसके लिए सहायक छन्दों की आवश्यकता नहीं होती।

मुक्तक काव्य के प्रमुख छन्द

मुक्तक की चर्चा के उपरान्त मुक्तक काव्य परम्परा में प्रयुक्त छन्दों की चर्चा करना भी आवश्यक है। गाहा प्राकृत कवियों का प्रिय छन्द रहा है। 'गाहा सतसई' और 'वज्जालग्गं' में यह छन्द प्रयुक्त हुआ है। आचार्य गोवर्द्धन तथा आचार्य विश्वेश्वर कृत आर्या सप्तशतियों में आर्या छन्द का प्रयोग किया गया है। प्राकृतिक पैंगलम् ने आर्या को गाहो (गाथा) का संस्कृत रूपान्तर बताया है। ये दोनों ही छन्द दो पंक्तियों वाले दोहा सदृश छोटे छन्द हैं। अमरु शतक में शार्दूल विक्रीडित छन्द का प्रयोग हुआ है। हिन्दी के मुक्तक साहित्य के बहुप्रचलित छन्द हैं—चौपाई, दोहा, सोरठा, रोला, कुण्डलिया, हरिगीतिका, छप्पय, चवपैया, झूलण, चौपाई, सवैया तथा कवित्त आदि।

मुक्तक काव्य में दोहे की परम्परा

दोहा का सर्वप्रथम प्रयोग किस काव्य-कृति में हुआ था, इस सम्बन्ध

में भी साहित्यिकों ने विचार किया है। विद्वान् अब तक यह मानते रहे हैं कि विक्रमोर्वशीयम् के चतुर्थ अंक में प्रथम बार दोहा छन्द प्रयोग में लाया गया था। विक्रमोर्वशीयम् का वह छन्द है—

मइंजाणिअं नियलोयणी, णिसयस कोइ हरेइ।
जावण णव जलि सामल धाराहरु बरसेइ।

किन्तु ९ वीं शताब्दी के आरंभ में सिद्ध सरहपा द्वारा दोहा छन्द प्रथम बार प्रयोग में लाया गया था।

हिन्दी संत साहित्य में दोहा छन्द साखियों के रूप में आया है। विद्वानों का विचार है कि साखी साक्षी का अपभ्रंश स्वरूप है। दोहा और साखी एकार्थक हैं। सम्भवतः सिद्धों को इस शब्द का ज्ञान था। "साखि करब जालंधर पाए" पंक्ति में जालंधर को साक्षी करने का उल्लेख आया है। गोरख-पंथियों से प्रभावित होकर यह शब्द कबीर-पंथियों की रचनाओं में आया और बाद के साहित्य में दूहे का अर्थ भी साखी ग्रहण किया गया। 'हिन्दी साहित्य कोश' (पृ० ३४३)।

प्रसिद्ध बौद्ध सिद्ध योगीन्द्र रामसिंह तथा देवसेन ने दोहा छन्द का प्रयोग उपदेशों के लिए किया था। हेमचन्द्र के व्याकरण ग्रन्थ के अतिरिक्त काव्य शास्त्रीय ग्रन्थों में दोहा छन्द उदाहरणों में प्राप्त होता है। स्वयंभू के पउमचरिउ में भी यह छन्द प्राप्त है और अन्य काव्य-परंपराओं के साथ हिन्दी में अपभ्रंश से आया है। संख्यामूलक कोष-काव्यों यथा सतसई, बावनी, चौपनी आदि में यह व्यापक रूप से प्रयुक्त हुआ है और साथ ही मुक्तक पद-परम्परा के अतिरिक्त प्रबन्ध काव्यों में भी उसका प्रयोग पद्मावत और श्री रामचरित मानस आदि प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। रीति काव्यों में लक्षण और उदाहरण दोनों रूपों में इसका व्यापक प्रयोग किया गया है। मध्यकालीन कवि इस छन्द पर कितने आकृष्ट थे इसका उदाहरण रहीम द्वारा प्रस्तुत इस प्रशंसात्मक सूक्ति में मिल जाता है—

रूप कथा पद चारु पर, कंचन दोहा लाल।
ज्यों ज्यों निरखत सूक्ष्मगति, मोल रहीम विशाल।

विहारी सतसई आदि की पृष्ठभूमि में प्राकृत और संस्कृत का सप्तशती या सतसई साहित्य का और उनमें दो दलों वाले लघु छन्द का प्रयोग किया गया था अतएव उसी परम्परा में विहारी ने भी दोहा और सोरठा छन्दों का प्रयोग सतसई में किया था। वाद में इस परम्परा का निर्वाह अनेक कवियों ने किया। रसनिधि के रतन हजारा में भी सर्वत्र दोहा छन्द मिलता है, केवल कुछ स्थलों पर विहारी की भाँति इस कवि ने भी सोरठा छन्द का व्यवहार किया है।

मुक्तक कोष और उसका स्वरूप

मुक्तक काव्य रूप के संग्रह के सम्बन्ध में भी साहित्य दर्पण में आचार्य विश्वनाथ ने विचार किया है कि परस्पर निरपेक्ष श्लोक-समूह को कोष कहते हैं। यह यदि व्रज्या (वर्णमाला) के क्रम से बने तो अतिसुन्दर होता है। वस्तुतः कोष का यह लक्षण ठीक नहीं। सुभाषितावली आदि पद्य संग्रहों में यह अतिव्याप्त है। सजातीयों के एक स्थान में सन्निवेश को व्रज्या कहते हैं। (साहित्य दर्पण ६।३२९)

व्रज्या या वर्णक्रम पर आर्या सप्तशती में आर्याओं का संकलन किया गया है। विहारी सतसई की रसचन्द्रिका टीका में भी सतसई के छन्दों को यही क्रम दिया गया है। बिहारी, मतिराम आदि की कृतियों की भाँति ही रतन हजारा के छन्दों का संकलन व्रज्या क्रम में नहीं है। रतन हजारा में विषय-विभाजन करके कवि ने एक प्रकार के छन्दों को कई शीर्षकों में विभक्त कर गुलमवत सजाया है।

कवि-कृति की इस क्रम-व्यवस्था से पाठक को उस प्रकार का उलझाव नहीं होता जैसा विहारी सतसई के मूलक्रम को पढ़ते समय होता है जिसमें कवि ने मन की तरंग के अनुसार छन्दों का प्रणयन करते हुए ग्रन्थ में एक प्रकार के छन्द को एक साथ न प्रस्तुत करके क्रमहीन रूप में प्रस्तुत किया है।

हिन्दी हजारा काव्य

सतसई, शतक आदि की भाँति ही हजार छन्दों के संकलन को 'हजारा' की संज्ञा प्रदान की गई है। संभावना यह भी है कि इस प्रकार के संकलन की पृष्ठभूमि में सहस्रनाम स्तोत्रों की संख्या का आदर्श भी प्रेरक रहा हो। क्योंकि प्राचीन संस्कृत साहित्य में सहस्रनामों की विस्तृत परम्परा मिलती है।

हिन्दी में हजारा ग्रन्थों की संख्या सतसइयों की तुलना में कम है। साहित्य के इतिहासों में कुछ हजारों का ही उल्लेख मिलता है। छत्रप्रकाश के रचयिता गोरेलाल लालकवि[1] (संवत् १७१५–१७६७ वि०) कृत छत्रहजारा तथा भूषण[2] (रचना काल सं० १७३० वि०) रचित भूषण हजारा का उल्लेख प्राप्त होता है, किन्तु दोनों ही कृतियां अप्राप्त हैं।

श्री टीकमसिंह तोमर ने जयपुर-नरेश सवाई प्रतापसिंह जी के आश्रित तथा काव्यगुरु गणपति भारती (सं० १८३५–१८६० वि०) के वीर हजारा को वीररस की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय कहा है।[3] प्राचीन सुभाषित कोष-संग्रहों की परम्परा का भी स्वरूप हजारा काव्य-परम्परा में मिलता है। कालिदास और हफीजुल्ला खाँ दो कवियों के हजारों में अनेक प्राचीन कवियों के छन्दों को संकलित किया गया है। दोनों ही संग्रहकर्त्ता मौलिक कवि भी थे। कालिदास त्रिवेदी की मौलिक रचनाएँ हैं 'वधू विनोद' और 'जंजीरा'। इसी भाँति हफीजुल्ला खाँ की मौलिक और संकलित कृतियों में हैं—१. नवीन संग्रह, २. मनमोहनी, ३. महिपालसिंह सरोज, ४. प्रेमतरंगिणी, ५. रसिक संजीवनी ६. षट्ऋतुकारक संग्रह आदि।

कालिदास हजारा का महत्त्व स्थापित करते हुए डा० किशोरीलाल गुप्त ने लिखा है—

---

१. हिन्दी साहित्य (द्वितीय खंड)—सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ १७०
२. वही, पृ० १६६
३. वही, पृष्ठ १७४

'कालिदास का हजारा' शिवसिंह सरोज़ के प्रमुख आधार-ग्रन्थों में से एक है। शिवसिंह ने 'सरोज' में ८६ कवियों के परिचय में कहा है कि 'इनके कवित्त हजारों में हैं।' इनमें से अधिकांश के उदाहरण उन्होंने हजारा से ही लिए होंगे। इन ८६ कवियों के अतिरिक्त भी बहुत से ऐसे कवि होंगे, जिनकी रचना उन्होंने कालिदास के हजारे से ही ली होगी और इन ८६ कवियों के ही समान जिनका समय-निरूपण उन्होंने इस हजारा के आधार पर ही किया होगा, पर जिनका उल्लेख उन्होंने नहीं किया। इस संग्रह में २१३ कवियों के १००० कवित्त हैं। जीवनचरित्र खण्ड में इनकी कालावधि संवत् १४८० से सं० १७७५ तक मानी गई है। सरोज के भूमिका खंड में ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १७७५ स्वीकार किया गया है। शिवसिंह ने सैकड़ों कवियों का समय-निरूपण कालिदास हजारा के आधार पर किया है।[१] कालिदास हजारा का रचनाकाल सं० १७५० से १८०० के बीच डा० गुप्त ने अनुमानित किया है।

कालिदास हजारा के बाद महत्त्वपूर्ण संग्रहग्रन्थ है हफीजुल्लाँ खां का हजारा। इस कृति का पंचम संस्कार सन् १९१५ ई० में मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने से छपा था। ग्रन्थ में दिये गये वक्तव्य के अनुसार इस किताब की रजिस्ट्री १६ सितम्बर सन् १८८६ ई० में हुई थी। अर्थात् यह संकलन सन् १८८६ के पूर्व तैयार किया जा चुका था। हफीजुल्ला खाँ अफगान मुसलमान थे और उन्होंने हरदोई जिले के बघौली स्थान पर अफसर मुरिस का कार्य किया था। संकलन-कर्त्ता का इस संकलन के विषय में कथन है कि यह संग्रह बड़े परिश्रम से सैकड़ों काव्य इकट्ठा कर उनमें से छाँट-छाँट कर दो भागों में निर्मित किया जिसके प्रथम भाग में १०२३ व द्वितीय में ११६२ चुने हुए कवित्त-सवैया ऐसे-ऐसे अत्युत्तम छन्द लिखे हैं।[२]

---

१. 'कालिदास का हजारा' नागरी प्रचारिणी पत्रिका 'मालवीय शती विशेषांक' सं० २०१८ वि०, पृ० २७६

२. हफीजुल्ला खाँ का हजारा (पंचम संस्करण), पृ० ४।

रीतिकालीन प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध कवियों की कविताओं का यह भी सुन्दर संग्रह है।

कालिदास और हफीजुल्ला खाँ के हजारा को देखने से ज्ञात होता है कि उपर्युक्त दोनों संकलनों का उत्स किसी न किसी रूप में संस्कृत सुभाषित-संग्रह ही हैं, जिनमें प्राचीन संस्कृत कवियों की कृतियों का संकलन किया गया है। इस दृष्टि से विद्याकर का सुभाषित रत्नकोश महत्वपूर्ण संकलन है।

रसनिधि का रतन हजारा पूर्णरूपेण कवि की मौलिक कृति है। इसका यह रूप रीतिकालीन सतसई परम्परा के संख्यामूलक विस्तार को द्योतित करता है। सतसई में शतक आदि की भाँति ही कवि ने अपने मुक्तकों के सुन्दर गुल्मों से इस संकलन को सजाया है। गोरेलाल कृत 'छत्रहजारा' और भूषण रचित 'भूषण हजारा' की अप्राप्ति और उनके निश्चित रचना-काल के ज्ञात न होने के कारण महाराज पृथ्वीसिंह रचित यह हजारा कृति प्रथम मौलिक 'मुक्त का हजारा' काव्य-कोष की गरिमा स्वतः पा जाता है। वास्तव में रसनिधि का रतन हजारा ही लोकप्रिय भी हुआ। क्योंकि इसका प्रकाशन संवत् १९४९ (१८९२ ई०) में ही हो चुका था।

काव्य-रसिक नरेशों की परम्परा--

संस्कृत साहित्य में हर्ष, राज्यपाल, मुंज और भोज राजा और कवि दोनों ही थे। हिन्दी को भी कुछ नरेशों के कृतित्व का संबल मिला था। महाराज जसवंतसिंह, महाराज मानसिंह, नागरीदास, सवाई प्रतापसिंह, महाराज रघुराजसिंह, महाराज विश्वनाथसिंह, द्विजदेव आदि ने हिन्दी काव्य साहित्य को समृद्ध एवं परिपुष्ट किया था। महाराजाधिराज का विरुद धारण करनेवाले ने रसनिधि नाम से इस परम्परा का निर्वाह किया था।

—o—o—

पाठ-समस्या

रतन हजारा की प्रतिलिपियाँ

सभा के खोज विवरणों में रतन हजारा की दो प्रतियों की और भी सूचना प्राप्त होती है। 'हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' के द्वितीय खंड में 'रतन हजारा' की निम्नलिखित सूचना दी गई है—

रतन हजारा (पद्य) पृथ्वीसिंह (राजा) उप० (रसनिधि कृत) वि० प्रेम विषयक १००० दोहे।

(क) लि० का० सं० १८९४।

प्रा० महाराज बनारस का पुस्तकालय, रामनगर (वाराणसी)।

०३—९४।

(ख) लि० का० सं० १९०८।

प्रा० श्री गुमानसिंह, सूपा, डा० कुलपहाड़ (हमीरपुर)।

२६—४०२

बाबू श्याम सुंदरदास द्वारा संपादित एनुअल रिपोर्ट आन द सर्च फार हिन्दी मैनुस्क्रिप्ट्स १९०३ के खोज-विवरण में ऊपर वर्णित (क) प्रति का विवरण पृष्ठ ६३ में इस प्रकार दिया गया है।

नं० ९४—रतन हजारा वर्स। सब्सटैन्स—कन्ट्रीमेड पेपर। लीव्ज—९१। साइज़ $9\frac{3}{4} + 6\frac{3}{4}$ इंचेज। लाइन्स १३ आन ए पेज। इक्सटेंट १,००७ श्लोकाज़। अपियरेन्स आर्डीनरी। कम्प्लीट। करेक्ट। कैरेक्टर—देवनागरी। प्लेस आफ डिपाजिट—लाइब्रेरी आफ दि महाराजा आफ बनारस।

रतन हजारा—ए कॅलेक्शन आफ वन थाउजेंड कॉप्लेट्स बाइ रसनिधि। नथिंग मोर इज़ नोन एबाउट दिस पोएट। दि मैनुस्क्रिप्ट इज़ डेटेड संवत् १८९४ (१८३७ ए० डी०) :—

बिगनिंग—श्री गणेशायनमः।। श्री सरसुती दैव्यै नमः।।दोहा।। लसत सरस सिंधुर बदन भालथली नषतेस। विघनहरन मंगलकरन गवरी तनय गनेस।।१।। नमो प्रेम परमारथी यह जाचत हौ तोहि।। नंद-लाल के चरन सौं दै मिलाइ किन मोहि।।२।। नमो प्रेम जिनै कियौ दिय लग आइ प्रकास। रगरत वासी नाक गो नाक गोपकन पास।।३।। निसिदिन गुंजत रहत ये विरद गरीब निवाज। हे निज मधकुर सुतन की कमल नैन तुहि लाज।।४।। वरन मधुर सुंदर अरथ हरि सौहित निर-धार। रसनिधि सागर मथ लये दोहा रतनहजार।।५।।

एन्ड—अधम उधारन प्रभु कहूं करतों जो न सम्हार। हो तो मोसौ पतित क्यों या भवसागर पार।।९७४।। हेरत कहूं जु दोन तन वाहि आवती लाज। प्रीतम तैं व कहावतौ दीन बंद ब्रजराज।।९७५।। जदपि अकरनी हू करी मै हर भांति मुरारि। प्रभु करिनी करि आवही हरिविधि लेहु सुधारि।।९७६।। कहँ अलप मति कौन विधि तेरे गुन विस्तार। दीनवंध प्रभु दोन कौ लै हरि विधि निस्तार।। ९७८।। इतिश्री महाराजाधिराज श्री रसनिधि कृत रतन हजारा संपूर्न।। श्रीरस्तु मंगलं ददात्।। कार्तिक शुक्ल।। संवत्।। १८९४।। श्रीराम।। श्रीराम।।

सब्जेक्ट—प्रेम रस दोहे।

नोट—ग्रंथकर्ता महाराज रसनिधि हैं। लिपिकाल कार्तिक शुक्ल ३ संवत् १८९४ है।

स्व० डा० हीरालाल द्वारा संपादित 'खोजविवरण' खोज में उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथों का त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण सन् १९२६-१९२८ ई० में पृष्ठ ५८१ पर ऊपर उल्लिखित (ख) प्रति का विवरण इस भाँति प्रस्तुत किया गया है:—

संख्या ४०२ रतन हजारा, रचयिता रसनिधि, कागज देशी, पत्र-१६०, आकार—१२×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं०१९०८

(१८५१ ई०) प्राप्ति-स्थान---श्रीगुमानसिंह, ग्राम---सूपा, डाकघर—कुलपहाड़, जिला—हमीरपुर (बुंदेलखंड)।

आदि—श्री गणेशायनमः।। अब रतन हजारा लिष्यते ।।दोहा।। लसत सरस सिंधु वदन भालथली नव तेस।। विघन हरन मंगलकरन गौरी तनय गनेस।। नमो प्रेम परमारथी इहि जाचत हौं तोहि। नंदलाल के चरन कौ दे मिलाइ किन मोहि।। नमो प्रेम जिहि ने कियो हिय लग आइ प्रकास। रंग रत वासी नाक कौ कान्ह गोपकन पास।। निसदिन गुजत रहत जे विरद गरीब निवाज। है निज मधुकर सुतुन की कमल नैन तुहि लाज।।

अंत—प्रभुकरनी कर आपनी सब विधि लेहु सुधार। कहै अल्प मति कौन विधि तेरे गुन विस्तार।। दीन बंधु प्रभु दीन कौ लै हर विधि निस्तार।। इति श्री रसनिधि कृत रतन हजार संपूर्णम शुभमस्तु माघ वदी दशमी, संवत् १९०८ वि०।

विषय—कवि का श्री कृष्ण भगवान का निहोर आदि वर्णन।

खोज-विवरण की इन दो प्रतियों के अतिरिक्त रतन हजारा की कई महत्त्वपूर्ण प्रतियों की सूचना 'दतिया राज पुस्तकालय' की सूची में मिलती है। इसके अतिरिक्त 'बुंदेलखंड वैभव' में भी एक प्रति की चर्चा लेखक ने की है।

प्रस्तुत संपादन की आधार-प्रतियाँ ('भा', 'प्र', तथा 'द')

ऊपर उल्लिखित प्रतियों का उपयोग प्रस्तुत संपादन में नहीं किया जा सका है। जिन प्रतियों का उपयोग इस सम्पादन में संभव हो सका है वे क्रमशः निम्नलिखित हैं:—

'भा' प्रति—'भा' प्रति भारत जीवन प्रेस द्वारा सन् १८९२ ई० में प्रकाशित हुई थी, जिसको बाबू जगन्नाथ प्रसाद ने 'शोधा' था। यह बात संपादक श्री रामकृष्ण वर्मा के वक्तव्य से ज्ञात होती है। जिस प्रति से यह संस्करण प्रकाशित हुआ था उसके आदि में मात्र इतना लिखा है—

३

'श्रीगणेशायनमः'। अथ रतन हजारा प्रारंभः"। पुष्पिका में प्रतिलिपि-कार ने लिखा है—इति श्री रसनिधिकृत रतनहजारा सम्पूर्णम्। शुभमस्तु मंगलं ददातु॥ श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः। पौषबदी ७ रवौ सम्वत् १९४९ मुकाम श्री महाराज नगर चरखारी, लिखितं पं० कोटिया नारायण दास श्री बाबू साहब जगन्नाथ प्रसादाज्ञानुसार।

चात्रिक लीनै करन पै, गबहा पर असवार।
लपा सहित प्रभु तीन हूं, रक्षा करें तुम्हार॥

इसकी पाद-टिप्पणी में सम्पादक ने महत्त्वपूर्ण शब्दों के अर्थ दिए हैं। कहीं-कहीं पर विशिष्ट अर्थ के लिए भी टिप्पणी प्रस्तुत की गई है।

'प्र' प्रति—प्रतिलिपिकार प्रभाकर जी भट्ट के नाम के प्रथम अक्षर के आधार पर इस प्रति का नाम 'प्र' प्रति रखा गया है। यह प्रति संप्रति हिंदी संग्रहालय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के संग्रह में संख्या २७०१, वेष्टन संख्या १४९० में अनुसूचित एवं संगृहीत है। इसके साथ कुलपति मिश्र कृत 'युक्ति तरंगिणी' की वंशीधर भट्ट द्वारा की गई महत्त्वपूर्ण प्रति-लिपि भी एक ही जिल्द में है। यह प्रति श्री कमलाकर जी 'कमल' जयपुर से सम्मेलन संग्रहालय को भेंट स्वरूप सन् १९५१ में प्राप्त हुई थी। प्रति-लिपि-काल पुष्पिका के अनुसार सं० १९३० वि० है। प्रारंभ में संस्कृत की एक कृति 'श्रीमद्वैकुंठनाथ नवरत्नम्' की प्रतिलिपि है। तदन्तर युक्ति तरंगिणी एवं इसके उपरांत नवरस रंग की सुलिखित पूर्ण प्रति है। ६६×८ पृष्ठों में संपूर्ण पाठ प्रतिलिपिकार ने ८×४ इंच आकार के पृष्ठों में लिपिबद्ध किया है। प्रतिलिपि के आदि के भाग में लिखा है—श्रीगणेशायनमः॥ अथ रतन हजारा लिष्यते ॥दोहा॥ लसत सरस सिंधुर वदन भालथली नषतेस॥ विघन हरन मंगल करन गवरी तनय गनेस॥१॥

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री रसनिधि कृत रतन हजारा॥ संपूर्ण समाप्त॥ सुभं भवतु॥ मंगलं॥ वैसाष क्रस्न पछै तिथौ १२

बुध्धै संवत् १८९० जिस पोथी से नकल करी जिसका संवत और मिती है कार्तिक सुद १४ संवत् १९३० मुकाम सवाई। जैपुर लिषतं प्रभाकर जी भट्ट बेटा वंशीधर कवीश्वर के नै लिषा ।। सुभ भवतु।। कल्याणमस्तु ।।

'द' प्रति——दतिया-निवासी सुप्रसिद्ध साहित्यिक श्री वासुदेव गोस्वामी के प्रयास से यह प्रति इस संपादन के निमित्त विशेष रूप से प्राप्त हुई है। अब यह प्रतिलिपि भी हिंदी संग्रहालय, हिंदी साहित्य सम्मेलन के पाण्डुलिपि-संग्रह में उपलब्ध है। इस प्रति का आदि और अंत का भाग खंडित भी है। बीच-बीच के पृष्ठ भी फटे हुए हैं। इस प्रतिलिपि के साथ प्रारंभ में संवत् १८८८ की 'बिहारी सतसई' की भी प्रतिलिपि है। इसके बाद रतन हजारा की ६४×२ पृष्ठों में प्रतिलिपि है। अंतिम पृष्ठों में रसनिधि कृत अरिल्ल संगृहीत है।

'क' प्रति——कन्हरगढ़ (सेवढ़ा) दतिया निवासी श्री बाबूलाल गोस्वामी के संग्रह में रतनहजारा की संवत् १९१६ की प्रति है, जिसकी पृष्ठ संख्या ६४ तथा आकार १०×७ इंच है। इस प्रति का पूर्ण उपयोग नहीं किया जा सका है। किन्तु छंदों की पाठ-समस्या के निराकरण के लिए इस प्रति के पाठ का भी उपयोग किया गया है। गवर्नमेंट डिग्री कालेज दतिया के आचार्य डा० शिव शरण जी शर्मा ने परिश्रमपूर्वक निम्नलिखित संख्याओं के छंदों के पाठ को उतार कर भेजा है जिसका अनेक चिंत्य-स्थलों के पाठों पर पुनर्विचार किया जा सका है।

'क' प्रति के जिन छंदों से पाठ-निर्णय में सहायता ली गई है वे इस प्रकार हैं——२, ३, ७, १४, १७, २६, २७, ३०, ३९, ४२, ४५, ७५, ७६, ८०, ८२, ८३, ८९, ९०, ९४, ९६, १०४, १०७, १११, १२१, १२९, १३१, १३४, १३५, १३८, १४०, १४५, १५८, १८०, १८१, १९२, १९८, २०९, २२६, २३२, २४५, २५३, २६३, २६४, २८०, २८२, २८३, २८४, २८६, २८८, २८९, ३०६, ३७३, ३९१, ४०२, ४०४, ४३४, ४६१, ४६६, ४८१, ४८३, ५४५, ५७०, ५८७, ६१८, ६५३,

६६१, ६८१, ६८२, ७०४, ७०५, ७४३, ७८५, ७६४, ७९१, ८८१, ९०१, ९०९, ९१३, ९५५ तथा ९५७—कुल ८० छंद

आदि—इस प्रति के आदि का पृष्ठ फटा हुआ है। इसमें केवल एक कोने के भाग में 'श्रीगणेशायनमः अथ आदि लिखा है। पुष्पिका भाग में १००१ संख्यक दोहे के बाद मात्‌ 'इते रसनिध हजारा सं० पूः लिखा है। इस प्रति में कुछ लेख संबंधी विशेषताएँ हैं, उनका समावेश प्रस्तुत संपादन में नहीं किया गया है विशेष रूप से 'ईकारांत' रूप का बाहुल्य प्रति में अनावश्यक रीति से अत्यधिक हुआ है, वह रूप रखने से पाठ का स्वरूप बिगड़ता है एवं छंद में मात्रा की वृद्धि भी हो जाती है। यह लेखन संबंधी आंचलिक विशेषता है जो प्रायः प्राचीन प्रतिलिपि में मिलती है। 'द' प्रति में प्रायः 'ईकार' रूपों को यथास्थान इकार कर दिया गया है, यथा——

द प्रति का पाठ		स्वीकृत पाठ
जीय	<	जिय
हीय	<	हिय
करीयतु	<	करियतु
ईन्है	<	इन्है
नही	<	नहि
कीयै	<	कियै
कीजीयै	<	कीजियै
आपुही	<	आपुहि
सुनीयौ	<	सुनियौ
आई	<	आइ
कीयौ	<	कियौ

इसी भाँति व्रज को विर्ज आदि ब्रह्म को बिम्र्ह घनस्याम को घंस्याम लिखा गया है। हमने इन सब को मान्यता नहीं दी है।

रतन हजारा की छंद संख्या—रतन हजारा में कुछ छंद दो स्थानों पर मिलते हैं। (१) १८३–४६७, (२) ३९५–४७१, (३) ८१९,–८५८, (४) ३६८–४७६, (५) ४४९–६१८, (६) ३९८–६१६, (७) ४३२–५५१, (८) २६४–८२१, (९) १५५–४५२, (१०) ३२०–७६८, (११) १९९–२५४ तथा (१२) २९१–४२५ संख्यक दोहे एक ही हैं जो दो स्थानों पर एक साथ मिलते हैं। इसी भाँति छंद १६५ तीन शीर्षकों के अंतर्गत रूप, छबि और नेत्र के अंतर्गत मिलता है। इसी भाँति यह छंद ४५६ तथा ५१६ संख्याओं पर भी है। इस प्रकार रतन हजारा की वास्तविक संख्या एक हजार नहीं है वरन् कुल ९८६ हैं। इस संपादित संस्करण में वह संख्या १००१ है। मूल छंद एवं दुहराए हुए छंदों का योग ही इस कृति को हजारा का रूप प्रदान करता है।

क्रम-विपर्यय—पाठ और क्रम की दृष्टि 'द' प्रति को प्रामाणिक माना गया है। इस आधार पर 'भा' और 'प्र' प्रतियों में छंदों के क्रम में साधारण परिवर्तन मिलता है। इस प्रकार की स्थिति 'प्र' प्रति में २४८–२४९, ५१२–५१३, तथा ६१२-६१३ छंदों में मिलती है जिसमें कि छंद क्रमशः आगे-पीछे हो गए हैं। इसी प्रकार की स्थिति प्रति 'भा' में भी है। ३२-३३, २३०–२३१, २३९–२४०, ५६१–५६२, ८२८–८२९, ९०२–९०३, तथा ९१९–९२० में छंदों का क्रम परिवर्तित हो गया है। इसी भाँति छंद ८९३, तथा ८९४ 'भा' प्रति में क्रमशः ८८० तथा ८८१ पर तथा छंद ६७८ –६७५ के बाद मिलते हैं।

इसी भाँति कुछ छंदों की प्रथम पंक्ति द्वितीय पंक्ति के स्थान पर प्रतिलिपिकारों की भूल से आ गई है, यथा—'भा' प्रति में छंद सं० १७०, ५६४ तथा ९७१ एवं 'प्र' प्रति में छंद ३९९ में पंक्तियों का विपर्यय मिलता है।

पाठ-लोप—रतन हजारा की तीनों प्रतिलिपियों में कुछ छंद छूट गए हैं। प्रति 'भा' में छंद ४५३, ४५४, ६२० तथा ८९५ एवं प्रति 'प्र'

में छंद १६, १४५, ३६६, ४८८, ५१९ तथा ७४५ लुप्त हैं। छंद ७९१ समान रूप से 'भा' और 'प्र' दोनों प्रतियों में नहीं है। प्रति 'द' में छंद ९९४ प्रतिलिपिकार के दृष्टि-भ्रम के कारण छूट गया है। छंद ९९४ तथा ९९५ के प्रथम अंश का पाठ क्रमशः है। "अधम उधारन विरद कौ" तथा "अधम उधारन विरद तुव"। अतएव एक ही प्रकार से प्रारंभ होने वाले दो छंदों में से एक प्रतिलिपिकार की दृष्टि से छूट गया। छंद सं० ५८ तथा ६२ प्रति 'द' में उपलब्ध नहीं है। 'द' प्रति में छं० २३५ की द्वितीय पंक्ति लुप्त हो गई है, उसके स्थान पर छं० २३६ की प्रथम पंक्ति को मिला कर प्रतिलिपिकार ने एक छंद की सृष्टि की है। छंद सं० २३५-२ तथा छं० सं० २३६-२ के लोप हो जाने से 'द' प्रति में एक छंद का लोप मिलता है। 'द' के प्रतिलिपिकार से छं० सं० ८८९-२ का पाठ भी छूट गया है।

'द' प्रति की खंडितावस्था के कारण अनेक छंदों के पाठ का मिलान उस प्रति से नहीं हो पाया है। इस प्रकार के छंद कई पृष्ठों के नष्ट हो जाने से काफी संख्या में हैं। यथा—छं० सं० १–१४, ३१३–३२८, ३६०-२ (उत्तरार्ध)—३९४-१ (पूर्वार्ध); ४३६-२—४५८, ५७७.१–५९१.२ (उत्तरार्ध), तक के छंदों के पाठ अनुपलब्ध हैं।

प्रक्षिप्त छंद—निम्नलिखित दो छंद जो कि केवल 'भा' प्रति में प्राप्त हैं उन्हें प्रामाणिक नहीं माना गया है—

(क) नंद महर के बगर तन अब मेरै को जाइ।
नाहक कहूँ गड़ि जाइगौ हित काटौ मन पाइ॥
(भा० २०७)

(ख) दुरखी आवत काम ज्यों तापर एक कमान।
दुरखी बरखी जात है प्रीतम प्रीति निदान॥
(भा० ६८२)

इन दो छंदों में प्रथम छंद न तो प्र और द प्रतियों में प्राप्त है और नहीं

रतनहजारा के क्रमगत विषय-विभाजन की दृष्टि से ही ठीक स्थान पर है। शिखनख वर्णन के छंदों के बीच में मुख एवं तिल वर्णन के बीच में पूर्वानु-राग शीर्षक से यह छंद है। रचना की व्यवस्था के स्वरूप को देखते हुए इस छंद की स्थिति निश्चित रूप से भ्रमपूर्ण है। इसी भाँति ख छंद भी दोनों प्राचीन प्र, और द प्रतियों में उपलब्ध नहीं है, अतएव इसे भी प्रक्षिप्त माना गया है यद्यपि यह छंद प्रीति वर्णन के अंतर्गत भलीभाँति समाविष्ट किया गया है।

प्रमुख पाठांतर—मात्रा भेंद या लोप के कारण प्राप्त पाठांतरों की संख्या प्रचुर है। यथाशक्य उन पाठांतरों को पाद-टिप्पणी के रूप में रखा गया है। अक्षरों के विपर्यय, लोप या परिवर्तन से होने वाले पाठां-तरों को भी यथास्थान संकेतित कर दिया गया है। प्रतिलिपिकारों द्वारा कई स्थानों पर विचित्र एवं अप्रामाणिक पाठ भी प्रस्तुत हुए हैं। इस प्रकार के पाठ छंद के फल अर्थ को वदलने में सहायक होते हैं। रतन हजारा में इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण पाठांतर निदर्शनार्थ प्रस्तुत हैं—

स्वीकृत पाठ	प्रति का पाठ
करदीनी तुव रूप नै द्रगन सुछबि तन षाह १७२.१	कहिदीनी तुव रूप नै धुनि सुनि छवि तष्याह 'प्र'
जोबन रावन रावनौ १३१.१	जोबन ये बन ये बनौ 'भा'
झलकन की द्रुति है रहै बिचतिह पलकन आइ ७०५. २	झलकत जलकन की रहै बिच नहि पलकन आइ 'भा'
तन भूमि करत ततबीर १३२.१	कै भूसर कर ततबीर 'भा'
ताकौ राषत राधिका ७६८.२	घनराधे राषत तिन्है 'भा'
थकित ह्वैं रहे पथिक जिय, हस्त, चरन, मुष बैन ७९४.२	थकित रहै वाही पथिक जिगह सांच मुख चैन 'भा'
दिन कर बिरह चकोर कौ मैंट निसा कौ दाउ ९७४.२	दिनकर बिरह चकोर कौ मैट न सकि हौ दाव 'भा'

स्वीकृत पाठ	प्रति का पाठ
द्रेषन इन्हैं न न देत ही इहि २५८.१	देखत नैनन देखती यह भा'
नींद आदरत है तुहै २७७.१	नींद निरादर देत है 'भा'
मन सौदागर नैं कियै बहुत नहेर पसंद ४३५.१	मन सौदाकर नै कह्यो यही है बहुत परसंद 'भा'
मेघ नए उनए लषै नए नए चितचाइ ८९२.१	मै घन में उनये लखै नये नये चित चाइ 'भा'
मौहन मन द्रग कर निकर २९.२	मोहन दृग कने (?) करनिकै 'प्र'
मौहन हारौ आपुतौ जोहन हारौ आपु। पोहन हारौ आपु तौ मन मानिक पुनि आपु। ५७	मोहन हारौ आपु ही मनमानिक पुनि आपु। पोहन वारौ आपुही जोह निहारी आप 'भा'।
मृदु मुसिकन मैं कर लियै तैने ही द्रिग बंद ७१२.१	मृदु बिहंसन मुसक्यान में कर ने ही दृग बंद 'भा'
रंगरत वासी ३.२	रंग रस बारसी 'प्र'
प्रवस बसत ते चित्त नगर ७.१	सुवस वसत चेतन नगर 'प्र'

'प्र' प्रति में प्रतिलिपिकार के द्वारा अनेक स्थलों पर पाठ का भ्रम-पूर्ण विश्लेषण होने के कारण विचित्र-विचित्र पाठ मिलते हैं। इस प्रति की प्रतिलिपि करने में या तो उसकी आधार प्रति जिससे प्रतिलिपिकार ने प्रतिलिपि की थी वही भ्रष्ट थी या प्रतिलिपिकार स्वतः ही प्रमादी था जिसने अनेक स्थलों पर पाठ का रूप बिगाड़ दिया है यथा रही धरनि वृज पूर १४.१७ का पाठ गहरिर है पर (?) कर दिया है। इन समस्याओं पर विस्तृत विचार मैंने नहीं किया है।

सम्पादन-सिद्धान्त—रतन हजारा की जितनी भी पांडुलिपियों की सूचना अब तक प्रकाश में आई है उनमें दतिया अंचल से प्राप्त प्रति का

प्रतिलिपिकाल प्राचीनतम है। सन् १९०३ के खोज विवरण की प्रतिलिपि का काल है संवत् १८९४, इसी भाँति सन् १९२६ के खोज-विवरण की प्रतिलिपि भी सं० १९०८ की है। भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित संस्करण की आधार प्रति जो चरखारी से प्राप्त हुई थी उसका भी प्रतिलिपिकाल संवत् १९४९ है। प्रभाकर जी भट्ट की जयपुर वाली प्रति का प्रतिलिपि-काल संवत् १९३० विक्रमी है। श्री वासुदेव गोस्वामी जी के प्रयास से प्राप्त रतन हजारा की पुष्पिका में कोई प्रतिलिपिकाल नहीं दिया गया है किंतु उसी के साथ संलग्न बिहारी सतसई का काल संवत् १८८८ विक्रमी मिलता है। यह प्रतिलिपि रचनाकार के अंचल की है अतएव इसके पाठ को प्रामाणिक माना गया है। खंडित स्थलों को छोड़कर अधिकांश स्थल पर पाठ निर्माण का प्रयास 'द' प्रति के आधार पर ही किया गया है। संपादन की आधार प्रति 'भा' का पाठ 'प्र' प्रति के पाठ से अधिक महत्वपूर्ण प्राप्त होता है। 'प्र' प्रति का पाठ अनेक स्थलों पर भ्रामक अवश्य है किंतु 'द' प्रति के पाठ की प्रामाणिकता सिद्ध करने में इसके पाठान्तरों से सहायता अवश्य मिलती है। केवल मात्र विभिन्न अंचलों की तीनों प्रतिलिपियों के आधार पर इनका पारस्परिक सम्बन्ध निर्माण कर पाना संभव नहीं हो सका है। जहाँ तक हो सका है, बुंदेलखंडी प्रयोगों को इस पाठ में सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है। फिर भी कहीं भी शब्द रूपों के संबंध में एकरूपता लाने का प्रयास नहीं किया गया है। जो भी शब्द-रूप इस संपादन में स्वीकृत किए गए हैं उनका आधार अवश्य ही इन प्रतिलिपियों में प्राप्त सामग्री ही रही है। फिर भी अनेक स्थलों पर पाठ अर्थ-संगति की दृष्टि से स्पष्ट होने से बच गए हैं, इनका निराकरण अन्य परंपरा की महत्त्व-पूर्ण रतनहजारा की प्रति के आधार पर ही संभव है फिर भी विद्वज्जन यदि उचित पाठ के लिए सुझाव संप्रेषित करेंगे तो संभव है कि अधिकतम प्रामाणिक पाठ भविष्य में प्रस्तुत किया जा सके। फिर भी यथासाध्य मैंने पाण्डुलिपियों के सादृश्य पर बुंदेलखंड के अप्रतिम कवि महाराज पृथ्वीसिंह 'रसनिधि' की एक महत्त्वपूर्ण कृति के संपादन का गुरुतर कार्य

हिंदी साहित्य सम्मेलन की 'आकार ग्रंथमाला' के एक पुष्प के रूप में किया है।

कृतज्ञताज्ञापन––सम्मेलन जैसे महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय संस्थान की गौरवपूर्ण ग्रंथमाला के लिए मुझे पाँच ग्रंथों के सम्पादन का कार्य प्रदान किया गया। इसके लिए सम्मेलन के वर्तमान सचिव श्री मोहनलालजी भट्ट तथा सहायक मंत्री श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर पं० उमाशंकर जी शुक्ल के निर्देशन में यह कार्य मैं निष्पन्न कर पाया हूँ। अधिकांश विकृत पाठ-स्थलों का निराकरण करके उन्होंने जो प्रोत्साहन दिया है वह उनके स्नेह और विद्यानुराग का ही फल है। दतिया की महत्त्वपूर्ण प्रतिलिपि प्रेषित करके सुप्रसिद्ध साहित्यिक श्री वासुदेव गोस्वामीजी ने कृपापूर्वक महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है इसके लिए गोस्वामी जी धन्यवाद के पात्र हैं। पांडुलिपि की सामग्री टंकित रूप में प्रस्तुत करने में श्री पुरुषोत्तम मालवीय एवं श्री श्याम जी मालवीय ने जो तत्परता प्रकट की है, उसके लिए मैं आभार व्यक्त करता हूँ। तीन प्राचीन प्रतियों के उपलब्ध होने के बाद भी अनेक छंदों की पाठ-समस्या सुलझाने के हेतु डा० शिवशरण शर्मा ने कन्हड़गढ़ से प्राप्त पांडुलिपि की प्रतिलिपि भेंजकर जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं सहृदय विद्वान् मित्र का चिर ऋणी रहूँगा।

रामनवमी २०२५ ––**हरिमोहन मालवीय**

रतन हजारा के प्रथम पृष्ठ की पुष्पिका

श्रीगणेशायनमः ॥ अथरतनहजारालिख्यते ॥ दोहा ॥ नसतसरससिंधु
रवदनमालथलनिषेतेस ॥ विघनहरनमंगलकरनगवरीतनयगनेस ॥
१ ॥ जेमोंप्रेमवुरभारथीयहजाचतहौंतोहि ॥ नंदलालकेचरनमोंदेषिलाइ
किवमोहि ॥ २ ॥ नमोप्रेमजिहनेकियोखोलगोभारप्रकास ॥ रगरसबा
सीनाककैंगारुगोपियनवास ॥ ३ ॥ निसदिनगुंजत [illegible] रहीं
वनवाज ॥ हिनिजमधुकरसुतनकोकमलनेनतुहि [illegible] ॥ ४ ॥ चंदमुष
पुरछंद [illegible] सोहितनिरधार ॥ रसनिधसागरसमलंषोदोह
रतनहजारा ॥ ५ ॥ अवलोप्रभतोरेबैनोंनातरहोतकुनारा ॥ भ्रमहीतार
नतरनहैमेरेआधारा ॥ ६ ॥ सुवसवसतचेतननगरनवानसतहै
आदि ॥ वेसेतोऊजरपरीतनकोविनीमहा ॥ ७ ॥ विरुधांसेरनोपै

रतन हजारा के अंतिम पृष्ठ की पुष्पिका

रतन हजारा

मंगलाचरण

दोहा

लसत सरस सिंधुर बदन भाल[1]थली नषतेस।
विघनहरन मंगलकरन गौरी[2]तनय गनेस॥१॥
नयो प्रेम परमारथी इह[1] जाचत हौं तोहि।
नंदलाल के चरन सौं[2] दै मिलाइ किन मोहि॥२॥
नयौ[1] प्रेम जिहिनै कियौ ह्यां[2] लगि आइ प्रकास।
रंग रत वासी[3] नांक कौं नांक[4] गोपियन[5] पास॥३॥
निसिदिन गुंजत रहत जे[1] बिरद नेवाज[2]।
हैं निज मधुकर सुतन की कमलनैंन[3] तुहिलाज॥४॥
बरन[1] मधुर सुंदर अरथ हरि[2] सौं[3] हित निरधार।
रसनिधि सागर मथ लयौ[4] दोहा रतन हजार॥५॥
अब तो प्रभु तारैं बनैं[1] नातर होत कुतार।
तुमहीं तारन तरन हौ सो मोरैं[2] आधार॥६॥
सुवस बसत ते चित नगर[1] जहां बसत हरि आइ।
वैसै तौ अजर परी तन की किती सराइ॥७॥

---

१. (१) माल प्र। (२) गवरी प्र।
२. (१) यह प्र। (२) कौ भा। (३) किव प्र
३. (१) नमौ क। (२) हिय लग भा। (३) रंगरसवार सी प्र
(४) कान्हे भा। (५) गोपकन भा
४. (१) ये प्र। (२) नवाज प्र। (३) नेंन प्र
५. (१) बरनत प्र। (२) हर प्र। (३) सौं भा। (४) लये भा
६. (१) बनें प्र। (२) मेरे प्र।
७. (१) बसत चेतन प्र (२) ऐसै भा

विरह घांम इनयै जबै तन कौ सहौ न जाइ।
चरन कमल नँदलाल के तव द्रग लागत जाइ॥८॥
अद्‌भुत गत यह रसिक निधि[1]-सरस प्रीत की बात।
आवत हीं मन साँवरे[2] उर के[3] तिमिर नसात॥९॥
व्यौछ[1] गयौ मन लागि ज्यौं ललित त्रिभंगी[2] संग।
सूधौ होतन ओर तनि[3] नवत[4] रहै इह[5] अंग॥१०॥
कैयक[1] 'स्वांग बनाय[2] कै नांचै[3] वहुविधि नाच।
रीझत नहि रिझवार वह बिना हिये के सांच॥११॥
जाकौ गति चाहत दियौ लेत अगनि[1] तैं राष।
रसनिधि है या बात के भक्त भागवत[2] साष॥१२॥
चित तै दियौ बिसार जनु[1] विरद गरीब निवाज[2]।
ब्रजवासिन के दरस कौ[3] पहुँचत[4] नहिं ब्रजराज॥१३॥
अंबुज चरन पराग हरि[1] रही धरन[2] ब्रज पूर।
अजौं परस तन करत वह विरथ बिथा कौ[3] दूर॥१४॥
धन[1] गोपी धन ग्वाल वे धन जसुदा[2] धन नंद।
जिनके मन आंगन[3] फिरैं[4] पूरन[5] परमानंद॥१५॥

---

९. (१) रसक निध प्र। (२) सांवरो भ। (३) कौ भा
१०. (१) बिवधि भा। (२) तृभंगी भा। (३) तन प्र। (४) नउत भा। (५) वह भा
११. (१) कै इक भा। (२) बनाइ भा,। (३) नाचौ भा
१२. (१) अगत प्र। (२) भावगत भा
१३. (१) जन प्र। (२) निवाजि भा, नवाज प्र। (३) कौं भा। (४) पहुचत प्र।
१४. (१) जह रही द। (२) ही घर भा। (३) को भा।
१५. (१) धनि भा। (२) जसुधा प्र। (३) आगै भा, द। (४) चलैं भा (५) छाया प्र।

आदि अन्त अरु मध्य मैं जो है सुयं[1] प्रकास।
ताके[2] चरनन की धरै रसनिधि मन मैं आस॥१६॥
काल पषेरुन[1] तै सही यह[2] तन षेत उबेरु[3]।
इहि बरिया अैसै समैं हरिया हरिया टेरु॥१७॥
यह प्रसिद्ध है रसिकनिधि मन मोहन की बात।
पनवारे[1] घट मै बसै पनघट[2] और न जात॥१८॥
भूले तैं[1] करतार के रागु[2] न आवै[3] रास[4]।
यहीं समुझ[5] कै राष तूं मन करतारै[6] पास॥१९॥
हरि कौ सुमिरन हरि घरी हरि हरि रटौ[1] जुबान।
हरि[2] विधि हरि कौह्वै[3] रहौ रसनिधि संत सुजान॥२०॥
मजनू लष वै ह्वै[1] गयौ लै लै लै लै नाम।
अचिरज[2] कह जौ[3] कृस्न कहि मिले चरन अभिराम॥२१॥
मन[1] समान[2] जाकै[3] मनी नैक[4] न आवत पास।
रसनिधि भावक[5] करत है नाही[6] मन मैं वास॥२२॥

---

१६. (१) स्वयं भा। (२) जाके द।

१७. (१) कालप्र षेतुन प्र। (२) यों भा। (३) षेतुन तुबेर प्र।

१८, (१) पनिवारे भा। (२) पनिघटि भा।

१९. (१) ते द। (२) राग प्र।
(३) आवत प्र। (४) सबु भा
(५) समुझ प्र द। (६) करतारे प्र।

२०. (१) ठौर भा। (२) हर भा, द। (३) कौ हौ प्र।

२१. (१) हौं द, हो प्र। (२) अचरज भा, द। (३) कर जौ प्र (४) मिलै भा।

२२. (१) मनि भा। (२) सूना द। (३) जाके भा ताकै द। (४) नैकि भा (५) सावक प्र। (६) ताही भा, द।

जिन काढौ वृजनाथ जू मो करनी कौ छोर।
मो करनी कौ[१] कर जहाँ रसनिधि जुगल किसोर[२]।।२३।।
रस निधि वाकौ[१] कहत हैं[२] याही तैं[३] करतार।
रहत निरंतर जगत कौ वाही के करतार।।२४।।
तेरी गति[१] नंदलाडिले[२] कहू[३] न जानी जाइ।
रज हू तैं[४] छोटौ[५] जु मनु तामैं बसियतु आइ।।२५।।
सब कुदरति तुज[१] कादरा मैं करि मुजसैं[२] दूरि।
इस षाकी[३] तन कौ रवा आपुन रस[४] मैं पूरि।।२६।।
सब सुष[१] चहत[२] सबही रहैं[३] तत सुष[४] नही मिठाइ।
सब सुष छाड़ि कैं[५] नेहिया तत सुष लेत उठाइ।।२७।।
मोहै नैंकु[१] न नैंन जे[२] मनमोहन के रूप।
नीरस निपट निकाम ज्यौं विन पानी के कूप।।२८।।
वेद व्यास सब षोजहीं नैंकु न पावत[१] ताहि।
मौहन मन द्रग कर निकर[२] ब्रज बालनि लिय[३] गाहि।।२९।।

---

२३. (१) कर नीके भा। (२) नंद किसोर भा।
२४. (१) वही कौ प्र। (२) है प्र। (३) कौं प्र
२५. (१) गत प्र। (२) ने लाडले प्र।
(३) कछुव भा प्र। (४) अनहूतै प्र द
(५) छूटौ प्र द।
२६. कुदरतनु प्र। (२) रूजिसै भा।
(३) रस षांकी भा। (४) नूर भा।
२७. (१) स्वसुष द। (२) चहत प्र।
(३) सबि रहै भा। (४) तुव भा। (५) छाडे भा।
२८. (१) माहे नेतु प्र (२) जै प्र।
२९. पावति भा। (२) मोहन द्रग कने करनि कै प्र।
(३) भर गुवालिनि लिय द।

परचौ[1] रहतु[2] है रैन दिनु रे विषिया रस नीचु[3]।
मन तू[4] मोहन सौ हमै काहे पारतु[5] कीचु॥३०॥
दम्पति[1] चरन सरोज पै जो अलि मन मडराइ[2]।
तिहि के[3] दासन दास कौ रसनिधि संग सुहाइ॥३१॥
घरी[1] बजी[2] घरियार[3] सुनि बजिकै कहतु बजाइ।
बहुरि न पैहै[4] यह घरी हरि चरनन चितु लाइ[5]॥३२॥
जो चाहै[1] तिहि[2] चाहिये ज्यौं[3] उरलैंवौ हार[4]।
स्याम सहैहिनि क कछू रसनिधि मते अपार॥३३॥
हरि विनु[1] मन तुव कांमना नैकुन आवै काम।
सपनै के[2] धन सौं भरे किहि लै अपनौ[3] धाम॥३४॥
जिनि वारे नँदलाल पै अपनै मन धन लाइ[1]।
उनिके वारे की कछू मोपै कही न जाइ॥३५॥
हरि पूजा हरि भजन मैं सोई[1] ततवर[2] होत[3]।
हरिवर[4] जाही आइ कै हरबर[5] करै उदोत॥३६॥

---

३०. (१) पगौ भा। (२) रहत भा द। (३) जग रस बीच प्र द। (४) तूं भा। (५) पातुर प्र।

३१. (१) दंपत प्र द: (२) भडिराइ प्र। (३) कै प्र।

३२. (१) घडी प्र। (२) बजै प्र। (३) घरयार भा। (४) पाहै प्र द। (५) ल्याइ भा।

३३. (१) चाहे प्र। (२) गिट्टि प्र द। (३) जे प्र। (४) उर ले व्यौहार प्र द।

३४. (१) बिनि भा। (२) मैं। (३) अपनौ भा।

३५. (१) ल्याइ भा।

३६. (१) सोही भा। (२) ततपर भा। (३) होइ प्र (४) उर भा। (५) हरबर भा।

रसनिधि मन मधुकर बसै[१] जो चरनाम्बुज[२] माहि[३]।
सरस अनुखुलौ खुलतु है खुलौ खुलौई नाहि॥३७॥
रूप दृगन अवननि सुजस रसना मैं हरिनाम।
रसनिधि मन मैं नित बसौ[१] चरन कमल अभिराम॥३८॥
कपटौ जब तकि[१] कपट नहिं सांच वगुरदाधार[२]।
तब तकि[३] कैसै मिलहिगौ[५] प्रभु सांचौ रिझवार॥३९॥
नेति नेति[१] कहि निगम पुनि[२] जाहि सकै नहि जांन।
भयौ मनोहर आइ ब्रज वही सु[३] हरिहर आंन॥४०॥
परम दया करि दास पै गुरन[१] करी जब गौर[२]।
रसनिधि मोहन भावतौ[१] दरसायौ सब ठौर॥४१॥

ब्रह्मज्ञान वर्णन

पाप पुन्य अरु ज्योति[१] तै रवि ससि न्यारे जांनि।
जदिपि[२] सु सब ही[३] घटनि मै प्रतिबिम्बित है आंनि॥४२॥
आपु भमर[१] आपुहि कमल आपुहि संग[२] सुवास।
आपु[३] आपु ही बासना आपु लसत सब पास॥४३॥

---

३७. (१) बस्यौ प्र, बसौ भा। (२) चरननरज द। (३) आइ प्र।

३८. (१) बसै भा। (२)

३९. (१) लौं भा। (२) वगरदावार प्र, बिगुरदाघार भा। (३)लौं भा। (४) कैसे प्र। (५) मिलैहि गौ भा।

४०. (१) नेत नेत भा। (२) पुन भा। (३) सोभा प्र।

४१. (१) गुरनि प्र। (२) गोर (३) भावतो प्र।

४२. (१) छोति प्र, नेत द। (२) जदपि प्र, जद्यपि भा। (प्र (३) सों भा, सब प्र।

४३. (१) भवर प्र भा। (२) रंग प्र। (३) लेन भा।

पवन तुहीं पानी तुही तुही धरनि आकास[1]।
तेज तुही पुनि[2] जीव है तुही लियौ[3] तन बास ॥४४॥
वेषाये[1] तैं[2] बेवफा[3] वफा रहै ठहराइ।
मैनै[4] कीनैं[5] दूरि ज्यौं[6] तैं ही तै रहि जाइ ॥४५॥
कहूं हाकिमी[1] करतु है कहूं वन्दगी आइ।
हाकिम वन्दा आपुही[2] दूजा नही दिखाइ ॥४६॥
सांची सी यह बात है सुनियौं सज्जन[1] सन्त।
स्वांगी तौ वह[2] येक[3] है वाकै[4] स्वांग अनन्त ॥४७॥
कोटिन घट[1] मैं बिदित ज्यौं रवि प्रतिबिम्बु दिखाइ।
घट घट मै त्यौहीं छयौ[2] सुयं प्रकासी[3] आइ ॥४८॥
आसिक अरु महबूब विच आपु[1] तमासा कीन[2]।
ह्यां ह्वै[3] अलगरजी[4] करै ह्वां ह्वै होइ[5] अधीन ॥४९॥
लेत देत[1] आपुन[2] रहै सिर अपनै[3] नहि लेत[4]।
ह्वां[5] ह्वै चित कौ लेतु है ह्यां ह्वै[5] चित कौ देत[6] ॥५०॥

---

४४. (१) धरनि तुही प्र। (२) प्रन भा (३) लियो भा।

४५. (१) वेषाअे प्र। (२) ते भा। (३) बेउफा भा। (४) मीनै भा, मै कै प्र। (५) कीनें प्र। (६) ज्यो प्र।

४६. (१) हाकमी भा। (२) आपही भा।

४७. (१) सजन द। (२) यह प्र। (३) एक प्र। (४) वहके भा।

४८. (१) कोटि घटन द भा। (२) छिप्यो भा। (३) स्वयं प्रकासी भा, प्र।

४९. (१) आप भा। (२) वींन प्र द (३) ह्वे प्र, ह्यौ द। (४) अटबरजी द। (५) वागर होइ द।

५०. (१) लेतु देतु प्र। (२) आपन भा द। (३) अपने प्र। (४) देतु प्र। (५) ह्या प्र द। (६) लेतु द।

४

आपु फूल[१] आपुहि भँमर[२] आपु सुबास बसाइ।
आपुहि रस आपुहि रसिक लेतु आपु रस आइ॥५१॥
ब्रह्म फटिक मन[१] सम लसै घट घट माँझ[२] सुजान।
निपट[३] आइ बरतै जु रंगु[४] सो रंग[५] लगै दिखान॥५२॥
वहु रंगी[१] वहु[२] आपहीं भयौ तिली मैं[३] तेल।
आपुहिं[४] बासौ सुमन ह्वै[५] आपहि भयौ फुलेल॥५३॥
यौं सब जीवन की लखौ ब्रह्म सनातन आदि[१]।
ज्यौं माटी के घटनि[२] की माटीयै[३] बुन्यादि[४]॥५४॥
जलहू मै पुन आपुतै[१] थलहू मै पुनि आपु।
सब जीवन मै आपु[२] है लसत निरालौ आपु॥५५॥
अमल दिवैया आपुही अमल षिवैया[१] आपु[२]।
अमल मांझ जो अनिल[३] वह[४] रसनिधि सोई आपु॥५६॥
मौहन हारौ[१] आपुतौ[२] जोहन हारौ आपु[३]।
पौहन हारौ[४] आपु तौ मन मानिक पुनि आपु॥५७॥

---

५१. (१) कूल प्र। (२) भवर प्र।

५२. (१) मनि प्र। (२) माझ प। (३) निकट भा। (४) जो रंग भा। (५) रगु प्र, रंग भा।

५३. (१) वही रंग प्र द। (२) वह भा। (३) कौ प्र। (४) आपुन भा। (५) हयौ द।

५४. (१) आद भा। (२) घटन भा। (३) माटी पै, भा प्र। (४) बुनियाद भा प्र।

५५. (१) आपनौ भा द। (२) आप भा।

५६. लिवैया भा। (२) आप भा। (३) अमल प्र। (४) है प्र।

५७. (१) वारौ भा। (२) आपुही भा। (३) मन मानिक पुनि आपु भा। (४) जोह निहारौ आप भा।

बंसी ह्व मैं आपुतौ[१] सप्त[२] सुरनि मैं आपु।
बजवैया पुनि आपुही रिझवैया पुनि आप॥५८॥
बीज आपु जर आपुही[१] डार[२] पात पुनि आपु।
फूलहि मै पुनि आपु[३] फल, रस ही मैं पुनि आपु[४]॥५९॥
पंचनि[१] पंच मिला करै[२] जीउ[३] ब्रह्म मै लीन।
जीवन मुक्त कहावई[४] रसनिधि वही प्रबीन[५]॥६०॥
आसिक ह्व पुनि आपु तौं महबूबहु[१] पुनि आपु[२]।
चाहनवारौ[३] आपु तौं[४] बेपरवाही[५] आपु॥६१॥
कुदरत बाकी भर रही यौ रसनिधि सब जागि[१]।
ईंधन बिनु[२] बनियै[३] रहै ज्यौं पासन मै आगि[४]॥६२॥
अलषु[१] सवैई[२] लषतु[३] वह लख्यौ न काहू जाइ।
दृग तारिन के तिलन[४] की झांकि न झांखितु जाइ[५]॥६३॥
तिलन मांझ पुनि आपु[१] तौ सुमन मांझ पुनि आपु।
बासन वारौ आपु तौ पैरन वारौ आपु॥६४॥

---

५८. (१) आपही भा। (२) हतो प्र।

५९. (१) आपुतो प्र। (२) डारि प्र। (३) आप प्र (४) रस मैं पुन निधि आपु भा।

६०. (१) पंचन द। (२) मिलाइकै भा। (३) जीव भा। (४) कहावही भा। (५) वह परवीन भा।

६१. (१) महबूना भा। (२) आप भा। (३) चाहनहारौ भा। (४) तो प्र, त्यौं भा। (५) बेषरवाही द।

६२. (१) रसनिधि सबही जाग भा। (२) बिन भा। (३) बनियौ भा। (४) आग भा।

६३. (१) अलष भा द। (२) सबैही द। (३) लषत भा। (४) तिलक भा। (५) झांवन झाषतु आइ प्र।

६४. आपन्यौ भा।

गरजन मै पुनि आपु तौ बरसन मै पुनि आपु।
सुरझन मैं पुनि आप तौं[१] उरझन मैं पुनि आपु॥६५॥
कहुं नांचै कहुं गावहीं[१] कहूं देत है तार।
कहूं तमासौ[२] देखही आपु ईठ[३] रिझवार॥६६॥
नर पसु कीट पतंग मै थावर जंगम मेला।
ओट[१] लियै षेलतु रहै नवल[२] खिलारी खेल[३]॥६७॥
आपुहि ह्वा[१] महवूब मै बेदरदी सरसाइ।
आपुहि आसिक मै इहां दरद अगेजत[२] आइ॥६८॥
हिन्दू मैं क्या और है मुसलमान मै और।
साहिव सवका एक[१] है व्याप रहा सब ठौर॥६९॥
कहुं[१] नांचत गावत कहूं कहूं बजावत बींनु[२]।
सब मै राजत आपुही सबही कला प्रबीन[३]॥७०॥
जल समांन माया लहर[१] रवि समांन प्रभु[२] एक।
लहि वाके प्रतिबिंब कौं भासत[३] भाँति[४] अनेक॥७१॥
राई कौ बीसौ हिसा ताहू मैं पुनि आइ।
प्रभु बिनु षाली ठौर कहुं इतनौ हूं न[१] दिखाइ॥७२॥

---

६५. (१) आप त्यौं भा।

६६. (१) कहुं गावै नांचै कहूं भा, कहु नाचै गावै कहू प्र। (२) तमासा भा। (३) बैठि भा।

६७. (१) औट प्र। (२) नयौ भा। (३) आप प्र।

६८. (१) ह्यां प्र, वा भा। (२) अँगेजत भा।

६९. (१) अेक प्र

७०. (१) कहु प्र। (२) बीन भा। (३) प्रबीन भा।

७१. (१) लाहरि प्र। (२) ग्रेक प्र, ऐक द। (३) नाचत भा। (४) भात द।

७२. (१) इतनौ नहि। द

अलख जात इनि[1] दृगनि[2] सौं विदित[3] न देषी जाइ।
प्रेम कांति[4] वाकी प्रगट सब ई ठौर दिखाइ॥७३॥
जदपि रहौ है भावतौ[1] सकल जगत[2] भरिपूर[3]।
बलि जैयै वा[4] ठौर की जहँ ह्वै करै जहूर॥७४॥
दीपक[1] आपुहि था[2] लषौ[3] आपुहि हुवा[4] पतंग।
आपुहि आसिक होइ कै आपुहि जारत अंग॥७५॥
कौनु[1] रीझि वापै सकै को विहि सकै[2] रिझाइ।
आपु रिझावन हार है[3] आपुहि[4] रीझत आइ॥७६॥
पंचतत्त[1] की देह मै ज्यौं जिउ व्याकुल आइ।[2]
विस्वरूप मै ब्रह्म ज्यौं व्यापकु जानौ जाइ[3]॥७७॥
रस ही मै अरु[1] रसिक मै आपुहि[2] कियौ उदोतु[3]।
स्वांति बूंद मैं आपुही आपुहि चात्रिक[4] होतु[5]॥७८॥

---

७३. (१) इन भा। (२) द्रगन प्र। द।
(३) बात न द। (४) प्रेम काति प्र, येस गात द।
(५) सुढिद द।

७४. (१) भावतो प्र। (२) जग्त द।
(३) भरि पूरि प्र, भरपूर भा। (४) वह प्र।
(५) जदिय द।

७५. (१) दीपकु (२) आपु दिया द। (३) लिषौ भा प्र, लिखौ भा। (४) डाटव भा।

७६. (१) कौनु द। (२) बस करें भा। (३) हो रहौ भा। (४) आपहि भा।

७७. (१) तत्व भा। (२) त्यों सुरयापक होइ भा। (३) सोइ भा।

७८. (१) औ भा। (२) आपहि भा,। (३) उदोत भा, (४) चात्रक प्र। (५) होतु प्र द।

घट भीतर जो बसतु[१] है दृगनि सु वाकी[२] जोति।
देखत सब पै सबनि[३] मैं विरद[४] न जाहिर होति॥७९॥
अलष सबै[१] जासौं[२] कहै लषौ कौन विधि जाइ।
पाक जात की रसिकनिधि[३] जगत सिफात[४] दिषाइ॥८०॥
करत फिरत मन बावरे अनत[१] नहीं पहिचाँन।
तोही मैं परमातमा लेतु[२] नहीं तिहि जान[३]॥८१॥

सोरठा—

सो दीसै[१] सब ठौर[२] व्याप रहौ मन[३] माह जो।
सज्जन[४] करि कै गौर वाही कौ निजु जानियै[५]॥८२॥

दोहा—

बैठा है इस दलक विच आपै आपु[१] छिपाइ।
साहव[२] जात न[३] लख परै प्रकट[४] सिफात दिखाइ[५]॥८३॥

सज्जन वर्णन

तूं सज्जन या बात कौ समुझि[१] देखु[२] मन माहि[३]।
अरे दया मै जो मजा सो जुलमन[४] मैं नाहि[५]॥८४॥

---

७९. (१) बसत भा। (२) सवा की भा। (३) सबन भा। (४) विरल भा।

८०. (१) बसै द। (२) जापै भा। (३) रसकनिधि प्र। ४. सिफाति प्र, सिफानि भा।

८१. (१) अंत द, आप भा। (२) लेत भा। (३) पहिचान भा।

८२. (१) सौ दीजै प्र, सो दीजै द। (२) ठोर प्र। (३) मोन द। (४) साजन प्र, सजन द। (५) जानिजै प्र, द।

८३. (१) आप भा, (२) साहिब प्र। (३) जा तन भा। (४) प्रगटत द। (५) सिफानि क।

८४. (१) समझि प्र, समझ द। (२) देजि प्र, देखु द। (३) माहा प्र माहिद। (४) सोव जुलम प्र, द। (५) नाहा प्र।

सज्जन हो[1] या बात कौ[2] करि देखौ जिय[3] गौर।
बोलत चितवन चलन[4] वह दरदमंद[5] कौ[6] और॥८५॥
इत[1] जमुना रमना उतै बीच जहांनाबाद।
तामैं बसि नेकी करौं करौं न बाद बिबाद॥८६॥
मीता तूं या बात कौं हियै गौर करि हेरु[1]।
दरदमंद[2] वेदरद कौ निसिबासर कौ फेरु[3]॥८७॥
कठिनि[1] दुहूं बिधि दीप कौं सुनिहौं[2] मीत सुजांन।
सब निसि बिनु[3] देषै जरै मरै लषै मुष भांन॥८८॥
सीष सुधाई[1] तीर तैं तजि[2] गति कुटिल कमान।
भावै चिल्ला बैठि तूं[3] भावै बिच मैदांन॥८९॥

सोरठा

जारै सहित सनेह[1] करत प्रकासित जगत[2] जे।
नजरौ अचरज एहि, बिनु दुरजन जरै सनेह॥९०॥

दोहा

हित मत जौ जानौ चहौ सीषौ याके पास।
बढ़ै उडै न तजै तऊ केसरि[2] रंग सुबास॥९१॥

---

८५. (१) हौ प्र। (२) को भा। (३) निज प्र। (४) सजन द। (५) दरदवंत भा। (६) कौ भा।
८६. (१) इति प्र, बस भा।
८७. (१) हेर भा। (२) दरदवंत भा। (३) फेर भा।
८८. (१) कठिन भा। (२) सुन हो भा। (३) बिन भा।
८९. (१) सुहाई प्र। (२) जिय भा। (३) तै द।
९०. (१) नजरौ भ। (२) जगत द। (३) नजरौ द, न रौजु प्र। (४) करै भा।
९१. (१) वडै उडै प्र, बढ़ै बरै भा। (२) केसर भा।

कमल कुलीननि[१] बात सुनौ सनेही श्रवन[२] दै।
जीवन जारतु जात तऊ न रबि सौं हितु तजै ।।९२।।
बिन आदर जौ[१] रूप नृप छबि मुकताहल[२] देत।
दृग जाचक पै[३] दीठि[४] करि[५] बिनु सनमान न लेत ।।९३।।
आया[१] इस्क लपेट मै लागी चस्मा[२] चपेट।
सोई आया[३] जगत[४] मै और भरै सब पेट[५] ।।९४।।
सज्जन पास न कछु[१] अरे[२] ये[३] अनसमझी बात।
मौम रदन कहुँ[४] लोह[५] के चना चबाये[६] जात ।।९५।।
जब देखौ तब भलिन[१] तैं सजन भलाई होइ[२]।
जारै जारै अगर ज्यौं तजै नहीं षुसबोइ[३] ।।९६।।
बेदाना[१] सै हो रहै[२] दाना येक किनार।
बेदानन मैं[३] आदरै[४] दाना येक[५] अनार ।।९७।।
प्रीतम इतनी बात कौ हिय कर देषु[१] बिचार[२]।
बिनु गुन होत सुनै[३] कहूं सुमन हिये के[४] हार ।।९८।।

---

९२. (१) कुलीनन भा। (२) स्रवन प्र।

९३. (१) जो प्र (२) मुक्ताहल भा। (३) ये भा। (४) डौठि द। (५) कर भा।

९४. (१) आये भा। (२) चसम भा। (३) है या प्र। (४) जग्त द। (५) पेटि द।

९५. (१) कहु प्र। (२) ऐ द। (३) अरै प्र। (४) कहु प्र, कहि द (५) लोक प्र। (६) चबाऐ द।

९६. (१) मलिन भा, क, द। (२) होहि भा। (३) खसबोहि भा।

९७. (१) वैदाना ते प्र। (२) सै होत है भा। (३) वेदाना नहि भा। (४) आइ रहै प्र। (५) ये कनि ऐक द।

९८. देष प्र, द। (२) विचारि प्र (३) मैं सुनें प्र। (४) कौ भा।

हितु करियतु[1] उहि[2] भांति[3] सो मिलियतु[4] है उहि भांति[5]।
छीर नीर तैं[6] सीषि[7] लै हित करिबे[8] की बात[9]॥९९॥

वढत आपनैं[1] गोतु[2] कौं और सबै अनषाइ।
सुहिद[3] नैंन नैंना[4] बड़े देषत हियौ[5] सिहाइ॥१००॥

पसु पंछीहू[1] जानहीं[2] अपनी अपनी पीर।
तव सुजांन जानौं तुमैं[3] जव जानौ परपीर॥१०१॥

वड़े यार श्री मंत[1] के भेदहि कहियतु नांहि।
अरे यार के यार कौं सोच होत जिय मांहि॥१०२॥

इतनौई[1] कहनौ[2] हतौ प्रीतम तोसौं मोहि।
मान राषबी[3] बात तौ[4] मांन[5] राषनौ तोहि[6]॥१०३॥

गये जदिप मन[1] सूर तन[2] पत्थर घनै चलाइ।
व्यापैं तन [3]जे फूल वै मिहिरम[4] घालें[5] आइ[6]॥१०४॥

---

९९. हित करियन्त भा। (२) यह भा। (३) भांत प्र। (४) मिलियत भा। (५) वह भांत भा। (६) तें प्र। (७) सीष द, पूछ भा। (८) करबे द। (९) भाति द।

१००. (१) आपने प्र, आपनो भा (२) गोत भा। (३) सुहृद भा। (४) नेंन नेंना प्र। (५) देषे हिये प्र।

१०१. (१) पंछीही प्रपच्छीहु भा। (२) जानिहीं प्र, (३) तुम्हैं प्र।

१०२. (१) सीमंत, प्र, श्री कंत भा।

१०३. (१) इतनोंई प्र। (२) कहनी भा। (३) राषिनी प्र। (४) कौं प्र। (५) मानि द। (६) मोहि द।

१०४, मुनि भा। (२) सूं रतन प्र। (३) जै प्र। (४) महरम भा। (५) घायल द। (६) जाइ द।

मदन-वर्णन

अतन वतन[1] जब करतु है जाही तन मैं आइ।
छबि बस्ती[2] सब तैं सरस नैंनन वही दिषाइ॥१०५॥
नेह मौन[1] छबि मधुरता मैदा रूप मिलाइ[2]।
बैंचतु हलुवाई मदन हलुआ सरस बनाइ॥१०६॥
मदन भूप राजै जहां सहसा सकौ न जाइ।
रूप चांदनी पै[1] घरौ पौछि पलनि दृग पाइ[2]॥१०७॥
अरे जरे की पीर कौ तूं तौ जानत अैंन[1]।
नेहिन जारत फिरत[2] तूं जानबूझ[3] कै मैंन॥१०८॥
बिनहूं बाग लगाम वह चाबुक[1] लेत न हाथ।
फेरतु बाहुक[2] मैन लषु नैन हयन[3] इक साथ॥१०९॥
अवलष[1] नैंन तुरंग पै[2] पलकै पाषर डारि।
आयौ मदन सवार[3] ह्वै[4] अब को सकै सम्हारि॥११०॥
सारी डारी[1] हरित[2] अति लोचन[3] मूंडाढार।
अलिकावलि वागुर[4] रची षेलतु मदन सिकार॥१११॥

---

१०५. (१) अंत वतन द, मदन गवन भा। (२) वाकी भा।
१०६. (१) मौं न प्र मैन द। (२) दिषाइ प्र, मिलाइ द।
१०७. (१) मै भा। (२) घरवाइ क।
१०८. (१) हैन भा। (२) फेरतु द, ध (३) जानि बूझि प्र।
१०९. (१) चावकु प्र, चावक द। (२) बाहक भा। (३) हरिन भा।
११०. (१) बलष भा। (२) पर प्र, ये भा। (३) स्वार द। (४) हो प्र।
१११. (१) डाली भा। (२) हरति भा। (३) तिलोचन द। (४) वागुरि प्र।

कहन[1] सुनन चितवन चलन विहंसत सहिज[2] सुभाइ।
सब अंगन कौ देतु है आइ अनंगु[3] सिषाइ ॥११२॥
कीनी[1] वदित[2] सुमार नैं[3] नेहा जिते सुमार।
आवत नही सुमार मैं तै वे किये सुमार ॥११३॥
बाल बदन कौ मदन नृप रूप इजाफा दीन।
नैंन गजन[1] पर भौंह जनु मीनकेत[2] धरि लीन ॥११४॥
आवत आमिल काम तन बाढ़त जोवन जोर।
जिमीदार कुच[1] उकसि कै सोभा देत अकोर ॥११५॥
विधये[1] मैंन षिलार नैं[2] रूपजाल[3] दृग मीन।
रहत सदाई[4] जे भये चपल गतिन रसलीन ॥११६॥
लषौ मैंन तै मैन मै यह अद्भुत गति[1] आइ।
वह पिघलतु लगि आंच[2] कै इहि लगि मनु पिघलाइ ॥११७॥
मदन[1] सरोवर तैं भरे सरस रूपरस मैंन।
डीठ डौरि[2] सौं बांधिकै डोलतु[3] सुन्दर नैन ॥११८॥
चित चाइनि[1] सरसाइ रस रहै समाइ सरोज[2]।
मनमथ राजतु[3] आइ कै किय उर मढ़ी उरोज ॥११९॥

---

११२. (१) सहिति द। (२) सहिज द। (३) बहसन द।
११३. (१) कीनें प्र, कीन्हें भा। (२) विदिति, प्र, विदत द।
(३) मै प्र।
११४. (१) अजन प्र। (२) जसु द।
११५. (१) कुचि प्र।
११६. (१) विधिपे प्र। (२) में प्र। (३) रूपजालक प्र।
(४) सदाही द।
११७. (१) गत भा। (२) आपि भा।
११८. (१) बदन भा। (२) डोर द।
११९. (१) चाइन प्र। (२) समारत रोज भा। (३) राज सु भा।

करत न[1] जब तक मदन नृप रूप सनद पर छाप।
तब तक दृग दीवान[2] ढिग होति न बाकी थाप॥१२०॥

छबि सावन[1] यह तिल[2] सिला रूप सजल लष[3] नैन।
कलपै दै हित कलप[4] पै[5] मन पट[6] धोबी मैन[7]॥१२१॥

जब तै दीन्हौ[1] है इन्है मैन महीपति मांन।
चित चुगली लागे करन नैना लगि लगि कांन॥१२२॥

सैर[1] कला जब तैं इन्है लला[2] पढ़ाई मैंन।
सुरजन मन बस करत है तब तै तेरे नैन॥१२३॥

नेही दृग दीवान[1] नै जब तै कीनी थाप।
रूप सनद[2] पै करि दई मदन भूप तिल छाप॥१२४॥

नेह नगर मै कहि फिरै मैन लागि[1] मन[2] कांन।
तूजु होउ[3] नदलाल सौ[4] चित ब्रित ल्याइ सुजान॥१२५॥

कौमल किसलय दलनि तैं[1] जै तिय है अभिरांम।
दहतु सतनु[2] कौ आइ कै देखु[3] अतन के कांम॥१२६॥

---

१२०. (१) करतनु प्र। (२) दीमान द।

१२१. (१) तावन भा। (२) तिलु प्र, द। (३) लषि प्र। (४) कल्प द। (५) मैं प्र। (६) पढि द। (७) मेंन प्र।

१२२. (१) दीने प्र, दीनौ भा।

१२३. (१) सिद्ध भा, प्रा (२) लला इन्हैं प्र।

१२४. (१) दीमान द। (२) सदन प्र।

१२५. (१) लाग भा। (२) मनि भा। (३) रूजू होवे भा। (४) सै भा।

१२६. (१) तैं प्र, तै द। (२) दहत सतन भा। (३) देषु प्र, द।

रूप नगर बसि[1] मदन नृप दृग जासूस लगाइ।
नेहिनि मन कौं भेवु उनि[2] लीनौ तुरत मंगाइ॥१२७॥

रूप तषत[1] पै आइ कै बैठो मदन सुभूप।
नेही दृग मन नजर[2] लै राजत द्वार[3] अनूप॥१२८॥

बदन बहल[1] कुंडल[2] चका भौंह जुवा हय[3] नैंन।
फेरत चित मैदान में वहलवान वर मैन॥१२९॥

यौवन वर्णन

औसर कौं मौसर भयो[1] मति[2] दै कर तै षोइ।
जोबन औसर भावतौ[3] वार वार नहि होइ॥१३०॥

जोबन रावन रावनौ[1] सिरी चढ़ी लखि जाहि।
रूप नगर मैं आइ कै छबिधनि लीन्ही[2] व्याहि॥१३१॥

जोबन आमिल आइ तन भूमि करत ततबीर[1]।
घटि वढ़ि रकम बनाइ कै सिसुता करी तगीर॥१३२॥

रूप वर्णन

नागर सागर रूप कौ जोबन तरल तरंग।
सकतु न तिरि[1] छबि भमर[2] पर मन बूड़त सब अंग॥१३३॥

---

१२७. (१) बस भा। (२) उत द, भा।
१२८. (१) तख्त भा। (२) जार द। (३) गडे प्र।
१२९. (१) बहुल भा। (२) कुण्डिल भा। (३) यह प्र। (४) बरन वर प्र।
१३०. (१) भये भा। (२) मत भा। (३) भावतौ भा।
१३१. (१) जोबन ये बन ये बनौ भा। (२) लीनी प्र।
१३२. (१) भुमि करि तत वीर प्र कै मूसर कर ततबीर भा।
१३३. (१) तिर द, तर भा। (२) भंवर भा।

अजब सांवरो[1] रूप लषि दृगनि उठौई जाइ।
जिहि[2] उर तन[3] मो उर तिमिर तुरत बुरौई जाइ॥१३४॥
रूप समुद छवि रस भरौ अतिही सरस सुजान।
तामै तैं भरि[1] लेत दृग अपनै घट उनमान[2]॥१३५॥
अरे मीत या बात कौ देषु[1] हिये करि गौर।
रूप दुपहरी छांह कब ठहरानी इक ठौर॥१३६॥
रूप बाग मैं रहत है बागवान तुव नैन।
मन घन लै छवि इमृत[1] फल दैन[2] कहत हू हैन॥१३७॥
अषियन[1] कै जब पल अधर हेरत चिपके[2] जात।
मधुर रूप सोहै भरौ ह्या[3] तक जाकौ[4] गात॥१३८॥
लाल भाल पै लसत है सुन्दर बैंदी[1] लाल।
कियौ तिलकु अनुराग जनु[2] लषि कै रूप रसाल[3]॥१३९॥
उर दियला[1] राष्यौ[2] जु मैं सरस सनेह भराइ।
वैगि[3] भावते कीजियै रूप रोसनी आइ॥१४०॥
रूप सिंधु कौ[1] जाइ कै जब तैं परसौ[2] नेहु।
तब तैं केई[3] रंग सौं रूप दिखाई देहु॥१४१॥

---

१३४. (१) सांवलो भा। (२) जहि द। (३) तनि प्र।
१३५. (१) भर भा द। (२) उरमान द।
१३६. (१) देषि प्र।
१३७. (१) अमृत भा। (२) पै दैन भा।
१३८. (१) आंखिन भा। (२) चिबुके भा। (३) हिय भा। (५) याकौ द।
१३९. (१) बिंदी भा. बेंदा द। (२) ज्यौं भा। (३) रिसाल भा।
१४०. (१) दिय प्र। (२) लेषौव। प्र, राष्यह्यौ भा। (३) बेग भा।
१४१. (१) मैं भा। (२) परस्यौ भा। (३) कंयौ भा।

प्रीतम रूप कजाक कै[1] समसर कोऊ[2] नाहि।
छवि फांसी दै दृग गरै मन धन को लै[3] जाहि॥१४२॥
विधिनै जग मैं[1] तैं[2] रच्यौ जैसी भांति अनूप।
आभूषन को है[3] लला आभूषन तुव रूप॥१४३॥
मन कन पलटै मिलतु है जिन्है रूप धन माल।
तिनही के बिधिनै[1] रचे जग मैं माल बिसाल॥१४४॥
रूप चांदनी की गुढ़ी[1] स्वच्छ[2] राखिवै हेत[3]।
दृग फरास हाजिर षड़ै बरूनि[4] बुहारी[5] देत॥१४५॥
तौ कैसे तन पालते नेही नैन मराल।
जौ न पावतै रूप तुव[1] छवि मुकताहल[2] लाल॥१४६॥
रूप दीप जेतौ धरौ[1] मन फानूस दुराइ।
तऊ जोति बाकी[2] द्रगन होत प्रकासित आइ॥१४७॥
सुन्दर मौहन[1] रूप जो बसुधा मैं न अमाइ[2]।
दृग तारिनि तिल बिच तितै[3] नेही धरत लुकाइ॥१४८॥
छके[1] रूप मदपान कै ठहरत नहि पल पाइ।
लटपटाइ दृग दीठ[2] कर गहति पीत[3] पट आइ[4]॥१४९॥

---

१४२. (१) के भा। (२) कोई भा। (३) लहि प्र
१४३. (१) जै गमे प्र। (२) तूं द। (३) हौ प्र।
१४४. (१) बिधनै द।
१४५. (१) गढी भा। (२) सरद्द द। (३) हेति प्र। (४) बरनि द, बनुनि प्र। (५) बहारू भा।
१४६. (१) रूपसर भा, द। (२) मुक्ताहल भा।
१४७. (१) धरौ भा। (२) बांकी प्र।
१४८. (१) मोहन प्र, जोबन भा। (२) समाइ भा। (३) वहै द, तिन्है भा।
१४९. (१) वाके भा। (२) डीठ प्र। (३) प्रीत भा। (४) धाइ भा।

बेपरवाही बांधि बंधु राषौ[१] मनु अटकाइ।
नतरु कुरूप प्रवाहि उहि[२] देतौ कितै[३] बहाइ॥१५०॥
बहुत निकाइन तै लषौ[१] तेरौ रूप निकाइ।
तव[२] अनुरागी दृग रहै तेरे हांथ[३] विकाइ॥१५१॥
मलयागिर[१] चन्दन सरस घिसि घिसि लावत[२] कूर।
जात तपन[३] कहुं दृगन की बिन वा रूप कपूर॥१५२॥
ज्यौं[१] उत रूप अपार[२] है त्यौं इत चाह अपार।
नैन बिचौंही दुहुन कौ पाइ सकै नहि पार॥१५३॥
रूप निकाई भीत की ह्यां तक लौ अधिकात।
जा तन हेरैं[१] निमुष[२] कै रीझहु रीझी जात॥१५४॥

सोरठा

जोती डोरै लाल, पलकन[१] के सजि कै पला[२]।
तारे बाट बिसाल, जोषत दृग हरिरूप[३] धन॥१५५॥
और सवादिन पै लषौ भूलहु चितु[१] न देइ।
अंषियां मौहन रूप कौ बिनु[२] रसना रस लैइ[३]॥१५६॥

---

१५०. (१) राष्यौ भा। (२) उठि प्र, उह द। (३) कितौ प्र।

१५१. (१) लष्यौ भा। (२) नव भा। (३) हात भा।

१५२. (१) मलिया भा। (२) ल्यावत भा। (३) जानि तषनि प्र।

१५३. (१) जो प्र। (२) अपार द।

१५४. (१) हेरौ भा। (२) निमिष भा। (३) रीझहि भा।

१५५. (१) पलकनु प्र। (२) पलक द। (३) हर रूप द।

१५६. (१) चित्त द। (२) बिन भा। (३) लेइ भा, प्र।

छबि कन[१] दैं दृग जाचकनि[२] जे नहिं पालत आनि।
रूपरासि उनिकौ[३] दई दई कहा धौं जानि[४] ॥१५७॥
पलक परोहिनि[१] होइ नहि दृगनि सुनारी[२] साथ।
रूप कूप तै कौन विधि रसु लागतु[३] है हाथ[४] ॥१५८॥
निजु[१] करनी लषि आपनी रहियतु[२] है अरगाइ।
काचे घट चहियतु[३] भरौ नव सरूप रस लाइ[४] ॥१५९॥
दृग रसना जानत सही मधुर[१] रूप रस हौन।
एकदम जा[२] पावत सुनी कहुं[३] हाठ[४] की गौन॥१६०॥
रूप कहरि दरियाउ[१] मैं तिरबौ[२] है न सलाह।
नैननि[३] समुझावत रहै निसिदिन ग्यान मलाह॥१६१॥
जो भावै सो कर लला इनै[१] बांध वा[२] छोर।
है तुव सुवरन रूप के ये दृग मेरे[३] चोर॥१६२॥
तुव वन मैं षोयौ[१] गयौ मन मानिक ब्रजराज।
लगे[२] संग ही फिरत हैं नैनन वावस[३] काज॥१६३॥

---

१५७. (१) दै कै द। (२) जाचकन भा द। (३) उनकौ भा। (४) कहायौ जानि प्र।

१५८. (१) पुरोहित द, प्र। (२) निसि नारी भा, सुनारी प्र। (३) लगिनि क प्र। (४) साथ प्र।

१५९. (१) निजी भा। (२) रहियत भा। (३) चहियतु भा। (४) ल्याइ भा।

१६०. (१) धूर द। (२) सब्बरमय भा। (३) हू भा। (४) टाट प्र।

१६१. (१) दरियाव भा। तरिबौ भा। (३) नैननि प्र।

१६२. (१) यहँ प्र, इन्है द, भा। (२) भा द (३) मेरे द्रग भा।

१६३. (१) तन मैं पेषौ प्र। (२) लगो भा। (३) नैनन पाउस प्र, नैना वापन भा।

मदन जुवा के ष्याल मैं[1] रूप सई कौ देतु।
दुवा दाउ[2] कौ मैटि कै लाल तिहाई[3] लेत॥१६४॥
रूप नगर मैं बसत है नगर सैठ तुव[1] नैन।
मन जामिन लै नेहियत लगे पुंजी[2] छवि दैन॥१६५॥
और[1] बार दृग जे परैं तेरे रूप अहोर।
मन मलाह अब सकतु नहि ध्यावै इन्है[2] बहोर॥१६६॥
वरूनी जोती पल पला डांडी भौंह अनूप।
मन पासंग[1] तौलै[2] सुदृग हरुवौ गरुवौ रूप॥१६७॥
मुक्त स्वेदकन चिबुक लषि लषी[1] न अलि कै[2] जाल।
वदन रूप रस मै फसौ[3] रसनिधि सुमन मराल॥१६८॥
जौ नहिं करतौ भावतौ रूप भूप प्रतिपाल[1]।
तौ इन लोभी दृगन कौ होतौ कौन[2] हवाल॥१६९॥
देतु न मृदु मुसकान की गजक आइ बेहैफ।
भले छकाए नैन ये रूपासव की[1] कैफ॥१७०॥
सरस रूप कौं भार पल सहि न सकै सुकुमार।
याही तै ये पलकु जनु झुकि आवैं हरि[1] बार॥१७१॥

---

१६४. (१) खेल भा। (२) दुआ और भा। (३) तियाही भा। सही प्र, द।

१६५. (१) सब द। (२) पूंजी भा।

१६६. (१) अरे प्र। २. ह्यां तें इते प्र यातै इन्है भा।

१६७. (२) मनवा प्र मन पसंद भा। (२) तोलत प्र।

१६८. (१) लष लष लष द। (२) अलि कै भा। (३) फस्यौ भा।

१६९. (१) प्रतियाल भा। (२) कोन प्र।

१७०. (१) रूप सबी के भा।

१७१. (१) हर भा।

कर दीनी तुव रूप नै दृगन सुछवि तनषाह[1]।
दियौ चाहियै भावतै इनकौ ष्वाहमष्वाह[3]।।१७२।।

कीनौ[1] जतन सुजान बहु अजौं न निकसै तेव।
परौ[2] सुमन नंदलाल की रूप जेव की जेव।।१७३।।

सोरठा

कावर सुन्दर रूप, छवि गहुवा[1] जहं नीपजै[2]।
वाला लगै अनूप, हेरत नैननि डहडही[3]।।१७४।।

छवि सहिचरि[1] सौं दृगनि कौ इन विभचार[2] लगाइ।
रूप ग्यक्त तुव लगनि[3] कर मन धन लयौ[4] लुटाइ।।१७५।।

पल पिंजरन[1] मैं दृग सुवा जदिप मरत है प्यास।
तदिप तलफ जिय राषही[2] रूप दरस रस आस[3]।।१७६।।

रूप भूप कौ हुकुम[1] यह इतना किन[2] कहि देउ[3]।
विना सनेही[4] दृग हियौ आवन इहा[5] न देव।।१७७।।

---

१७२. (१) कहि दीनी तुव रूपनैं धुनि सुनि छबि तनखाह प्र। (३) खाहमिखाह भा।

१७३. (१) कीनौ भा। (२) परौ भा।

१७४. (१) गेहुंवा भा। (२) उपजै भा। (३) लहलही भा।

१७५. (१) सहचर प्र। (२) विवचार द, व्यभिचार भा (३) भूप प्र. द (४) लषौ द।

१७६. (१) पल किजरन भा। (२) राषहीं प्र। (३) प्यासि प्र, प्यास द।

१७७. (१) हुकम प्र। (२) हि तना प्र, द। (३) देव भा। (४) सेनही प्र। (५) यहां प्र।

वारि फेरि[1] कै आपु पै जरत[2] न मोरै अंग।
रूप रोसनी पै झपै नेही नैन[3] पतंग ॥१७८॥
षोरि षोरि[1] सब देत हैं मेरे नैननि षोरि।
लाल मनोहर रूप कौ देत न कोऊ षोरि ॥१७९॥
बिरह पीर कौ नैन ये[1] सकै नहीं पल साधि[2]।
मीत आइ कै तूं इन्हैं रूप पीठ दै[3] बांधि ॥१८०॥
रूप ठगौरी डारि[1] मनु मौहन लैगौ साथ।
तब तैं सासैं[2] भरत है नारी नारी[3] हाथ ॥१८१॥
रूप किरिकिटी पर गई जब तैं दृगनि सम्हारि[1]।
लाल भये तब तै रहत बरषत[2] अंसुवन धारि ॥१८२॥
लाल रूप के इमृत फल दृगद्रुम[1] लागत आइ।
याही तै विधिनै[2] दई बरूनी बारि[3] बनाइ ॥१८३॥
जा[1] दुकान कौ रूप मद अमली द्रगनिद्र रिहाइ[2]।
जिय गहनै धरि[3] पियत हैं[4] बार बार वहां जाइ ॥१८४॥

---

१७८. (१) पारि फैर कै भा। (२) जरति भा। (३) नेन प्र, नैना द।

१७९. (१) खोर खोर भा।

१८०. (१) येह प्र। (२) कांध प्र भा। (३) पीडि द।

१८१. (२) डारि भा। (२) तन जे सानसै प्र। (३) भारी तारी प्र।

१८२. (१) मंझार भा। (२) बरसत प्र।

१८३. (१) द्रग द्रग प्र। (२) बिधनी द। (३) वार प्र।

१८४. (१) ता प्र। (२) रहाइ प्र, रेहाइ भा। (३) धर भा। (४) हूं प्र।

उतरत मै[१] आवत डरौं जौ तुम नन्दकुमार।
चित[२] सुरोसनी रूप तुव[३] लियौ खड़ो[४] दृग द्वार॥१८५॥
कबहु न ये आवत इहां कुहू निसा लषि लेत[१]।
झंप झांषत[२] चहुंओर तै कहुं चकोर किहि हेत॥१८६॥
रूपु[१] मजा[२] कौ दृगनि सम जौ पल लेते जांन।
मीत लषत होते नहीं जे[३] बिच आडे[४] आंन॥१८७॥
जुलफ[१] नसैनी पै चढ़े दृग घर लपकै लाइ[२]।
रूप महल छबि रौसनी तब वै देषै जाइ[३]॥१८८॥
साफी कौ[१] तौ कर दई सनद[२] दृगन करि हेत।
रूप जिनसि पल गौंनि मैं काहे भरन न देत॥१८९॥
चढ़ी मदन दरगाह मैं तेरे नाउ[१] कमांन।
तषत मुबारक[२] रूप कौ तुझै मीत सुलतांन॥१९०॥
प्रीतम पै चाषौ[१] दृगनि रूप सलौनौ[२] लौंनु।
कटै[३] इश्क[४] मैदान मैं तौ कहु अचरज कौनु॥१९१॥

---

१८५. (१) उर तम मैं भा, प्र। (२) चित्र भा। (३) तब द। (४) लियै खड़े भा।

१८६. (१) लबतेत द। (२) झांकति भा।

१८७. (१) रूपु प्र। (२) स्वाद भा। (३) ए प्र। (४) आगे प्र भा।

१८८. (१) जुलुफ भा। (२) पलकैं पाइ भा। (३) देषै हैं आइ भा।

१८९. (१) की भा। (२) सघन द।

१९०. (१) नाम भा। (२) मवारब प्र।

१९१. (१) चाष्यौ भा, प्र, चाषौ द। (२) सलोनै भा। (३) कढै द। (४) इस्क प्र।

अरे बैद चहिये जु ह्यां[१] सो नहिं तेरे पास।
नैन यहां मिति[२] रूप रस आवत है गौरास॥१९२॥
नितु हित सौं पालतु रहै रूप भूप नंदलाल।
छबि पनिवारन[१] दै[२] सकौ दृग पनवारिन[३] हाल॥१९३॥

मुख वर्णन

मीत[१] सुमुष की जोति तौ[२] नेहै राषत पोषि[३]।
दीप जौत तौ लेत है सिर सौं नेहै सोषि॥१९४॥
सकै सताइ न वलु तिन्है[१] विरहा अनिल[२] सुछंद।
नजरै जै नजरै रहै[३] प्रीतम तुव मुषचंद॥१९५॥
जब जब वह[१] ससि देतु है अपनी कला गमाइ[२]।
तब तब तुव मुषचंद कै कला मांगि[३] लै जाइ॥१९६॥
कहूं[१] निसां तिथिपत्र मैं बांचन कौ रहि[२] जाइ।
तुव मुष ससि की चांदनी उदै[३] करति जहि[४] जाइ॥१९७॥
वह ससि ही[१] सै देखियै तारिन[२] माह[३] सुछंद।
निसु[४] दिन दृगतारिन लसै तुव मुषतारन चंद॥१९८॥

---

१९२. (१) दवा भा। (२) जहमतिन प्र
१९३. (१) पनवारिन प्र? (२) सै भा। (३) सनौ द्रग परवारिन हाल भा।
१९४. (१) प्रीत प्र। (२) तौं प्र। (३) पोष प्र, द।
१९५. (१) नवलति हैं प्र, पलइन्हैं भा। (२) अनिति प्र। (३) नजरै जेन जरै रहै द, न जोरै जै नजैरे भा।
१९६. (१) यह द। (२) गंवाइ भा। (३) पै भा। (४) मांग प्र।
१९७. (१) कहु भा। (२) रह भा (३) उदौ प्र। (४) है भा।
१९८. (१) निसि भा। (२) तारन भा। (३) माझ द। (४) निसि भा।

द्रग मृग नेहिन[1] के कहुं फंदि न पावै[2] जान।
जुलफ[3] फंदा मुष भूमि पै रोपै बधिक सुजान॥१९९॥

सुमन सहित आँसू उदिक पत्य अंजुरिन भरि[1] लेत।
नैन व्रती[2] तुव चंदमुख देषि[3] अरघ[4] कौ देत॥२००॥

छवि धनु पैयतु[1] अमित जहं लषि मुषचंद उदोतु।
मन नग[2] मोहन मीत पैं वार वारौ होतु॥२०१॥

भावंता[1] मुष स्वच्छ पै तिलु[2] नहिं जौ दरसाइ।
मो[3] दृग तारिन मैं जु तिल ताकी आभा आइ॥२०२॥

मदन कहन जासौं[1] लगे तब तैं चतुर विचार।
हरौ गयौ जाकौ[2] सुमन[3] मोहन बदन निहार॥२०३॥

हीरा मुख तावीज मै सोहति है इहि[1] बानि।
चंद लषतु[2], मुख मीत कौइ लग्यौ भुजा[3] सौं[4] आनि॥२०४॥

जब लगि हिय दरपन रहै कपट मोरचा छाइ।
तब लगि[1] सुन्दर मीत मुष कैपै दृगनि दिषाइ॥२०५॥

---

१९९. (१) नेहनि भा। (२) आवै प्र, पावहि भा। (३) जुलफि प्र, जुलफ द।

२००. (१) भर प्र। (२) नैनवती द। (३) देष प्र, द। (४) अघं द।

२०१. (१) पैयत धन भा। (२) गन द।

२०२. (१) भावता प्र। (२) जौ यह तिल दरसांइं भा।

२०३. (१) जब सौं भा। (२) याकौ भा। (३) सुमद भा।

२०४. (१) यह भा। (२) लगौ प्र। (३) जनु। (४) सन भा।

२०५. (१) लग भा।

जातै ससि तुव मुष लषौ[1] मेरौ चितु सिहाइ।
भावंता उनिहार[2] कछु तौमैं पैयतु[3] आइ॥२०६॥

तिल वर्णन

नेही तिल रसनिधि लषौ सुमन संग पिरिजाइ[1]।
निरमोही मुष के जु तिल सुमन पेरि[2] बचि जाइ॥२०७॥
तिलु न होइ मुष मीत पैर[1] जानौ याकौ[2] हेतु।
रूप षजाने की मनौ हफसी[3] चौकी देतु॥२०८॥

मुरली वर्णन

मोहन बंसुरी लेति[1] है बजि कै बंसुरी जीति।
बसु री यासौ चलत नहिं बस करि करत अनीति॥२०९॥
काननि लगि कै तैं हमैं काननि दियौ बसाइ[1]।
सुचिती[2] व्है तै बांसुरी बसु तैं अब बृज[3] आइ॥२१०॥
ऐसौ[1] जौ नित बांसुरी जौ[2] बजाइहै आंन[3]।
तौ कैसै[4] रहि सकैगी[5] या बृज मैं कुलकांन॥२११॥
मति[1] बजाउ इत[2] आइ[3] कै मौहन मुरली तान।
हरि लैहै काहू मनैं नाहक लगिकै[4] कांन॥२१२॥

---

२०६. (१) लषै भा। (२) उनहार द। (३) पैयुन प्र, पैय भा।
२०७. (१) फिजाइ प्र। (२) ेर प्र।
२०८. (१) पर भा। पे द। (२) बाकौ भा। (३) हबसो भा
२०९. (१) लेत भा।
२१०. (१) बिसारि प्र। (२) सुचती प्र। (३) बस अब बृजमैं भा।
२११. (१) अैसैंद, ऐसे भा। (२) वहभा। (३) आइ (४) सकहिगी प्र। (५) वह द।
२१२. (१) मत भा। (२) बबाज इत भा। (३) आय प्र। (४) लगि के प्र, लगिहै भा।

मौहन बंसुरी सौ कछूं मेरौ वसु न वसाइ।
सुर रसरी सौं श्रवन मगु[1] बांधि[2] मनै लै जाइ॥२१३॥
सुनियतु मीननि[1] मुष लगै[2] बंसी अबै सुजांन।
तेरी यह बंसी[3] लगै मीन केत कौ बांन॥२१४॥
अब लगि बेधन[1] मन हतै द्रग अनियारे बांनि।
अब बंसी बेधनि लगी सप्त सुरन सौं प्रांनि॥२१५॥
विछुरत[1] सुन्दर अधर तैं रहत न जिहि घट सांस।
मुरली सम पाई न हम प्रैम प्रीत की आस॥२१६॥
तोहि वजै विषु जाई चढ़ि आइ जाइ[1] मन मैर।
बंसी तेरी[2] वैन[3] कौ घर घर सुनियतु घैर॥२१७॥
करत त्रिभंगी मोहनै[1] मुरली लगि अधरांनि।
क्यौं न तजै जाकै[2] सुनै और सबै कुलकांन॥२१८॥

नयन वर्णन

मैन चैपु हित सांट की दीठ[1] लगाइ डगै न।
धरत[2] अहेरी मन हियै तैरे षंजन नैन॥२१९॥

---

२१३. (१) मग प्र। (२) बांध द।

२१४. (१) मीनन प्र। (२) लगे प्र। अब रमन द। (३) वनसी प्र।

२१५. (१) बेधत भा।

२१६. (१) बिहरत प्र।

२१७. (१) जात भा। (२) तेरे द। (३) बैर भा।

२१८. (१) मोहिनहि प्र, मोहनहि भा। (२) ताके भा, जाके द।

२१९. (१) डीठ प्र, भा। (२) अधर प्र।

रूप नगर दृग जोगिया फिरत सुफेरी देत।
छवि किन[1] पावत है जहां[2] पलझोरी भरि लेत[3]॥२२०॥
तुव अनियारे द्रगनि कौं सुनियत जग मैं सौर।
अजमावत कहि[1] फिरत हौं कमजोरन पर[2] जौर॥२२१॥
नजरै सबई[1] रहत है येक नजरिया और[2]।
उतनै ही मैं चोरही[3] चितु वितु[4] तुव दृग चोर॥२२२॥
रसनिधि सुन्दर मीति के रंग चुवौहै[1] नैन।
मन पट कौ कर देत है तुरत सुरंग ये नैन॥२२३॥
कजरारे दृग की घटा जब उनवै जिहि बोर[1]।
बरसि सिरावत[2] पहुम उर रूप झला झकझौर[3]॥२२४॥
कैसे मन धन लूटते लभावन्ता के नैन।
मनमथ जौ देतौ[1] नहीं इनकर बरछी सैन॥२२५॥
मतवारे दृग गज कहूं ऐसै[1] दीजतु छोड़ि।
नेही तन द्रुम[2] क्यौ सकै इन की झौंकै[3] औड़ि॥२२६॥
मैंन महाउत[1] दृग गजन हूलतु[2] वाही वोर[3]।
लाषन मैं लषि लेतु है वाही[4] कौ चितु चोर॥२२७॥

---

२२०. (१) कन प्र, मन भा। (२) भर केन प्र। (३) जहां द।
२२१. (१) कह प्र, का भा। (२) सौं भा।
२२२. (१) नजरै ई सब भा। (२) जौर प्र, बोर भा। (३) चोट्टी या (४) चितवत प्र, चित्रवित भा।
२२३. (१) चुचौहै भा
२२४. (१) और द, बोर भा। (२) सिरावै भा। (३) झलान झकोर भा
२२५. (१) देतो प्र, देते भा।
२२६. (१) अैसे प्र, द। (२) द्रगतन भा। (३) झाकै द,।
२२७. (१) महवत भा महाउ द (२) हूलत प्र हुलसत भा। (३) ओर भा। (४) हियही भा।

मन धन तौ राषौ[1] हतौ मैं दीबै कौ तोहि।
नैन कजानन पै अरे क्यौं लुटवायौ मोहि॥२२८॥
प्रेम नगर दृग जोगिया[1] निसु दिन फेरी देत।
दरस भीष नंदलाल पै पल झोरिन भरि[2] लेत॥२२९॥
तब जानौ[1] ससि और पै तोरा लेउ चलाइ[2]।
द्रग चकोर तब रावरे षासी रैयत आइ॥२३०॥
दरस दांन तो पै चहै द्रग पल[1] अंजुरी ओडि[2]।
पूरन कर मनकामना इनै बिमुष मति छोड़ि॥२३१॥
जो नहि देतौ अनत[1] कहुं द्रगन हरवली आइ।
मन मवास जौ सतन[2] मैं को सर करतौ धाइ[3]॥२३२॥
देते[1] जो नहिं भेदु कहुं नैंननि सौं मिलि नैंन।
मीत उजागर आउतौ[2] कैसे मन धन लैंन॥२३३॥
छूटे[1] द्रग गज मीत के बिचि है[2] प्रेम बजार।
दीजौ नैंन दुकांन के मोहन[3] पलक किंवांर॥२३४॥
जिहि[1] लालच मन धन दियौ[2] द्रगन मीत तुहि ल्याइ।
काहे तैं वह रूप रस देत न इनकों प्याइ[3]॥२३५॥

---

२२८. (१) राख्यौ भा।
२२९. (१) जोग्यांन्द (२) मैं प्र।
२३०. (१) जानै भा। (२) ताथे लेव चलाय भा। (३) रावरी भा।
२३१. (१) फल भा। (२) बोड़ भा।
२३२. (१) अतन भा। (२) सुतिन भा। सुतनक। (३) धाय भा।
२३३. (१) देततौ भा। (२) आवत प्र द।
२३४. (१) छोटे प्र। (२) इहि प्र, यह भा (३) महुकम भा।
२३५. (१) जिह द। (२) दियां भा, प्र। (३) ल्याइ प्र।

मोहन छवि[1] दरियाव मैं पाइ[2] सकै नहिं पार।
झझकि रहत है देष कै पैरवार[3] द्रगवार॥२३६॥
प्रथम सुमिर तुव दृगनि[1] कौं जे प्रनाम करि लेत।
मीता उनिकौं[2] जगत मैं जाछा आदर[3] देत॥२३७॥
नातवांन[1] तन पै अबै[2] येती ताकत है न।
मति झु काउ[3] मो सामुहैं[4] गज मतवारे नन॥२३८॥
ऐसा तो कीनो नहीं[1] कछु गुनाह भी मैन[2]।
भौ तन पै नु झुकावही गज[3] मतवारे नैन[4]॥२३९॥
मीत नीत की चाल ये चल जानत हू हैन।
छवि सैना सजि धावही अबलन पै[1] तुव नैन॥२४०॥
जव तैं नागर[1] मन वसौ आइ सुमैना मैन।
पहिरायै[2] करिकै निसा चित चोरी कौ नैन॥२४१॥
सिसुताई के अमल मैं दबे रहत हैं नैन।
मैन अमल के होत कछु लगै पयानौ दैन॥२४२॥

---

२३७. (१) रूप प्र। (२) जाइ भा। (३) ओवार प्र।

२३८. (१) उनैकौ प्र। (२) जादू अरदा प्र। (३) जाइ अरदा म। करि द।

२३९. (१) वातमांन प्र। (२) सुनौ भा। (३) झुकाव भा। (४) सांमनें प्र।

० यह छन्द प्रति प्र द में भा के छन्द २४१ के बाद आया है।

२३९. (१) ऐसौ तौ कीन्हों हतो भा। (२) भीन प्र। (३) जे प्र। (४) तैन प्र।

२४०. (१) ये प्र।

२४१. (१) तन प्र। (३) पहिस येक द्र।

मीत विदित ये बाढई[1] नन[2] तुमाहारे[3] आइ।।
बरुनी कर तुव[4] देतु है नहिन सीस चलाइ।।२४३।।
दीठ वरत पै[1] नैंन चढ़ि कैयक पलटा[2] देत[3]।
देष तमासौं रीझ कै नेही मनधन लेत[4]।।२४४।।
जिहि[1] मग दौरत[2] निरदई तेरे नैंन कजाक।
तैंहि[3] मग फिरत सनेहिया कियैं क परेवा[4] चाक।।२४५।।
आप बसातै[1] वहुत[2] सौं मन कौ कियौ बचाइ।
हौन लची[3] दृग लालचिनि दीन्हौ मनहिं लचाइ।।२४६।।
रसनिधि नेंननि परि[1] गई कछू[2] अनौखी बांनि।
पीवत ही छवि पल अधर[3] लगै लपैटी आनि।।२४७।।
रूप हगौरी डारि कै मौहन[1] कैगौ चित्ति चौरि[2]।
अंजन मिस जनु नैंन ये पियत हलाहल घोरि।।२४८।।
गुरजन नैनि[1] विजातियन परी कौन यह बांनि।
प्रीतम मुष अवलोकतन होत जुआड़े आंनि।।२४९।।

---

२४३. (१) बाटइ प्र। (२) मैन प्र। (३) तुम्हारे भा। (४) करवतु द।

२४४. (१) पर भा। (२) उलंथा प्र, द। (३) लेत भा। (४) देत भा।

२४५. (१) जित प्र। (२) होरत प्र। (३) तिहद, तोहि भा। (४) गवेरे द, गरेवा भा, परवा क।

२४६. (१) बसाने प्र। (२) बहत प्र। (३) हौत चली प्र।

२४७. (१) पर प्र। (२) कहुक भा। (४) मधुर भा।

२४८. (१) मोहन भा। (२) चोर प्र, द। (३) घौरि प्र

२४९. (१) तहि प्र।

दृग द्विज ये उठि प्रातही करि असुत्रन असनान।
रूप भूप वै[1] जाचही छवि मुक्ताहल दांन॥२५०॥
अरुन तगनि[1] कै नैन जनु गरै जनेऊ डारि।
रूप दांनि मांगत रहें ये पल करनि पसारि॥२५१॥
त्रपित न[1] मानत नैन ये[2] लेत रूप रस दांन।
रहत पसारै[3] लोमिया निस वासर पल पान॥२५२॥
जव तैं वहि सिर पढ़ि दियौ[1] हैरन में हित बील।
पल घर मैं पैठत[2] नहीं तव तैं दृग ह्वै[3] सील॥२५३॥
द्रग मृगनैननि[1] के कहूँ फांद न पाव जान।
जुलफ फंदां मुष भूमि[2] पर रोये[3] वधिक सुजान॥२५४॥
मति चलाउ[1] मो सासुहै इनिकौं तैं अड़ियार[2]।
नैन[3] कटारी वांकुरी पल म्याने[4] पड़िधार[5]॥२५५॥
रीझत आपुन जादू[1] कै लषि छवि नंदकुमार।
मन कौ डारत वारि जे नौखे[2] द्रग[3] रिझवार॥२५६॥
नेह नगर मैं कहु तुहीं[1] कौन वसै सुषचैन।
मन धन लूटत सहिज मैं लाल बटपरा नैंन॥२५७॥

---

२५०. (१) पर भा।
२५१. (१) तगन प्र, लगा भा।
२५२. (१) त्रिपं सन द। (२) यह प्र। (३) पसरि प्र।
२५३. (१) पर दिये प्र, पठि दिये द। (२) बैठत भा। (३) है प्र, हुइ भा।
२५४. (१) मृग नैननि भा। (२) पर भा। (३) रोषे प्र, द।
२५५. (१) मलाव भा। (२) अड़पार प्र अरुपार भा। (३) नजर भा। (४) मियान प्र। (५) पडिधार प्र।
२५६. (१) जार भा। (२) नषै प्र, ताषै द। (३) द्रगन प्र।
२५७. (१) कवहु तुहि प्र।

देष न इन्हें न देतहीं[1] इहि[2] डर मोहन ओर[3]।
आपु लागि करिहैं[4] करन मेरे मन पै[5] जोर॥२५८॥
सुरत सहेली वाल छबि नित[1] संवारि कै लाइ[2]।
दृग प्रीतम कौ देषि कै[3] आछी भांत्ति मिलाइ॥२५९॥
साधत इक छूटत सहस लगत अमित ह्वै जात[1]।
अरजुन सम वानावली तेरे दृग करि[2] जात॥२६०॥
तेरे नैन मसालची रूप मसाल दिषाइ।
नेही तन तैं[1] विरह तम दौरै[2] दूरि भजाइ॥२६१॥
मेरै जांन सुजांन तुव नैन किलकिला[1] आइ।
हृदय सिंधु तैं मीन मनु तुरत सुधरि[2] लै जाइ॥२६२॥
समझ[1] न सांची वात यह यामै नहीं[2] विबाद।
विना जीभ[3] कै लैत द्रग मोहन रूप सवाद॥२६३॥
जे अखियाँ वैरा रही लगै बिरह की वाइ।
प्रीतम पग रज कौ तिन्हैं अंजनु देउ[1] लगाइ॥२६४॥
हेरत मौहन रूप को वृजवाला न धाइ।
चहूं ओर तैं दौरि कै दृग कोरिन[1] मिल जाइ॥२६५॥

---

२५८. (१) देषन यहं न देत हीं प्र, देखत नैन न देखती भा। (२) यह भा। (३) वोंर प्र। (४) करहै प्र। (५) पर भा।

२५९. (१) निज प्र। (२) ल्याई भा। (२) देत है भा।

२६०. (१) द्रग गात भा, द्वै गाति द। (२) कर प्र।

२६१. (१) मै प्र। (२) दीन्हों प्र।

२६२. (१) किलकिला भा। (२) पकर प्र।

२६३. (१) सज्जन भा। (२) यामै नहि भा यामैं नाहि प्र। (३) जीभ भा।

२६४. (१) देहू भा।

२६५. (१) कोरा प्र।

अंजन होइ न लसत जौं[1] ढग इन नैन विसाल।
पहिराई जनु मैन[2] गुर स्याम बंदनीमाल[3]॥२६६॥
विदित न सनमुष व्है[1] सकै अषियाँ बड़ी लजोर।
बरुनी सिरकिन ओट व्है हेरत मौहन ओर॥२६७॥
अवगाहे इन रूप नद[1] जब तैं नैन मलाह[2]।
तब तैं मनु नृप चलतु है इनहीं बूझि[3] सलाह[4]॥२६८॥
यामैं[1] ये[2] छवि पावती छाब भावंता भांति।
रसनिधि अषियां ताहियै नित अवलोकि सिहाति[3]॥२६९॥
दृग दूसासन[1] लाल कै ज्यौं ज्यौं षैंचत जात।
त्यौं त्यौं द्रौपति[2] चीर लौं मन पट बाढ़त[3] जात॥२७०॥
बाहक दृग नंद लाल के अैंठन[1] अैंठी घाल।
अड़ छुटाइतिय[2] मन हयन तुरत चलावत चाल॥२७१॥
द्रग दरजी बरूनी सुई रेसम डोरा[1] लाल।
मगजी ज्यों[2] मो मन सियौ तुव दावन[3] सौ लाल॥२७२॥

---

२६६. (१) जो प्र, तो भा। (२) मैंन प्र, मदन भा। (३) मंदनी द

२६७. (१) हो द।

२६८. (१) मद प्र, निधि भा। (२) मिलाइ प्र। (३) पूछ प्र, बूझ द। (४) सलाइ प्र।

२६९. (१) जामैं भा। (२) ने प्र। (३) निसदिन देष सिरात प्र

२७०. (१) दूसासन द। (२) द्रोपत प द्रोपदि भा। (३) बांधत प्र।

२७१. (१) अैठत प्र, अैड़न भा। (२) आडि छुटाउति भा।

२७२. (१) डोरे भा। (२) यौं प्र। (३) दामन भा।

भावंता लषि लगत पल जानत हौं[1] किहि[2] हेतु।
पल ओटन सौं नैंन ये रूप स्वाद कौं[3] लेत॥२७३॥
जब जब निकसत भावतौ रसनिधि इहि[1] मग आइ।
नेह अतर लै दीठ[2] कर लोचन देत लगाइ॥२७४॥
बहकाये तै और के ये रीतैं[1] जिनि बैंकु।
देषन दै मुष चंद कौ नैंन चकोरन नैंकु॥२७५॥
थिरकत सहज़ सुभाव सौं चलत चपलगति सैंन।
मनरंजन रिझवार ये षंजन तेरे नैंन॥२७६॥
नींद आदरत है तुहैं[1] नैही द्रग इहि आस।
कबहुंक देषौं उनि तुम्हैं[2] भावंता दृग पास॥२७७॥
सिसु ज्यौं जल कन[1] लेत दृग भरि पलकन मैं हाल[2]।
विचलत षैंचत[3] लाज कौ मचलत लषि नंदलाल॥२७८॥
दृगनि दृगनि सौं मिलि कियौ भेद प्रथम ही जाइ।
मैं न दियौ[1] मन उनि लियौ भौ[2] हसि नैंन लगाइ॥२७९॥
विधिवत छबि कै फंदन[1] सौं नेही मन अभिराम।
षंजन दृग लषु[2] मीत के[3] करत बधिक के कांम॥२८०॥

---

२७३. (१) कौ भा। (२) केहि भा। (३) सवादहि प्र।
२७४. (१) यह प्र। (२) दीन प्र, डीठ भा।
२७५. (१) ही तै भा।
२७६. (१) के भा।
२७७. (१) नींद निरादर देत हैं भा। (२) उनि तुहै प्र, उदित ह्वै भा।
२७८. (१) किन भा। (२) लाल भा। (३) बिचसत बैचै द।
२७९. (१) दयौ द। (२) मुहिसल मैन लगाइ भा, मौ हौ नैन लगाइ क।
२८०. (१) फदन प्र, फंद भा। (२) लषि म। (३) मीप्त के प्र, मीत के भा।

तुव दृग सतरंज[१] बाज सौं मेरौ कछु[२] न बसात॥
बादशाह[३] मन कौं करै छबि सहि दै[४] कर मात॥२८१॥
दैंन लगे तुह पास जब बिरह अहेरी गाइ।
प्रीतम सुवन[१] मवास बिच बचत नैन मृग जाइ॥२८२॥
अंजन आंदू[१] सौं भरै जद्दिप[२] तुव गज[३] नैंन।
तदिपि चलावतु रहत हैं झुकि झुकि चोटैं सैंन॥२८३॥
षैंचै अंकुस लाज के जे रुक[१] पलकु रहैं न।
धीरज द्रुम तोरत[२] फिरै गज मोकल[३] तुव नैंन॥२८४॥
रस रेसम मैं जो दई गांठि अनष[१] झकझोर।
ते तुव दृग नष[२] भौंह[३] सौं सहजहिं डारत छोर॥२८५॥
दीठ लगत उर ईठ[१] तन कटक सकत[२] न हेर।
तऊ लेत दृग लालची चोरी चोरा हेर॥२८६॥
वासौ[१] सुमन सुवास तैं जब तैं प्रीतम आइ।
तब तैं अलि उनि[२] दृगन पर पासु न छोड़ौ जाइ॥२८७॥
ठगिया तेरे नैंन ये छल बल[१] भरे कितेब।[२]
कतरत पल[३] मिकराज सौं नेही मन की जेब॥२८८॥

---

२८१. (१) सतनज प्र। (२) बस भा। (३) पादसाह भा। (४) है भा।

२८२. (१) रूप भा।

२८३. (१) आदर प्र. (२) जदपि प्र, (३) तुवग सजु प्र।

२८४. (१) बेसक प्र। (२) टोरत प्र। (३) कोम भा।

२८५. (१) अनक द। (२) वक प्र। (३) मोह प्र, माहि भा।

२८६. (१) डीठ प्र। (२) सहत प्र।

२८७. (१) तास्यौ प्र, वास्यो भा। (२) इन अलि भा, उन अलि प्र।

२८८. (१) भर प्र। (२) कितेक द। (३) करतर रत द।

जुरत[1] दृगनि सौं दृगनि की पल बामैं[2] मुरिजाइ।
पैनै नेजा नजरि के सौंहै उरि उरि जाइ[3] ॥२८९॥
इनमैं हू[1] दरसाति है हरि मूरति की लोइ।
यातैं लोइन कहत हैं इनसौं मिलि सब कोइ॥२९०॥
नैंन बान जिहि उर छिदै[1] कसकत[2] लेत उसांस।
मीत सु उनिकी है दवा मिलै न बैदन पास॥२९१॥
उत अलगरजी चाह[1] इत लगी हियैं सरसांन।
दृग अनुरागिन कौ परी कठिन दुहूं बिधि आंन॥२९२॥
बिरह बाइ[1] सहि[2] सकत नहिं होइ गये अति छीन।
नैंन जहमती[3] जानि कै पल उर[4] बारे दीन॥२९३॥
बदन कूप तैं रूप रस दृग बिनु गुन भरि[1] लेत।
और कूप बिनु गुन पथिक प्यासे फेरी देत॥२९४॥
लघु मिलनो[1] बिछुरन घनो[2] ता बिच बैरिन लाज।
दृग अनुरागी भांवते कहु कहु करै इलाज॥२९५॥
भूले लोभी नैंन जौ[1] छबि रस आये चाषि।
दृग तारे दै कै इन्है[2] नजरबंद कर राषि॥२९६॥

---

२८९. (१) तुरत द। (२) बागै भा, क। (३) जात प्र।
२९०. (१) ह्या द, होइ भा।
२९१. (१) उर छिदे प्र। (२) ससकत भा।
२९२. (१) चाहि भा।
२९३. (१) बाँह भा। (२) कह भा। (३) झिलमिली भा। (४) उल प्र, बल भा।
२९४. (१) भर भा।
२९५. (१) मिलना प्र। (२) घना प्र।
२९६. (१) सौ भा। (२) वहै प्र।

ताजी ताजी गतनि[१] ये[२] तब तै सीखैं लैंन।
गाहक मन राजी करैं बाजी तेरे नैंन॥२९७॥

दृग नकीब ठाढ़े[१] रहत पल पौरन हि[२] हेत।
मन मजलिस मैं मीत जहं और झषन ना[३] देत॥२९८॥

रूप इमारत मैं[१] इन्हैं जौ तूं दियौ[२] लगाइ।
दरस मजूरी दै लला नैंन मजूरिनि आइ॥२९९॥

प्रथमहि नैंन मलाह ये[१] लेत सुनेह लगाइ।
तब मझियाउत[२] जाइ[३] कै गहिर[४] रूप दरियाइ॥३००॥

मन मैं आंनन आंनहीं अलबेलै[१] तुव नैंन।
तामैं भयौ हिमाइती आइ सु इनकौ[२] मैंन॥३०१॥

मीत बिरह की पीर[१] को सकै न पल दृग कांधि[२]।
रूप कपूर लगाइ कै प्रीत पटी सौं बांधि[३]॥३०२॥

गौना[१] नैंना लाल के हित कै[२] जानतु नाहिं।
नऐ[३] नेह की बहल मैं धुरिलौं[४] जांनत नाहिं॥३०३॥

---

२९७. (१) गतन प्र। (२) ऐ द।

२९८, (१) ढाडे प्र, बाढा द। (२) यह भा, इह द। (३) औ झकन ना भा।

२९९. (१) कौ प्र। (२) दये भा, दिये द।

३००. (१) जे भा। (२) मझयाउत, द मझयावत भा। (३) जाय भा।

३०१. (१) अलबेले भा। (२) सोइन भा।

३०२. (१) धीर या धरि प्र। (२) कांधी भा। (३) बांध भा।

३०३. (१) गैना भा। (२) मै भा। (३) नहे भा। (४) थुरला भा, घुरलै द।

वैन[१] जहां के तहं रहै लगैं[२] होइ उर पार[३]।
विधि तोहीं कौं रचि दियौ[४] ऐंसें दृग हथियार॥३०४॥
प्रथमहि दारू पाइ कै पीछै गोली षाइ[१]।
तेरे नैंन बदूष सम[२] चोटै[३] चूकत नाइ॥३०५॥
गुरुजन डर सौं चतुर ये[१] बरुनी जिलरुमन डारि[२]।
निधरक[३] प्रीतम बदन तन अषियन[४] रहैं निहारि[५]॥३०६॥
रसनिधि मौहन रूप तौं[१] जिहि मैं तिहि[२] सरसाइ।
तिनकौ राषौ नेहियन नैंन माझ ठहराइ[३]॥३०७॥
टौना अपु[१] बस करन कौ करे हते इन जाइ।
अब उलटे टौना[२] परचौ[३] गरै दृगनं के आइ॥३०८॥
मन सुबरन धरिया हियौ लाल सुहाग मिलाइ।
दृग सुनार हित आंच दै कुन्दन कियौ तपाइ॥३०९॥
रूप लोभ बसि मिल गये नैंन पहरुवा जाइ।
तबलौ नौं[१] चितचोर नै मन धन सहज[२] चुराइ॥२१०॥
नैंन सनेहिन कै मनौं हलवी सीसा आइ।
गुपत प्रकट तिन मैं सदा मीत सुमुष दरसाइ॥३११॥

---

३०४. (१) बनौ भा। (२) लषै प्र। (३) पाल द, दियै प्र, द।

३०५. (१) खाहि भा। (२) बधूक सम प्र, बंदूक ये भा। (३) चोटे प्र, चोटहि भा। (४) नाहि भा।

३०६. (१) ई भा। (२) बहुर गझिल मन डार प्र, (३) निपरक प्र, निधकर द। (४) अषियां भा। (५) रही भा, हरे प्र।

३०७. (१) रूप नै प्र, द। (२) मैनहि प्र जहि मैनहि द। (३) मैंन नाक ठहराइ प्र, मैन नाम ठहराइ द।

३०८. (१) अंखि भा। (२) रौना भा। (३) परै प्र।

३१०. (१) तब लीने प्र, तब लौनौ द। (२) लियो भा।

जालिम नैंनन के जुलुम कहियै काके पास।
पल पल षैंचत रहत है पल संसिन[1] सौं मांस॥३१२॥
मोहनमुष लषि[1] आपुही ये सरसावत हेत।
चाह बांवरी मांझ दृग मन कौं गोता देत॥३१३॥
एक[1] नजरिया[2] के लषै जो कोउ[3] होइ निहाल।
तों यामैं[4] तुव गांठ कौ कहा जात है लाल॥२१४॥
तनिक[1] किरकिटी जो[2] परै पल पल मैं अहटाइ।
क्यौं सोवै सुष नींद दृग मीत बसै[3] जब आइ॥३१५॥
नैंना मौहन रूप सौं मन कौ देत मिलाइ।
प्रीत लगै मन की बिथा[1] सकै न ये फिर आइ[2]॥३१६॥

सोरठा

रूप नगर मैं नैंन फेरी निसुदिन दैत है[1]।
मोहन मूरत मैंन, दरसन भिक्ष्या[2] के लिये॥३१७॥

दोहा

धरे हते मुहरा घनै[1] मैलै हियौ बिसात।
मो[2] मन साहिय कौ क़रौ[3] तैं दृग दै[4] सह मात[5]॥३१८॥

---

३१२. (१) संडसिन भा।
३१३. (१) लष प्र
३१४. (१) येक प्र। (२) जनरिया भा। (३) कोई भा। (४) वानै प्र।
३१५. (१) तनक प्र। (२) के भा। (३) बसौ प्र।
३१६. (१) व्यथा प्र। (२) पाइ भा।
३१७. (१) निसि दिन फेरी दैत है भा। (२) भिखिया भा।
३१८. (१) मुह राषनै प्र। (२) मेरे प्र। (३) सह कौ कियौ प्र। (४) दै द्रग भा। (५) महमान प्र।

वरुनी बन्दनवार रचि पल मंडफ दुज[१] मैंन।
छबि धन सौं चित चाइ[२] सौं भरत भावरे नैंन॥३१९॥
तीन पैंड़ जाके लषौ त्रिभुवन मैं न समाइ[१]।
धरि[२] राधे राषत तिन्हैं[३] तूं द्दग आधिन माइ॥३२०॥
मेरेई दृग मीतकर जौ मन आवै बैंच।
तौ याके[१] इनसाफ कौ काहि बुलाऊं षैंच॥३२१॥
द्दग माली ठै दीठ[१] कर निरषि रूप की वेल।
लेत सु चुनि छबि की कली पल झोरिन सौं[२] झेल॥३२२॥
मेरे नैंननि[१] ह्वै लषौ लाल आपनौ रूप।
भावत है गौ भावतौ कैसैं[२] भांति[३] अनूप॥३२३॥
मन मरुवौ कुच गिरिन पै[१] सहजै पहुंच सकै न।
याही तै लै डीठ के पैरे बांधत नैंन॥३२४॥
नेहनि उर आवत लषौं[१] जवही धीरज सैंन।
सैफी हेरन मैं कटै[२] कैफी तेरै नैंन॥३२५॥
मन घन तो पै भावते जे बारैई देत।
द्दग चौरन उनके[१] हियौ[२] क्यौं बारैई देत॥३२६॥

---

३१९. (१) द्विज भा। (२) चाय भा।
३२०. (१) समाहि प्र। (२) धन भा। (३) जितै प्र।
३२१. (१) जाके प्र।
३२२. (१) डीठि भा। (२) मैं प्र।
३२३. (१) नैनन। (२) कैसी भा। (३) भात प्र।
३२४. (१) गिर नयौ प्र।
३२५. (१) लषैं प्र। (२) पटै भा।
३२६. (१) वन भा। (२) हिये प्र।

पीवत नहीं अघात छिन नाही कहत बनैं न।
पलवौं कै बांधे रहै छबि रस प्यासैं नैन॥३२७॥
सुहृद जगत मैं दृगन सें रसनिधि दूजे नाहिं।
बड़े द्रगनि लषि आपनै[1] तन मन हियौ सिहाहिं॥३२८॥
नैंन अनी जब जब जुरैं रूप बनी मैं जाइ[1]।
तब तब आड़ी बीच मैं लाज परति[2] है आइ॥३२९॥
पल जोरन[1] के दृग पला[2] जब तैं सिषये मैंन[3]।
तब तैं नेही चित छला लगे लला कौ दैंन॥३३०॥
भरत सांस लै हर[1] घरी रूप दरस की आस।
तृषित दृगनि की मिटत कहुं आंसू घूटन प्यास[2]॥३३१॥
तृषित[1] दृगन की तृपति[2] जौ ध्यान धरै तैं होइ।
वोसन[3] बुझती प्यास जौ नीर न पीयतौ[4] कोइ॥३३२॥
नैंन कमल ह्यां[1] लगत हैं कमल लगत हैं[2] वाइ।
कमलनाल सज्जन हियौं दौनौ येक[3] सुभाइ॥३३३॥
जादूकरि[1] तुहि[2] दृगनि बिहि[3] यौं कर लियौ सुतंत्र।
तब तैं वाहि न फुरत[4] हैं तंत्र न जंत्र न मंत्र॥३३४॥

---

३२८. (१) आप तौ भा।

३२९. (१) आइ भा।

३३०. (१) जो जन द। (२) बया द। (३) मीत द।

३३१. (१) हरि प्र। (२) घटत पियास प्र।

३३२. (१) त्रषत, प्र द। (२) त्रपत प्र। (३) ओसन भा। (४) पियतै प्र, पीयतौ द।

३३३. (१) हवा प्र। (२)....प्र। (३) ऐक द।

३३४. (१) जादूकर प्र, जादूगर भा। (२) तुव भा। (३) विह प्र, यह भा। (४) फिरत द।

बिना तमाषू सूरती छवि बीरा[१] न मिठाइ।
परौ अनोषौ अमल यह गरै दृगन के आइ॥३३५॥
अपनै सै दृग लागनै जौ तूं लषितौ और।
तौ तेरौऊ चित[१] लला नैक न रहतौ ठौर॥३३६॥
मैं दीनौ उनिनैं लयौ[१] मन धन देषत अैन।
वूझै मुकरे जात हैं अव काहे तुव[२] नैन॥३३७॥
वैपारी[१] दृग मीत के तिनहीं[२] बाले देत[३]।
वंधी वांध कै वाट[४] की बिन जोषै मन लेत॥३३८॥
कछू सुलोचन नषत[१] मैं लाल सुलोचन आइ।
चितु चोरौ[२] जातै सुचितु बहुरि न सकियतु चाइ[३]॥३३९॥
तिल चुनि लालच लागि कै द्रग षंजन चलि जाइ।
जुलुफ फंदा[१] तै ज्रौ वचै दृग फन्दन परि जाइ॥३४०॥
रिस रस[१] दधि सक्कर[२] जहां मधु मधुरी मुसिक्यांन।
घृत सनेह छवि पय पियौ[३] दृग पंचामृत पांन[४]॥३४१॥
गढ़ि गढ़ि जो छबि के छला पल मैं करै[१] तयार।
ये कौनै[२] पहिराइयै[३] तुव दृग मीत सुनार॥३४२॥

---

३३५. (१) लीला द।
३३६. (१) चित्र भा।
३३७. (१) उननैं लियौ भा।
३३८. (१) यौं परि प्र, व्यौपारी द। (२) नितही प्र। (३) हेत प्र। (४) यांरु प्र, पाउ द।
३३९. (१) नषन भा। (२) चित्र चेरौ भा। (३) पाइ भा।
३४०. (१) फंदन प्र।
३४१. (१) रिसरसि प्र। (२) सकर प्र, सककर द। (३) पियें प्र, करै भा। (४) सांन प्र, द।
३४२. (१) करै प्र। (२) कौने प्र (३) परिहराइ है भा।

नैंन लगर[1] घूँघट षुलहि[2] पवन षोल[3] जब लैंत[4]।
नेही मन किरवान कर[5] झपट सितूंना[6] देत।।३४३।।

दीन्हौं[1] नेहिन कौं अमी मद असनेहिन[2] प्याइ।
हियौ समुद[3] मनमथ मथौ तामै तै दृग ल्याइ[4] ।।३४४।।

फोरत बान सुढाल[1] कौ[2] तनिक लगायै मैन।
अचरज[3] कहि बेधे जु मनु मैंन भरै सर नैंन[4]।।३४५।।

अरी[1] करैजै नैंन तुव सरसि करैजै वार।
अजहूं[2] सुरझत नाहिनै[3] सुर हित[4] करत पुकार।।३४६।।

सोहत हैं इहि[1] भांति जे[2] भावंता के नैंन।
तारे मधुकर कमल दल वैठै जनु रस[3] लैंन।।३४७।।

प्रकटत अंजन लीक छबि अहि सावक मनु[1] जात।
अलक भुवंगम देषि जग[2] सकुच सरोज समात[3]।।३४८।।

---

३४३. (१) नैननुगर प्र, नैनै लगइ द। (२) कलह प्र कुलह भा। (३) घोल प्र। (४) देत प्र। (५) मन की षांन कनि प्र। (६) सतूंना भा।

३४४. (१) दीनौ प्र। (२) असनेहिन प्र। (३) समद भा। (४) लाइ प्र, द।

३४५. (१) बानै ढाल कै भा। (२) कै भा। (३) कहवे पें जु प्र, (४) सरसैन द

३४६. (१) अरे प्र। (२) अजहू प्र। (३) नाहित भा। (४) सुरहत द।

३४७. (१) इह द, यह भा। (२) भांत जो प्र, भात जे द। (३) जन रेस प्र।

३४८. (१) मति भा (२) जनु भा। (३) रहै जस मान भा।

सोरठा

होइ कौंन तन पीर[1] कहु धौ[2] तू मोसौ यहै।
नैंन अन्यारे तीर, जो घालै वह[3] जिहि लगै॥३४९॥
मेरे नैनन[1] जाइ, मिलि हरि कीनी मिलहरी।
मन धन दियौ बताइ, रसनिधि मोहन चोरकौ॥३५०॥

दोहा

क्यौं न रसीले[1] हौंइ दृग जे पोषे[2] हित लाल[3]।
षाटे आम मिठात हैं भुस मैं दीनै पाल॥३५१॥
पल अंजुल जोरें[1] कहैं दोहा सौं बिच सैंन।
मनमौंहन सौं रुचिर छबि रुचि सौं मांगत नैंन॥३५२॥
दरसनि[1] लव[2] बाढ़ी हती सो तुम द्रगनि न दीन।
अरुनन फिरियादी जुहै बसन भगौहैं कीन॥३५३॥
तेरी यह अदभुत कथा कही जाइ नहि बैंन।
चित चीतिनि कौं[1] तैं कियै अरी सेर मृग नैंन॥३५४॥
तुव द्रग नागर सुघर जौ याहि[1] न लेतैं मौल।
को लै सकतौ लाल मन रसनिधि अधिक अमोल॥३५५॥

---

३४९. (१) धीर भा। (२) कह्यौ प्र, (३) यह प्र।
३५०. (१) नैन प्र।
३५१. (१) रसिक लै प्र। (२) षोये प्र। (३) पाल प्र, द।
३५२. (१) अंजुल वै प्र।
३५३. (१) दरसति भा। (२) जब भा।
३५४. (१) पै द।
३५५. (१) वाहि भा।

जान जान[१] कीनै जु तैं नैंहिनि ऊपर वार।
भऐ[२] जु नैंन[३] कटाछ के षंजर पंजर फार[४]॥३५६॥
यातैं पल पलना लगत हैरत[१] आनंदकंद।
पियत मधुर छबि दृगन[२] के जात वोट[३] ह्वै बंद॥३५७॥
एरी[१] ए वलि राधिका तोसम[२] दूजी नाहिं।
राषौ[३] मदन मनोहरैं जड़[४] दृगतारिन[५] माहिं॥३५८॥
अनियारे दृग बांनि की रसनिधि वाकी चोट।
रुकत न रोकै कैसहू धीरज ढालिन[१] वोट[२]॥३५९॥
इत[१] छोटे बित नैंन[२] ये करत बड़े से[३] काम।
तिल तारिन बिच लै धरे मोहन मूरति स्याम॥३६०॥
हीरा बिन हीरा कनी कहूं न बेधी जाइ[१]।
मो हीरा तुव दृग कमल सहजैं बेधत आइ[२]॥३६१॥
लाल तिहारै दृगन कौं मैं गुनमह कह कींन।
झतना सी छतियां[१] करी छेदि सघन वरुनींन॥३६२॥
वरजि[१] राष वटपार जे[२] अरी आपनै नैंन।
मन मथिवे कौ मनमथहि देत चलाई[३] सैंन॥३६३॥

---

३५६. (१) जानि जानि प्र। (२) भरे भा। (३) सुनैंन द। (४) पार प्र, कर द।

३५७. (१) हैरत प्र। (२) द्रगनि प्र। (३) ओठ भा।

३५८. (१) येरी ए प्र, येरी ये द। (२) तो सौं भा। (३) राष्यौ भा। (४) जढ भा। (५) तारिन प्र, द।

३५९. (१) ढाल प्र। (२) ओट भा।

३६०. (१) हिहि प्र, यह भा। (२) मैन प्र। (३) सै प्र।

३६१ (१) जाय भा। (२) आय भा।

३६२. (१) छतियां छतनासी प्र।

३६३. (१) बरज प्र। २. ये भा। ३. चबाई भा, प्र।

हीरा हाथ[१] न आवही बिना दियै[२] कछु माल।
मो हीरा बिन गथि लियौ नैंन जौहरिन लाल॥३६४॥
मदन बारिगर[१] तुव दृगन[२] धरी बीर[३] जौ मित्त।
जाके[४] हैरत[५] जात है कटि कटि[६] नेही चित्त॥३६५॥
औरे[१] चोर चित लेत हैं दृग ओझिल है चोर।
मन धनि[२] चोरत भांवतो नैंन नैंन सौं[३] जोर॥३६६॥
राषे हैं सुर[१] मदन ये ऐसेही[२] चरबाक[३]।
पैनी[४] भौंहन कौ दई अब नैंननि कौ बांक॥३६७॥
रसनिधि आवत देषि[१] कै मनमोहन महबूब।
उमड़ी डिठ[२] बरुनीन की दृगन बधाई दूब॥३६८॥
पीवत पीवत रूपरस बढ़त रहै हित प्यास।
दई दई नेही दृगन कछू अनौषी प्यास॥३६९॥
बात चलत जाकी करै असुराई नेहीन।
है कछु अदभुत मदभरे[१] तेरे दृगन प्रवीन॥३७०॥
राष्यौ[१] है मन लाल[२] के दृग द्वारै दरबान।
बिना नेह परवानगी सुचित न पावै जान॥३७१॥
रूप नगर मैं फिरत हौ छबि सौदा कौ लेत[१]।
रोक्यौ[२] नैंन जगातियन मन जगात के हेत॥३७२॥

---

३६४. (१) हाग भा। (२) दिये प्र।
३६५. (१) बारगर प्र। (२) द्रगौ प्र। (३) धरि बाढ़ भा। (४) जाके प्र। (५) हेरत भा। (६) कट कट भा।
६६६. (१) ओर प्र। (२) धन प्र (३) सौ प्र।
३६७. (१) कर प्र। (२) वैसैही प्र। (३) चरवांक प्र। (४) वैनी प्र।
३६८. (१) देष प्र। (२) उमग डीठ प्र।
३७०. (१) भरौ भा।
३७१. (१) राषौं भ। (२) लाज भा।
३७२. (१) देत प्र। (२) रोके भा।

नेही नैंन निबाज कौ समै[1] न बीतन देत।
तू[2] भौंहन महराब बिच दौरकात[3] पठि देत।।३७३।।
रेसम डोरे लाल लै बरुनी सुइयन[1] अँन।
नेही उर दरजी[2] सियै दरजी प्रीतम नन।।३७४।।
पुरजा पुरजा करत है प्रथम करेजा थांन।
फिरि बरुनी सुइयन[1] सियै[2] दरजी नैंन सुजांन।।३७५।।
श्रमित[1] भयौ तौ पौढियत[2] बिच पल[3] पलकनि आइ।
रुचिर भात सौ भांवते नैन पलोटे पाइ।।३७६।।
हेरत जित जे[1] सहजही तुव दृग सुभट[2] अमोर।
मुर मुर जाती नैंन की सैना जुरी करोर।।३७७।।
असनेहिन हित नगर मैं सकत न कोऊ छूट[1]।
चतुर जगाती लाल दृग लेत सनेहन लूट।।३७८।।
जे बेजा[1] बिजया पियै तिनपै आवत हैफ।
मनमौंहन द्रग अमल मैं क्या थोरी है कैफ।।३७९।।
वर जे बुध वल नार है षंजन नैंन लुभाइ[1]।
अटके तिल चुन लालचन जुलफ फंदा मैं जाइ।।३८०।।

---

३७३. (१) समै भा। (२) तुव प्र। (३) दोर कावपट प्र, दौरा कावड भा।

३७४. (१) स्वेया प्र। (२) दरजिन प्र।

३७५. (१) स्वइयन प्र, सूजन भा। २. सिंये प्र।

३७६. (१) श्रावत प्र। ३. तो पो उतू भा। (३) बिच बिच प्र।

३७७. (१) ये भा। (२) सुभरु प्र।

३७८. (१) फूट प्र।

३७९. (१) बोजा भा।

३८०. (१) भुलाइ भा।

वहुधा बैरी गीत के सही गोतियन जान।
बड़ै नैंन षटकन लगे नैन निही[१] मैं आंन।।३८१।।
नेहिन[१] सुनमुष जुरतहीं जहिं[२] मन की गिरवान।
वाहृत है रनवाउरे तेरे दृग किरवान।।३८२।।
प्रीतम नैंन कजाक तुव छवि मन[१] मांह मिलाइ[२]।
हित गथ जापै देषहीं ताही लूटत धाइ[३]।।३८३।।
मौहन जौं दृग जिहि मतिन उझकाई दै जाइ।
ज्यौं थोरौ[२] पथ वैद है देत रोगियै[३] आइ।।३८४।।
जदपि बदन सर जगत मैं छवि रसभरै गंभीर।
दृग चातक[१] घनस्यांम तन तलफत[२] झांकत तीर।।३८५।।
चरच[१] जात ज्यौ[२] लषतही नैंननि की गति नैंन।
यह पहिचानत रसिकनिध चोर चोर की सैंन।।३८६।।
मिल विसवास बढ़ाइ[१] कै चित्त वित लेत चुराइ।
राषत नैन कजाक तुव छबि[२] बन माह दुराइ।।३८७।।
भरी अमित छवि तुव[१] दृगन सव जग बोलत साष।
याहू नान्है सै[२] मनौ बिच दृग कोइन राष।।३८८।।

---

३८१. (१) नैन ही मे भा।
३८२. (१) नेही भा। (२) ताहि भा।
३८३. (१) वन प्र। (२) चलाइ प्र। (३) जाइ भा।
३८४. (१) यौं प्र। (२) थोरे प्र। (३) रोगिअै प्र।
३८५. (१) जाचक प्र। (२) विन तदपन प्र।
३८६. (१) चरन प्र। (२) जौ प्र।
३८७. (१) बड़ाइ भा। (२) छव प्र।
३८८. (१) तो भा। (२) पहुना ह्वै प्र।

जब से तैं पैने[1] किये दृग छबि सान चढ़ाइ।
तवतैं मन दैनौ कहैं[2] नेहिन रीझ सिहाइ॥३८९॥
हेरौ वोर[1] हमारियै प्रीतम नैंन विसाल।
बड़े होत जे[2] करत हैं छोटनि कौ प्रतिपाल॥३९०॥
अरुन अन्यारे जै भरे[1] अतिही मदन मजेज।
देषे तुव दृग बावरे[2] रव सुकुरानौ भेज़॥३९१॥
प्रीतम आवत जानिकै[1] भिस्ती नैंन सिताव।
हित मग मैं कर देत हैं अंसुवन कौ छिरकाव॥३९२॥
नटवर तेरै दृगन कौ[1] कौन सकत है पाइ।
पल प्यालिन[2] मैं दृग[3] बटा देषत धरै[4] छिपाइ॥३९३॥
बधिक कसाइन तैं बचौ जे[1] वेदरदी ऐंन।
विधि भरि दीनी तै सबै[2] बिच महबूबा नैन॥३९४॥
रिझकवार[1] दृग देषि कै मनमौहन की वोर[2]।
भौंहन मोरत[3] रीझि जनु डारत है त्रन तोर[4]॥३९५॥
चिबुक कूप मधि डोल तिलु डारि[1] अलक की डोरि।
दृग भिस्ती कर कर पलक छबि जल भरत झकोर॥३९६॥

---

३८९. (१) तेयैंने प्र। (२) कियौ प्र।
३९०. (१) ओर भा। (२) ते भा।
३९१. (१) नैन जे प्र। २. बारवे भा।
३९२. (१) जानकै प्र।
३९३. (१) के भा। (२) प्यालन भा। (३) मन प्र (४) परौं भा।
३९४. (१) ये भा। (२) तैसही भा।
३९५. (१) रिझवारे प्र। (२) ओर भा। (३) मारत भा। (४) टोर भा।
३९६. (१) डारत प्र।

हरे सुछबि तृन चरत[1] ये मन मृग रूप कछार।
सिंघ[2] रूप तुव दृग लषौ गिरत[3] सुषाइ पछार॥३९७॥
पथिक आपनै पथ लगौ इहां रहौ न पुसाइ।
रसनिध नैन[1] सराइ मैं बसौ[2] भावतौ[3] आइ॥३९८॥
छवि वन में दौरन लगे जव तै तुव दृग मेउ।
तव तैं कढ़ै सनेहिया मन धन लेत कछेउ[1]॥३९९॥
प्रीत पांन नवरस कथा चूना नेह लगाइ।
प्रीतम मुष दृग दीठि[1] कर बीरी[2] देत वनांइ॥४००॥
याही तै जानी गई नैननि[1] मेरे है[2] न।
आपु[3] रीझ मन कौ लगै बेदरदिन कर दैन॥४०१॥
प्रीतम वदन सुदेस पै साजै[1] सैना सैंन।
चहत[2] पेस रूप सदन[3] रसनिधि लोभी नैन॥४०२॥
हम रीझे मन भावते लषि तुव सुन्दर गात।
डीठि[1] हाथु[2] धर लाल सिर नैना सौहैं षात॥४०३॥
डोठि डोरि नैना रई[1] छिरक रूप रस तोइ।
मथि[2] मो घट प्रीतम लियौ[3] मन नवनीत[4] बिलोइ॥४०४॥

---

३९७. (१) चुरत प्र। (२) सिंह प्र, भा (३) गिरन प्र।
३९८. (१) रूप भा। (२) बसैं प्र (३) भावत प्र
३९९. (१) छन लैकै छेव भा।
४००. (१) डीठि प्र, डीठ भा। (२) बीरा भा।
४०१. (१) नैनन द, नैना भा। (२) मैं नै प्र । (३) आप प्र।
४०२. (१) साजी भा। (२) चहत भा। (३) कस रूप धन प्र।
४०३. (१) दीठ भा। २. हाथ प्र, रूप भा।
४०४. (१) नैना रही प्र, नै भोर दिय भा। (२) मथ प्र। (३) लयौ द। (४) नवीन प्र।

मनहूं की गति[१] करत है ये पल पल मै पंग।
करत षुरी पल मै अमित[२] तेरे नैनं तुरंग॥४०५॥
तब तै पल[१] कर और तन पलक पसारत हैं न।
जब तै छबि धन मीत दै किये अजाची नैन॥४०६॥
तुव दृग बाजन देषि कै तुरत उठत हैं कांपि।
मन पंछिन को लेत जे पल चुंगल[१] सौं चांपि ॥४०७॥
रूप लालचिन नै दई सुधि बुधि सबै बिसार।
दरस भीष के काज द्रग पल कर रहे पसार॥४०८॥
असुवां होंइ न डीठ डर[१] ये अखियां[२] रिझवार।
पल अंजुरिन जल मीत पै पानी पीवत[३] बार॥४०९॥
नैन कबूतर मीत के गिरहबाज सम[१] आइ[२]।
पल मै गिरहै लै मनहि[३] नेह गिरह दै जाइ[४]॥४१०॥
तेगा दृग[१] ये मीत के पानि-पवार सुघाट।
अंजन बाढ़[२] दियै बिना करत चौगुनौ काट॥४११॥
मीत नैन भौं हंसि लए[१] बैठत नहि ह्वै[२] सील।
तन बीघा पै करत हैं ये मन की तहसील॥४१२॥

---

४०५. (१) गत प्र। (२) अमी द।

४०६. (१) बल द।

४०७. (१) चंगुल भा।

४०९. (१) उर भा। (२) असुवा प्र। (३) पिवती प्र।

४१०. (१) से भा। (२) आहि प्र, द। (३) मनहु भा। (४) जाहि द।

४११. (१) ये द्रग भा। (२) वाड प्र, बाढ़ै द। (३) चौगुनी भा।

४१२. (१) मौसिल प्र, मह सिल भा। (२) ह्वै द।

मद मौकल जब षुलत है तेरे दृग गजराज।
आइ तमासौ[1] जुरत है नेही नैन[2] समाज॥४१३॥
रुकत न षंजन नैन ये जतन कीजियतु कोर।
प्रीतम मन तन[1] चलत है पल पिंजरन कौं[2] तोर॥४१४॥
जब छूटत पल थान तैं मतवारे[1] गज नैंन।
नेहिन दिल कौं[2] चलत हैं दैंकै[3] ठोकर सैंन॥४१५॥
दृग षंजन औचक फंसे बीच सुछवि[1] के जाल।
भावै इनकौं जिवहु कर[2] भावै इनको पाल॥४१६॥
अरे मोत तै आपनै द्रग साथियन फुरमाइ[1]।
काढ़ै[2] गांसी[3] बिरह की पल संसिन सौ आइ॥४१७॥
कतराते[1] लषि गुरूजनन करि[2] रुष[3] रूषै नैन।
हितराते न दलाल सौं बतरातै बिच सैन[4]॥४१८॥
तरक चलत हैं नैन ये औरन कौ मुष हेर।
मनि कै[1] कर करदृगनि कौं देत[2] मोत तन[3] फेर॥४१९॥

---

४१३. (१) तमासै प्र। (२) नैंहीं मैंन समाज प्र।

४१४. (१) वनत न प्र। (२) तै द।

४१५. (१) मतवाके प्र, द। (२) दल कौ भा। (३) दैंकर भा।

४१६. (१) जुलफि भा। (२) कर जिभै भा।

४१७. (१) फरमाइ प्र। (२) काटै भा। (३) फासी प्र।

४१८. (१) कर राते भा। (२) करु प्र। (३) खुषु प्र। (४) मेन प्र।

४१९. (१) मन के भा। (२) कै भा। (३) मन भा।

मचल जात हैं नैन ये[१] समुझाये समुझैं न।
बदन चंद के लषन कौ सिसु ज्यौं विरझतु नैन।।४२०।।
आये तेरे दृगन पै जे महूम[१] अषत्यार।
किते न मनसूबा गये[२] इनसौ जुरतै[३] हार।४२१।
भौंह कुटिल बरुनी कुटिल नैना कुटिल दिषात[१]।
वेधन कौं नेही हियौ क्यौं सूधौ[२] ह्वै जात।।४२२।।
मन धन लै दृग जौहरी चले जात उहि[१] बाट।
छवि मुकता[२] मुकते मिलै जिहि[३] सूरत[४] की हाट।।४२३।।
कसक वनी तव तैं रहै बंधत न ऊबर षोट।
दृग अनियारिनि की लगी जब तै हिय मै चोट।।४२४।।
नैन बांन जिहि उर छिदै कसकत लेत न सांस।
मीत सु[१] इनकी[२] है दवा[३] मिलै न बैदन पास।।४२५।।
निसबासर लोचत[१] रहत अवलोकिन[२] अभिराम।
यातै पायौ रसिकनिधि इननै लोचन नाम।।४२६।।
लौ इनकी लागी रहै निज मनमोहन रूप।
तातैं इन रसनिधि लयौ[१] लोइन नाम अनूप।।४२७।।

४२०, (१) पलक मैं प्र।

४२१. (१) जमहूंम प्र। (२) गवै प्र। (३) जुरते प्र, जुरकै भा।

४२२. (१) नैन कुटिल भौंह कुटिल बरूनी कुटिल दिषात प्र (२) सुपेस प्र, सूधे भा।

४२३. (१) इहि प्र, वह भा। (२) मुकता द। (३) जहि द। (४) सूरत द।

४२४. १. ऊषर प्र, द।

४२५. (१) भीतहि भा। (२) उनकी भा। (३) दसा प्र।

४२६. (१) लोचन प्र। (२) अपनौ मन भा।

४२७. (१) लह्यौ प्र।

जो कछु उपजत आइ उर सो वे आंषै देत।
रसनिधि आंषैं नाम इन पायौ अरथ समेत॥४२८॥
और रसनि लै जानहीं रसना हूं अभिरांम।
चाषत जे ये[1] रूपरस यातै है चष नांम॥४२९॥
भरभराइ देषै बिना देषे पल न अघाय।
रसनिध नेही नैन ये[1] क्यौं समुझाये जाय॥४३०॥
नैंन किलकिला मीत के ऐसौं कछू प्रवीन।
हिय समुद्र[1] तै लेत हैं वीन तुरत मन[2] मीन॥४३१॥
जिन[1] नैननि कौ है सही मोहन रूप अहार।
तिनकौ वेद बतावही लंघन कौ उपचार॥४३२॥
घाइल दिल की जौ कहूं उन्हें व्यापती[1] पीर।
प्रीतम वधिक न घालतें द्रग अनियारे तीर॥४३३॥
पल पल्लौ भरि[1] इन लियौ तेरो नाज उठाइ।
नैन हमालन[1] दै अरे दरस मजूरी आइ॥४३४॥
सुरंग बछेरे नैंन तुव जदपि सुहैं नाकन्द[1]।
मन सौदागर नै कियो बहुत न हेर पसंद[1]॥४३५॥
गुरुजन बाहक जदपि पुन घालत[1] चाबुक[2] सैन।
कढ़ै बढ़ न कढ़ै अरे[2] रूप अवन यह[3] नैन॥४३६॥

---

४२९. (१) जे ई प्र।
४३०. (१) वे प्र।
४३१. (१) समझै प्र। (२) मृग प्र।
४३२. (१) इन प्र।
४३३. (१) उहू पापकी प्र।
४३४. (१) पर प्र ।
४३५. (१) कह्यो यही है बहुतक परसंद भा।
४३६. (१) घालक भा। (२) तऊ भा। (३) ह्वै भा।

होती जौपै बचत कहुं धीरज ढालन ओट।
चतुरन हिये न लगत है[२] नैन बांन की चोट।।४३७।।
हितकर रसनिधि हेरिबौ[१] मुसकैबौ अनषान।
मीत दृगन लषि लेत हैं नेहिन के दृग जान।।४३८।।
रसनिधि दृग कामारथी छवि बैनी जल ल्याइ।
बिनै[१] सहित मन संभु कौ नितही देत चढ़ाइ।।४३९।।
छबि मिसुरी जदब तैं दई तुव दृग बाजन मैन।
मन कुलंग कौ धरत है ये बिच चंगुल सैन।।४४०।।
जिहि[१] बारौ[२] नंदलाल पैं द्रग आये मन बार।
पलहू भरि पावै नहीं वह मूरति उर[३] वार।।४४१।।
षोर[१] आपनै दृगन की[२] धरिये किहि सिर ईठ।
ससि एकै[३] ह्वै[४] सूझ ही यहै बिवरजै[५] दीठ।।४४२।।
चुभती जौ नहिं[१] दृग अनी त्रिभुवनपतिउर आइ।
दैतौ जावक रुचिर यह[३] क्यौं ब्रजबालन पाइ।।४४३।।
रे तबीब यह बात तैं अपने ग्रंथन हेर।
दृग गांसी जिहि उर गड़ी सो[१] कहुं निकसी फेर।।४४४।।

---

४३७. (१) न बोंट प्र। (२) लागती भा।
४३८. (१) हेरकै प्र।
४३९. (१) बिनय प्र
४४१. (१) जिन प्र। (२) वारे प्र।
(३) वर भा।
४४२. (१) षोर प्र। (२) कौं प्र।
(३) यैकै प्र। (४) द्वै सू।
(५) विपरजै प्र।
४४३. (१) नहिं जौ प्र। (२) ऊचिर वह प्र।
४४४. (१) विच उरी ते प्र।

साहु कहावत फिरत है चित सरसाये चाव[1]।
तेरे नैंन दिवालिया मन लै देँहिं न पाव[2]॥४४५॥
हैरत हो जाकै छकै पलहु उझकि[1] सकै न।
मन गहनै धरि मीत पै छवि मद पीवत नैंन॥४४६॥
प्रीत चलावै[1] जित इन्हैं[2] तितैं धरैं ये[3] गैन।
नेह मनोरथ रथ रहैं ये अबलख हय[4] नैंन॥४४७॥
उपजत जीवनमूर जहं[1] मीत दृगन मैं आइ।
तिनके हेरतु तुरत ही अतन सतन ह्वै जाइ॥४४८॥
प्रेम नगर मैं दृग बया[1] नोखै प्रगटे आइ।
द्वै मन कौं कर एक मन भाउ[2] दियौ ठहराइ॥४४९॥
अदभुत रचना विधि रची यामैं नहीं बिवाद।
"विना जीभ[1] के लेत दृग रूप सलौनौ[2] स्वाद॥४५०॥
ह्वै कै लोभी लोभवस छबि मुकताहल लैन।
कूदत रूप समुद्र में अकधक करत न नैंन॥४५१॥

सोरठा

जोती डोरे लाल, पलकन के कर कै पला।
तारे बाट बिसाल, जोखत हरि दृग[1] रूपधन॥४५२॥

---

४४५. (१) सरचावै चाउ प्र। (२) आउ प्र।
४४६. (१) उछल प्र।
४४७. (१) चलावत प्र। (२) रहैं प्र। (३) मैंन प्र।
(४) यह प्र।
४४८. (१) जन प्र।
४४९. (१) विया प्र। (२) भाव प्र।
४५०. (१) जीभ प्र। (२) सलौन प्र।
४५२. (१) द्रग हरि प्र।
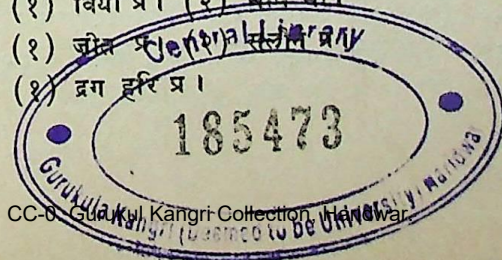
दोहा

मीत रूप दरगाह के नैन मुजाविर आइ।
मन सिरनीजो[१] ह्वा चढ़ैं बीचहि जात उड़ाइ॥४५३॥
रूप सिंध मैं नैंन से हौते जौन जिहाज।
तौ कैसै निपट लौ तौ मन यह नेह समाज॥४५४॥
जौ भावै सो कर[१] लला इन्है[२] बांध वा[३] छोर।
है तुव सुबरन रूपके ये दृग मोरे[४] चोर॥४५५॥
रूप नगर मैं बसत है नगरसेठ तुव नैंन।
मन जामिन लै नेहियन लगे पुजी छबि दैन॥४५६॥
तारिनही के बाट लै घर बिच पलक पलान।
तौलत है दृग लोभिया मोहनरूप कलांन।४५७॥
पहिराये नृप रूप तुव जब तैं नैंन दिवांन।
तबतै लै नेहीन के मन न लगै कमांन॥४५८॥
मौहनमुष की जोति दृग देषत है दिन रैन।
रसनिधि निरगुन वात कौ जे[१] परषतहू[२] हैं[३] न॥४५९॥
मौहनरूप दरियाउ[१] की जदपि सुथाह लहै न।
छबि लालच लगि रहत है बैठि किनारे नैंन॥४६०॥
नैंन कच कंधे[१] धौरियनि[२] अरे नहीं धुरि लाइ।
कैसै मन कौं बोझुवै धुरि लौं सकै चलाइ॥४६१॥

---

४५५. (१) कहु प्र। (२) इहैं प्र। (३) या भा।
(४) मेरे भा।
४५९. (१) ऐ द। (२) परषत भा।
(३) ऐ द।
४६०. (१) छबि दरियाव भा, रूप दरयाव द।
४६१. (१) नैन कवजक ये प्र, कच कधे क। (२) धौरियान द।

दृग नौकै याही[1] लियै राषी बाढ़[2] धराइ।
नेहिन ही पै[3] लेतु है ते अजमाइसु आइ[4]॥४६२॥
भरत ढरत जलकन पलन[1] पलहू ठहरि सकैं न।
भये कौंन के नेह सौं तेरे चिकनै[2] नैंन॥४६३॥
रूप महावत नैंन गज मैन सुआइसु पाइ[1]।
नेही मन हय[2] वोरही[3] देत झुकाइ झुकाइ॥४६४॥
वाकौ सिरतौ गाठि कौ चितवित चोरै लेइ[1]।
नेही दुरवल दृगन कौं दरस न काहे देइ[2]॥४६५॥
यौं छवि पावत हैं लषौ अंजन आंजे नैंन।
सरस बाढ़[1] सैफिनि[2] धरी ज्यौं[3] सिकलीगर मैंन॥४६६॥
लाल रूप के अमृत[1] फल दृग द्रुम लागत आइ।
याही तैं विधिनै दई बरुनी बार बनाइ॥४६७॥
पीवतहू[1] न अघात है छबिरस प्यासै नैन।
पल वौकौ[2] बाधे रहैं नाहीं नैकु कहैं न॥४६८॥
घाली[1] नैन कटारिया जेतै सरस[2] सुपान।
कसकत ये[3] उर मैं रहै कहत न बनै जुबान॥४६९॥

---

४६२. (१) थाही प्र, जाही द। (२) वाड प्र। (३) ये प्र। (४) अमाइसा पाइ प्र।

४६३. (१) जल करन द (२) चिततै प्र।

४६४. (१) आइ प्र। (२) यह प्र। (३) जोरही भा।

४६५. (१) लेत भा। (२) देत भा।

४६६. (१) बाड प्र। (२) सौफिन द। (३) जनु भा।

४६७. (१) अमर द।

४६८. (१) ही प्र द। (२) वोके प्र, वाकौ भा।

४६९. (१) घालै भा। (२) सुरस प्र। (३) जे प्र।

रूप बधिक दृग कर मुलहि[१] रोपैं[२] लै छबि जाल।
नेही षंजन नैन ये बिधए[३] हेरत हाल।।४७०।।

रिझकवार दृग देषि कै मनमौहन की ओर।
मौहन मूरत[१] रीझ जनु डारत है त्रनतोर[२]।।४७१।।

रूप सरोवर माहि तुव फूले नैंन सरोज।
ता हित अलि नेही तहां आवत दौरे रोज।।४७२।।

दीठि वर्णन

या ब्रज मै हौं बसत ही हेली आपु[१] सुतंत्र।
हेरन मैं कछु पढ़ि दयौ मौहन मौहन मंत्र।।४७३।।

आले घाइनि आइ भर हेर निहरुवा नीम।
मृदु[१] मुसिक्यांन सो[२] ओषदी[३] जो नहि देउ हकीम।।४७४।।

अरे बैठ रहु जाइ[१] घर कित[२] भटकत बेकाज।
चितवन टौंना पै अबै[३] हौना नहीं इलाज।।४७५।।

रसनिधि आवत देषि[१] कै मनमौहन महबूब।
उमड़ि[२] दीठ[३] बरुनीन की दृगन बधाई दूब।।४७६।।

---

४७०. (१) मुरह प्र, मलहि भा। (२) रौयौ प्र। (३) विधऐ द।

४७१. (१) मोरत भा। (२) न निहोर भा।

४७३. (१) आइ भा।

४७४. (१) द्रग प्र। (२) सु प्र। (३) वोसदी द।

४७५. (१) जाहु भा। (२) कत भा। (३) ये ये अबै प्र, कौ कबौ भा।

४७६. (१) देष द। (२) उमग भा। (३) डीठ भा।

चतुर चितेरे तुव सबी[1] लिखत न हियै डराइ[2]।
कलम[3] छुवत कर आंगुरी कटी कटाछन जाइ॥४७७॥
नैक नजर जाके[1] लषै जौ कोउ होत[2] निहाल।
तौ यामैं तुव गांठि कौ कहा जातु है लाल॥४७८॥
औरनि हू[1] तन[2] दीठि जह लषि आवत कर गौर।
रसनिधि अपनै[3] मीत की वह चितवन[4] कछु और॥४७९॥

बरूनी वर्णन

इहि[1] उर[2] दृग नहि लषि सकै सूधे मौहन और।
बदन कमल मै गड़हिंगी बरुनी अनी कठोर॥४८०॥
करि उपाउ बहुतौ थके काढ़ै कढ़ती[1] नाहिं।
तुव बरुनी[2] के जे फया[3] पहिरत ही चुभि जाहिं[4]॥४८१॥

भौंह वर्णन

उपमा भौंहनि वह[1] दई लहै न येते साज।
टेढ़ी पैनी[2] स्याम अति जैसौ नाषुन बाज॥४८२॥

---

४७७. (१) सिबी प्र। (२) हिय ठहराइ भा।
(३) कमल प्र।
४७८. (१) नजरिया के भा। (२) होइ भा।
४७९. (१) कहु भा। (२) हंतत प्र, मन द। (३) मोंह प्र।
(४) हेरन भा।
४८०. (१) यह भा। (२) डर प्र।
४८१. (१) कढ़ते भा। (२) रूप बदन भा। (३) पला भा, लया द। (४) जाइं प्र।
४८२. (१) जौ भा। (२) येनी प्र।

मेरे मन कौ बंध[1] दये जब तैं इनैं[2] लगाइ।
फिरै न भौंह कमान तुव[3] सुरुष रही[4] ठहराइ।।४८३।।

श्रवण वर्णन

श्रवत रहत मन सौं[1] सदा मौहन गुन अभिराम।
तातै पायौ रसिकनिधि श्रवन सुहायौ नाम।।४८४।।

केश वर्णन

मीत जु मनुवा[1] बँधन तैं कौन सकै अब छोर।
बांधि लयौ तैं वह अरैं गिरह जुलुफ के छोर[2]।।४८५।।
इहि[1] बिधुबदनी[2] के लषैं खुले छबीले बार।
बस्यौ[3] मनौं तम[4] आइ कैं ससिमुख के पिछवार।।४८६।।

उरोज वर्णन

पुरइन बिच कंचुक हरी[1] ता बिच कली[2] उरोज।
गुंजत अलि मनु जाइ तिहं[3] उर सरसाइ सरोज[4]।।४८७।।

---

४८३. (१) बत्र भा। (२) इन्है भा। (३) तू भा। (४) सुरष रही द, अरबरही भा।

४८४. (१) कौ भा।

४८५. (१) मीता मनवा भा। (२) की डोर भा।

४८६. (१) इह द, वह भा। (२) विधि बैंनी प्र, द। (३) बसौ प्र। (४) तिम द।

४८७. (१) अरी भा। (२) लाल प्र। (३) कै प्र। (४) मनोज प्र, द।

कटि वर्णन

नेही मनु[१] कटि जात लषि प्रीतम कटि अभिराम।
करि करि ऐसौ काट इहि[२] पायौ है कटि नाम॥४८८॥

मन वर्णन

मन[१] गयंद छवि मद छके[२] तोर जंजीरन जात।
हित के झीनै तार सौं सहिजहि बांधे जात[३]॥४८९॥
जोरत है मन जतन करि बहुतक धीरज घेरि[१]।
विथुर[२] जात है तुरतहीं मीत सैन कौं[३] हेरि॥४९०॥
दृग तौ आवत बांधि कैं निकट वदन अभिराम।
डीठ वरत पै धाइबौ[१] मनु नट ही को काम[२]॥४९१॥
जो कहियै तौ सांचु करि को मानैं यह बात।
मन के पग छाले परे पिय पै आवत जात॥४९२॥
मन बिरलै[१] भव सिंधु तै बहुत[२] लगायै[३] घाट।
मनही के घालै गये बहि बर[४] बारहवाट[५]॥४९३॥
मनु निहिचल मनु चंचला मनु सुजान मनु कूर।
मनु बैरी मनु सज्जना मनु कायर मनु सूर॥४९४॥

---

४८८. (१) नाही द। (२) यह भा।
४८९. (१) म...प्र। (२) मद सौ छकै प्र। (३) सहजै ही बंधि जात भा।
४९०. (१) बेर प्र, षेरि द। (२) विषरि द। (३) सु उनकौ प्र।
४९१. (१) धाइकै भा। (२) बट नट ही काम भा।
४९३. (१) बिरले द, बदले भा। (२) बहत द। (३) लगाअै द। (४) वह उर द। (५) बाहरै घाट द।

मनु मैला मनु निरमला मनु दाता मनु सूम।
मनु ग्यानी, अग्यान मनु मनहि मचाई धूंम॥४९५॥
मनु गज मद मौकल[1] भयौ रहत न अपनै हाथ।
लगौ[2] रहत पर मोद[3] को पीलवांन चितु साथ॥४९६॥
उड़ौ[1] फिरत जो तूल सम जहां तहां बेकाम[2]।
ऐसे हरुवे[2] कौ धरौ[3] कहा[4] जान मन नाम॥४९७॥
मिहिर[1] नजर सौं भावतै राषि याहि[2] भरि मोद।
अनषनि खनि अनषनि अरे मति मौ मनहि[3] करोद॥४९८॥
को अवराधे जोगु तुव रहु रे मधकर मौनु।
पीतांभर[1] के छोर तैं छोर सकै मनु कौनु॥४९९॥
दृग जिहाज मन जौहरी भरन चलौ[1] छबि षेप।
रूप सिन्धु मै फिरतु है करतु न पल बिच्छेप[2]॥५००॥

छबि वर्णन

तुव छबि सौंहनि सौं अरे जोमन लागतु आइ।
हित अनहित दुहु विधि वही[1] पल पल छीजतु जाइ॥५०१॥

---

४९६. (१) मैंगल द। २. लग्यौ भा। (३) मोह भा
४९७. (१) उधौ द। (२) के......प्र। (३) धरचौ भा। (४) कहा कहा द।
४९८. (१) महिर द। (२) याद भा। (३) मनैहि द।
४९९. (१) पीतांबर भा।
५००. (१) करत न पलाक विछेप प्र।
५०१. (१) बीच ही भा।

जाइ[1] जबहि पनिया भरन मोहन छबि छकि नारि।
रीतै धरि धरि दैहि[2] सिर देति[3] भरिन कौ डारि[4]।।५०२।।
छबि धन दै नंदलाल ये[1] किये अजाचो[2] आइ।
पल कर तव तै और पै[3] दृगन पसारत जाइ।।५०३।।
जब तैं छबि फेरै[1] परौ यह मनु मेरौ जाइ[2]।
तब तैं रसनिधि सांवरौ[3] उझकतु है दृग आइ।।५०४।।
निरष छबीलै लाल कौ मन न रहौ मो हाथ।
बंधौ गयौ ता बस भयौ[1] छबि दाबरि[2] के साथ।।५०५।।
जाही बनत न[1] मदन नृपु मजिल[2] देत फुरमाइ।
छबि लसकर[3] के होत है तितही[4] डेरा[5] आइ।।५०६।।
पल प्यालिन छबिमद सुभरि[1] प्यावत नैन कलार।
जिय[2] गहनै धरि पियत है रसनिधि मन रिझवार।।५०७।।
तुव छबि बन मै मन पथिक क्यौं हूं निबहत नाहिं।
नैन कजाकिन त बचै[1] चिबुक कूप परि जाहिं।।५०८।।
धनुष पाइ द्वै कौन[1] ये लच्छ लच्छ तन जाइ।
दृगन धनी छबि लच्छि कौ[2] नवै तु[3] उचितै आइ।।५०९।।

---

५०२. (१) जाहि भा। (२) लेइ प्र, लैहि द। (३) देइ प्र, लेत भा। (४) कौठारि प्र, द।

५०३. (१) पैं प्र। (२) अयाची भा। (३) ये प्र।

५०४. (१) फेरैं प्र। (२) आइ भा। (३) सावरें भा।

५०५. (१) बसि भा। (२) छबी दान भा।

५०६. (१) बनेनन प्र। (२) मजल प्र, द। (३) छपलसगर प्र (४) ताही भा। (५) होई डोरा प्र।

५०७. (१) भला प्र। मन भा।

५०८. (१) बचौ प्र।

५०९. (१) कुआ छवि कोटि प्र। (२) लच्छ कौ भा। (३) तै भा।

मठ की[१] मटुकी सीस धरि चलि[२] कछुअकि मुसिक्याइ[३]।
लखि विहि[४] घटकी सुधि गई छवि षटकी[५] दृग आइ ॥५१०॥

बनवारी वारी गई बनवारी पै आजु।
मनु बौरी[१] हर लै गयौ वा मौहन[२] ब्रजराज ॥५११॥

घैरु मथन सुनियतु रहै जहां तहां ब्रज भौंन।
मौहन छवि छवि[१] नागरी सोव नागरी कौंन ॥५१२॥

बाढ़त[१] सुन्दरता अधिक हरिहर[२] अंग अनेक।
कितै कितै हेरै अरी डीठ बिचारी येक ॥५१३॥

करत जतन वलि वहुत सौं नेकहु[१] निकस सकै न।
छवि चहलै मैं जा फँसैं विरह दूबरे नैंन ॥५१४॥

मति[१] चुकाइ[२] देतै सुझै[३] दै चुकाइ छवि दान।
रे नटनागर नन्द के सुन्दर स्याम सुजान ॥५१५॥

रूप नगर मैं वसत है नगर सेठ तुव नैन।
मन जामिन लैं नैंहियनि लगे पुँजी छवि दैन ॥५१६॥

छवि चुन दै दृग षंजननि कै दे रे मुकलाइ[१]।
बंधै प्रीतगुन सौं उठै पल पल मै अकुलाइ[२] ॥५१७॥

रसनिधि प्रेम तवीब[१] यह दियौ इलाज बताइ।
छवि अजवाइन लषि दृगन बिरह गिरानी जाइ[२] ॥५१८॥

---

५१०. (१) मटकी भा। (२) बलि प्र। (३) कछुबकि मुसक्याइ भा। (४) वह भा। (५) अटकी भा।

५११. (१) वारी भा (२) मौहन भा प्र

५१२. (१) छक प्र। (२) सोच भा।

५१३. (१) बाढ़ी भा। (२) हरि हरि प्र, हर हरि द।

५१४. (१) नाकहु प्र।

५१५. (१) मनु प्र। (२) कुकाइ द। (३) मुझै प्र।

५१७. (१) मुकल्याई द। (२) अकलाइ भा।

५१८. (१) प्रीतम तब्बै द। (२) ताइ द।

प्रीतम मरजी के भये जबि जुव[1] मरजिया आइ।
छबि मुक्ता उनही लहै रूप समुद मैं जाइ।।५१९।।

दृग रिझवारिन हिय रहै यहै परेखौ येक।
वारिन कौ मनु येक[1] इत उत है अदा अनेक।।५२०।।

जौ छवि मदनेही दृगनि देषत ही चढ़ि जाहि।
जातन[1] सीसा मै भरौ असर करै नहि ताहि[2]।।५२१।।

लसतु आरसिन कौ हरा[1] प्रीतम उर इहि[2] बान।
गरै परौ जनु रीझि छबि ससि धरि कोटि कलांन।।५२२।।

मदन परव[1] कौ पाइकै जुरी[2] रूप की जात।
दृग मन धन कौ दै तहाँ[3] छबि सौदा लै जात।।५२३।।

कोटि भांनु द्रुति दिपत है मौहन छिगुरी छोर।
जातै[1] बरुनी ओटहू[2] दृग हेरत उहि[3] वोर[4]।।५२४।।

लगन वर्णन

नैननि की अरु करनि[1] की तारी तारी दोइ।
मीत पूंछ यह बात हिय जिहि[2] निरधारी होइ।।५२५।।

---

५१९. (१) ज्यो द।
५२०. (१) एक भा।
५२१. (१) जानत प्र। (२) ताइ भा।
५२२. (१) हरे प्र। (२) बरयह भा।
५२३. (१) पर्ब द। (२) जरी भा। (३) देत है भा।
५२४. (१) यातै भा। (२) बोर है प्र। (३) उहि प्र, वह भा। (४) ओर भा।
५२५. (१) किरन प्र (२) तिहि जिहि प्र, तूं जिहि भा।

यह विचारि छबि रस इन्है[1] बार बार यूं[2] प्याइ[3]।
प्यास और तें सौगुनीं लगत घाइलन[4] आइ॥५२६॥
यही[1] मतौ ठहराइये अली हमारे जान।
जान न दीजै कान्ह[2] कौं जातन दीजें[3] जान॥५२७॥
रसनिधि जब कबहूं बहै वह पुरवैया बाइ।
लगी पुरातन[1] चोट जौ[2] तन[3] उभरति है आइ॥५२८॥
जौ कहियै यह बात तौ कहै कौन पतिआइ।
लागौ सौहन करन[1] मन मीत सौंहना[2] आइ॥५२९॥
नैंन चकोरन ह्वै लषौ जब[1] ससि मुष कौं[2] आइ।
तब वाकी[3] चितचाइ कछु तुम कौ जानी जाइ॥५३०॥
जदिप रसिकनिधि अमित हूं[1] पुनि निसतारे होत।
ससि बिनु लषै चकोर के नहि[2] निसतारे होत॥५३१॥
ज्यौं[1] तू[2] उत मुरि जातु है त्यौं त्यौं उर[3] मुर जाइ।
तेरी जा[4] मुर जान पैं[5] मेरो मन मुर जाइ॥५३२॥
मेरौ सौ होतौ अरे तेरौ चित्त अधीर।
व्यापी होती जौ कहूं तोहि बात की पीर॥५३३॥

---

५२६. (१) यहै प्र। (२) तूं प्र। (३) पाइ प्र। (४) लागत द।

५२७. (१) इही भा। (२) काहु प। (३) जान दीजिए भा।

५२८. (१) पुरातम प्र, द। (२) जो भा। (३) तब भा।

५२९. (१) करत प्र। (२) सोहन भा।

५३०. (१) जदि प्र। (२) सबकौं प्र। (३) याकी भा।

५३१. (१) हूं प्र, हुव भा। (२) निहि प्र।

५३२. (१) जो प्र। (२) तम द। (३) गिरबर भा। (४) या भा। (५) पे भा।

भेजौ सुमन सनेह मैं कछुक पथिक के हाथ[१]।
वाहि लगायौ कै[२] नहीं गात आपनै हाथ॥५३४॥
द्वैस[१] बितावति ब्रजवधू सुरति ध्यान मैं पूर।
बदन चन्द लषि विरह तम निस कौ[२] करती दूर॥५३५॥
क्यौ बिसराई भावतै जिय तैं मेरी यादि।
घुंघुरिन[१] मिस बजि करतु हैं मन मेरौ फरियादि॥५३६॥
सब दरदिन कौ ज्यौं दवा[१] जग मैं विधि कर दीन।
बेदरदी महबूब की काहे षबर न लीन[२]॥५३७॥
जौं[१] पसु ऊपर ऊपजै दया कसाइ न चित्त।
तौ दयाल हौ बैसही नेहन[२] ऊपर मित्त॥५३८॥
यामै कछु टोटौ परौ कै हम बिडतौ[१] कीन।
मन पलटै सुनियै[२] सषी लाल मनोहर लींन॥५३९॥
मन के[१] रसनिधि भावतैं कहैं जताऊ तोहि।
मजलूमन पै[२] जुलम कौ रवादार मति होहि[३]॥५४०॥
उड़ी गुडी[१] लौं मन फिरें डोरि लला[२] के हांथ।
नैन तमासे को रहै लगें निरंतर साथ॥५४१॥

---

५३४. (१) साथ भा। (२) वै प्र।

५३५. (१) दिवस भा। (२) कै प्र।

५३६. (१) घुंगरुन भा, घुघुरन प्र।

५३७. (१) दया भा, (२) खोइ न दीन भा।

५३८. (१) ज्यों प्र। (२) नैहिन प्र, नेहिन द।

५३९. (१) बिड़तो भा। (२) सुनिहो द।

५४०. (१) सुनके भा। (२) है भा। (३) होहि प्र।

५४१. (१) गुडौ प्र। (२) लाल भा।

प्रान रहत है देह मैं देह प्रान कौ[१] पाइ[२]।
आसिक अरु[३] महबूब बिच यह कछु भेद दिषाइ।।५४२।।
निस बासर घनस्याम पै चहै स्वाति छबि बूंद।
द्रिग चातिक लषि आंन रस[१] रहै चौंच पल मूंद।।५४३।।
बिन कारज[१] लागौ रहौ[२] कारज[३] सम दृग बाल।
निसबासर मन भांवतौ[४] सांवर[५] रूप रसाल[६]।।५४४।।
हित बिसात घरि[१] मन न रद चलिकै द इन दाउ[२]।
यासौ प्रीतम की रजा बाजू[३] षेलत चाउ[४]।।५४५।।
नगरै[१] बसै नगरै लगैं सुनियै नागर नार।
पगरै रगरैं सुमन लै[२] डारै बगर बहार[३]।।५४६।।
भोर[१] होत पोरी लगै[२] यातै ससिमुष जोति।
सरसनि दरद चकोर की आइ हियै[३] सुधि होति।।५४७।।
सकै न बिछुरन मीत सहि[१] सकै न हित[३] इत आउ।
दुविध कठिन नेहिन[३] अरे कहु कहि[४] करै उपाउ।।५४८।।

---

५४२. (१) के प्र। (२) पास प्र, धाइ द। (३) औ भा।

५४३. (१) रति प्र।

५४४. (१) काजर प्र। (२) लागै रहै प्र। (३) काजर प्र। (४) भांवतै प्र। (५) स्यामल भा। (६) रिसाल द।

५४५. (१) धर भा। (२) दाव भा। (३) बाजी भा। (४) चाव प्र, द।

५४६. (१) नगरे प्र, नगर भा। (२) लौं प्र। (३) बुहार द।

५४७. (१) भौर प्र। (२) लगी भा। (३) हियौ भा।

५४८. (१) सह भा। (२) नहित भा। (३) नेहनि भा। (४) कह प्र, का भा।

लगन लाग दुउ येक[1] सम इनमैं अंतर येह ।
वह आसा[2] लीनै रहै यह आसा[3] तजि देह ।।५४९।।
सीषे तुम[1] अहिवरन ज्यौं काची विद्या[2] जाइ।
चित्त चकावू आइ कै तुम पै कढ़ौ[3] न जाइ।।५५०।।
जिन नैननि[1] कौ है सहौ मौहनरूप अहार।
तिन कौं वैद्यु बतावही लंघन कौ उपचार।।५५१।।
जसुमति या व्रज मैं कहौ अव निवाह[1] क्यौं होइ।
तव दधिचोरी होति थी[1] अव चितचोरी होइ।।५५२।।
अपनौ सौ इन पै जितौ लाज[1] चलावति जोर।
कविलनवा[2] लौं दृग रहै निरष मौत मुष वोर[3]।।५५३।।
किसलै दल के वान जे[1] घाले अंबुज ईठ
अजो फिरतु है अलि लषौ हरद लगायैं[2] पीठ।।५५४।।
परसौं सुनि[1] नदलाड़िले चरन[2] तिहारे भाल।
चोरि चोरि चितु लेतु हौ[3] जोरि जोरि दृग लाल।।५५५।।
लगे नैन पै[1] जाइ कै यह कहनाउत आइ।
दृग मृग द्वै[2] चित चाह वह लगत मौत सौं जाइ।।५५६।।

---

५४९. (१) एक भा। (२) कहा आप प्र, वह आसा भा। (३) आपा प्र,

५५०. (१) त्यौं भा। (२) विध्या प्र, द। (३) कड़ौ प्र, कढ़ौ द।

५५१. (१) नैननि प्र।

५५२. (१) निबहू प्र। (२) हो भा।

५५३. (१) लाल प्र। (२) कबलनुमा भा। (३) ओर भा।

५५४. (१) ये प्र। (२) लगायौ प्र, लगाएँ द।

५५५. (१) सुनु भा। (२) वरन प्र। (३) है प्र।

५५६. (१) नैन लगे वे भा। (२) त्यौ भा।

जौ तू चाहतु प्रेमरसु ताकौ[1] यहै उपाइ।
करु गुरु चातिक मीन कौ तब हित मग धर[2] पाइ[3]॥५५७॥

एक[1] कटे एकै[2] पड़े[3] एक कटन कौ त्यार।
बढ़े[4] रहे केते सुमन मीता तेरे द्वार॥५५८॥

जो तुव[1] उर लगती कहूं चंद[2] लगन[3] की बांनि।
दुबिधि कठिन परती अरे[4] चित चकोर कौ आनि॥५५९॥

चित[1] चकोर दृग आरसी लषि अपनो[2] मुष आइ।
अनदेषै देषै यहै लगियौ दृगनि सुहाइ॥५६०॥

जाहि लगै तैं[1] तुरत ही सिर नहि धुनै सुजान।
ना वह रूप न बात वह[2] ना वह तांन न बांन॥५६१॥

चाहत है रवि कौ उदौ हरि विधि विधिहि मनाइ[1]।
राति परै दिन परतु है चकई चकवन आइ॥५६२॥

उदौ करै नहि हिय अवनि जब लगि चाह दिनेस।
तब लगि सूझै[1] दृगन क्यौं बिकट[2] पंथ पिय देस॥५६३॥

सबनि सम्हारै[1] वाहि जौ धनि देतौ निरबाहि।
न्यारे करिकै जांचतौ जाचिक बिन[2] कौ वाहि॥५६४॥

---

५५७. (१) याकौ भा। (२) धनु द। (३) पाउ प्र।
५५८. (१) येक प्र। (२) येकै प्र, ऐक द। (३) अड़े भा, बरै द। (४) अटे द।
५५९. (१) तूं भा। (२) चंद्र प्र। (३) द्रगन प्र। (४) गरे भा।
५६०. (१) रस प्र, ससि भा। (२) अपना प्र, द। (३) लगवौ प्र।
५६१. (१) तहि द। (२) यह द।
५६२. (१) मताइ द
५६३. (१) समुझै प्र। (२) द्रग निरष क्यौं विट प्र।
५६४. (१) सब निस मार भा। (२) चात्रिक वन भा।

लगे न जे पल[१] लालची जब तैं लषे सुजांन।
चितचाइन वारन लगे जांन जांन[२] पर जांन॥५६५॥

कुन्दन सी वह बाल कौ हीरा लाल लगाइ।
रतन जटित की दुति तबै[१] लीला दृग सरसाइ॥५६६॥

परहथ परौ छुड़ाइयै जु[१] कछु गांठि गथु[२] होइ।
मौहन मन घर बाति कौ लै राषौ तुम गोइ॥५६७॥

कहि चकोर क्यौं जीवतौ[१] चंद बिना निस पाइ।
चंदमुषी करती नहीं कहूं निसा निस आइ[२]॥५६८॥

सोरठा

निसदिन चाहत तोहि[१] ज्यौं निधनी धन कौं चहै।
प्रीतम हितकर मोहि[२] दै दौलत दीदार की॥५६९॥

दोहा

मोहि तोहि महदीव[१] कहु कैसैं बनै बनाइ।
जिन चरननि सौं हौं[२] रची तहां रची तूं जाइ॥५७०॥

ज्यौं ज्यौं वह मनमोहिनी सुन्दरता नै[१] लेइ।
त्यौं त्यौं रसनिधि के मनै संगहि तानै देइ[२]॥५७१॥

---

५६५. (१) दृग भा। (२) जान जाग प्र।
५६६. (१) जबै प्र।
५६७. (१) जो भा। (२) गांठ गथ प्र, गड़ गुथ भा।
५६८. (१) जीवतें प्र। (२) न सहाइ भा।
५६९. (१) जोहि प्र। (२) तोहि प्र,।
५७०. (१) महदी प्र; मनदी द। (२) मैं भा।
५७१. (१) नहि भा। (२) लैइ प्र, द।

माषन चोरी सौं अरी परकि रहौ[1] नंदलाल।
चोरन लागौं अब लषौ नेहिन को मन[2] माल॥५७२॥
प्रेम लगनि कुलकांनि सौं नैक न आई रास।
वह चलि प्रीतम पै गई वह चलि गुरुजन पास[1] ॥५७३॥
प्रीतम कहु इहि[1] बात कौ जानौ जातु न हेतु।
मो दृग तारिन[2] कौन विधि बदन चंद भर देतु॥५७४॥
जब तैं उहि[1] सर पठि[2] दिये[3] हेरन मैहि तबील[4]।
पल घर मै बैठत नहीं दृग तव तैं[5] द्वौ[6] सील॥५७५॥
लगै रहत नंदलाल सौं[1] स्याम रंगीले गात।
रसनिधि तारे दृगन के यातै स्यांम दिषात॥५७६॥
दृग सेवक नृपरूप मैं ऐसौ सुनयितु हेत।
ये मन हीरा देत हैं वे छबि हीरा देत॥५७७॥
मगजी जौ[1] लागी रहै[2] सुन्दर दावन[3] साथ।
हारि[4] भावंते की तऊ[5] मगजी लगी न हाथ॥५७८॥
लागत सहत[1] सनेह जिहिं[2] जांनत वहै[3] सरीर।
सुन्यौ[4] न लोहे लहत कहुं घाइल दिल की पीर॥५७९॥

---

५७२. (१) पर किन हौ द। (२) के धन प्र।
५७३. (१) वह गुरु लोगन पास भा।
५७४. (१) कहि यह भा। (२) जारै प्र।
५७५. (१) वह भा। (२) पर भा। (३) दियौ प्र। (४) तहवील वा। (५) दृग जब तै प्र। (६) द्वै भा।
५७६. (१) के प्र, कौ द।
५७८. (१) ज्यौं भा। (२) रही भा। (३) साउन प्र। (४) हाइ भा। (५) कही भा।
५७९. (१) लागै सकत भा। (२) जहं भा। (३) वही प्र। (४) सुनौ ने प्र।

मौहन मुष इन दृगन तैं जा दिन लषौं न नैंक।
मति लेषौ वह आव[1] मैं विधु[2] लेषन लै छैंक।।५८०।।
तुव आवन हित पाउड़े राषै पलन बिछाइ।
निधरक धर पग दृगन पैं बरुनौ[1] अनी बचाइ।।५८१।।
रे तबीब तुम सौं हमैं नैंक न[1] ऐहै रास।
विरह दरद की है दवा वा सामलिया[2] पास।।५८२।।
आसिक अरु महबूब बिच अन्तर इतौ सुजांन।
इनके दृग अंसुवन भरे वे दृग रूप गुमांन।।५८३।।
देषत क्या औरै[1] नमैं[2] लै लै मुष को वोर[3]।
जांनत वा मुषचंद रस मजनू नैंन चकोर।।५८४।।
होता कहूं[1] इलाज सौं जोउन कौं[2] दिल साद।
दरदवन्त[3] रहतैं बनैं क्यौं मजनू फिरहाद।।५८५।।
जदपि दीप तैं अमित छबि[1] रविहूँ मैं सरसाइ।
कब पतंग तजि[2] दोप कौ वा तन झांकत जाइ।।५८६।।
जौ कदही[1] फेरा करै लै-लै ह्वां तिहि[2] वेर।
कफन चाष मजनू[3] करै उठै गोर तैं फेर।।५८७।।
लैउ न मजनू गोर ढिग कोऊ लैलै नाम।
दरदवन्त[1] कौ नैंक तौ[2] लेन देउ[3] विसराम।।५८८।।

---

५८०. (१) विहि आउ प्र। (२) विधि प्र।
५८१. (१) बसनी प्र।
५८२. (१) नेकेउ प्र। (२) स्यामलिया भा।
५८४. (१) क्यौं रै प्र। (२) नेशे प्र। (३) ओर भा।
५८५. (१) होत कही प्र। (२) जोवन को भा। (३) दरदअन्द प्र।
५८६. (१) द्रुति प्र। (३) कविमति गत जिन प्र।
५८७. (१) कबही भा। (२) स्वातहि भा। (३) मुजनू प्र।
५८८. (१) दरदवंद प्र। (२) ते प्र। (३) देहु भा।

दृग सुषपाल लिये षड़े हाजिर लगन कहार।
पहुंचायौ[१] मन मजिल[२] तन[३] तुहिं लै प्रांन अधार।।५८९।।
कौंन कला तुव दृग[१] लगी सांची कहि किन देत।
पवन सरूपी मनहिं तूं बांधि मुठी मैं लेत।।५९०।।
जाकौ चित चौरौ गयौ या जिहि लियौ[१] चुराइ।
मीत नफा कहि को भरी[२] सांची धौं कहि आइ।।५९१।।
मेरेई उर बैठि कै मीत बिलस इहिं आइ।
छिपिहै नहिं मनियाल[१] ज्यौं[२] चोर अनत[३] लै जाइ।।५९२।।
लगे लगनि कौ सुषु भयौ[१] अब जाननि ब्रजराइ।
मो मन कौ पूरन भयौ सबै[२] मनोरथ आइ।।५९३।।
सुधि न रहै[१] देषै तुहै[२] कल न लषै बिन तोहि।
देषै अनदेषै तुहै कठिन दुहूं बिधि मोहि।।५९४।।
बड़ौ धरनि आकास तैं लषि हिय लौं ह्वै जाइ[१]।
दृग तारिन के तिलन मैं बसतु[२] सु[३] मोंहन आइ।।५९५।।
तुव मरजी सौं मन लगौ कै बेमरजी आइ।
बूझ देषु मन[१] आपनै[२] मीता सौंह दिवाइ।।५९६।।

---

५८९. (१) पौहौंचायौ प्र। (२) मजल प्र। (३) तक प्र।
५९०. (१) कर प्र।
५९१. (१) लिवौ प्र। (२) किसकौ भई प्र।
५९२. (१) मनिलाल भा। (२) जौ भा। (३) अजन प्र, अंत द।
५९३. (१) भले भा। (२) भये भा।
५९४. (१) रही भा। (२) देषतु रहै भा।
५९५. (१) लघु ह्यां तै है जाइ प्र। (२) बसौ भा। (३) सो द।
५९६. (१) दृग भा। (२) आपने प्र, आपनन भा।

दुषी इकंगी प्रीत सौं चात्रिक[1] मीन पतंग।
घन जल दीप न जाँनहीं उनिके हित कौ अंग॥५९७॥
सब निस जाकी चाह मैं जरत रहै ढिग दीप।
तुरत बुझावत निरदई होत न मीत समीप[1]॥५९८॥
मन के साटै भाउतौ देत पाउ[1] नहिं पौंन।
और नफा कौ आसरौ तहां करै कहु कौंन॥५९९॥
चंग जो[1] होता बैद की दियै दवा मौताद[2]।
क्यौं सीरी[3] के दरद में सिर देता फिरहाद॥६००॥
एकै[1] आई वारि मन येकै भई तयार।
गुदरी सी लागी रहै रसनिधि नंद दुआर॥६०१॥
नींद दुहुनि के दृगनि मैं सकै न पल ठहराइ।
जौ चोरी कौ फिरतु कै[1] जिहि चितु चौरौ जाइ॥६०२॥
हित मन कौ पहिचानि जौ ससि लषतौ वह[1] वोर[2]।
चुनते चौंच अंगार लै काहे काज चकोर॥६०३॥
जानतु है अरै[1] लला तू काहू[2] कौ हाल।
घाइल करि मृग कौं बधिक जैसो फिरत षुसाल[3]॥६०४॥

---

५९७. (१) चातक भा।

५९८. (१) सनीप द।

५९९. (१) प्याउ प्र, पाव भा।

६००. (१) चंगा प्र। (२) मौताज प्र। (३) नहि सिर भा।

६०१. (१) एकै भा।

६०२. (१) है भा।

६०३. (१) उहि प्र। (२) ओर भा।

६०४. (१) अेरे भा। (२) काहै प्र। (३) मुसाल प्र।

रावल जोगो ह्या लगत[1] नित फेरी दै जांन।
पल षप्पर भर चहतु[2] है लाल रूप कौ दांन॥६०५॥

प्रेम लगन वर्णन

सोरठा

दोज[1] ससी ज्यौं[2] प्रैम, राजत स्यांम अकास मैं।
आड़ी भीत जु नैम, ता ऊपर हौ देष लैं॥६०६॥

दोहा

उदौ करतु जब प्रैम[1] रवि पूरब दिसि तैं आइ।
कुहू[2] नैंम तम[3] जातु है देषौ जाइ[4] बिलाइ॥६०७॥
बांधे जे तन चितै तैं[1] सरस प्रैम की डोर।
अनष नषन सौ भावते उन्है[2] सकै को छोर॥६०८॥
चसमन चसमा प्रैम कौ पहिलै लैउ[1] लगाइ।
सुन्दर मुष[2] वह मीत कौ तब अवलौकौं आइ॥६०९॥
रिझवारे नंदलाल पै मन मेरौ[1] न अघाइ।
घर लौं आवत बारि कै फिर चलि वारन जाइ॥६१०॥
राषै है हिय सैज मैं चुनि कै सुमन बिछाइ।
अरे गुमानी पलक कौ[1] इहां पाउ[2] धरि आइ॥६११॥

---

६०५. (१) आवत जोगी ह्वां लगे भा। (२) चलत प्र।
६०६. (१) द्वैज प्र, द। (२) जन प्र, जनु द।
६०७. (१) प्रेम कौ प्र। (२) कहनै द। (३) तज प्र। (४) देषौ जात भा।
६०८. (१) मन चित्त भा। (२) उहैं प्र।
६०९. (१) लैउ प्र, लेउ द। (२) सुष प्र।
६१०. (१) वारे प्र, मतवारै द।
६११. (१) तै प्र, तौ भा। (२) पाव भा।

हाथ मलै जौ वह मिलै तो मलियै सौ बार।
मिलत रसिक परवीन वह मिलियै[1] हित के तार॥६१२॥
अद्भुत गति यह प्रैम की बैननि कही न जाइ।
दरस भूष लागै दृगन भूषहि दैइ[1] भगाइ॥६१३॥
कहत[1] रहौं कर देउगौ[2] प्रेम कीमिया त्यार।
मन धनु लै करि कै[3] अरे[4] अब मुकरत है यार॥६१४॥
राजत है[1] कुन्दन जरी चुनी चुनी ब्रजवाल।
तामधि[2] सोभा देतु है मधि नाइक नन्दलाल॥६१५॥
पथिक आपनै पथ लगौ इहा रहौ न पुसाइ।
रसनिधि नैंन सराइ मैं वस्यौ[1] भावते[2] आइ॥६१६॥
अकथ कथा यह प्रैम की कही जाइ नहिं बैंन।
रूपसिन्धु भरि लेतु हैं पल[1] प्यालिन मैं नैंन॥६१७॥
प्रैम नगर मैं दृग बया नौषे प्रगटे आइ।
द्वै[1] मन कौ करि एक मन भाव दयौ[2] ठहराइ॥६१८॥
प्रैमहि राषत सजन हिय हौन देत नहिं सून[1]।
रुषता[2] कौ राषै रहै जैसे हिय मै नून॥६१९॥

---

६१२. (१) मिल अै द।

६१३. (१) देह भा।

६१४. (१) कहा प्र, करत द। (२) देहुँगौ भा। (३) लैकर क्यों भा। (४) लागी द।

६१५. (१) राजा हित प्र, राजत हित द। (२) तामह भा।

६१६. (१) बसौ प्र। (२) भावतौ भा,।

६१७. (१) पल पल प्र। (२) मै तैन प्र, मै मैन भा।

६१८. (१) दो भा। (२) देत भा।

६१९. (१) तून प्र, नून भा। (२) नुकता भा।

प्रेम नगर की रीत जह[१] मोपै कही न जाइ।
मन बेझ्यौ[२] चल लगतु है दृग बानन मा धाइ॥६२०॥
प्रैम नगर मैं द्वेत हैं चित चोरन को छांड़ि।
नेह नगर इन मारियै[१] मन धन लीजतु[२] दांड़ि[३]॥६२१॥
प्रैम अहेरी की अरे यह अद्भुत गति हेर।
कीनै दृग मृग मोत के चित[१] चीते पर सेर॥६२२॥
मतलब मतलब प्यार सौं तन मन दै कर[१] प्रीति।
सुनी सनेहिन[२] मुष यहै प्रैम पंथ की रीति॥६२३॥
वहुत दिना उर मैं भये[१] बिच माया के नैम।
मिहिर[२] नजर करि कीजियै मुझै हिदाइत[३] प्रैम॥६२४॥
प्रैम पियाला पी छके तेई हैं[१] हुस्यार।
जे माया मद सौं छके[२] ते बूड़े मझ[३] धार॥६२५॥
हरि बिछुरत बीती जु हिय सो कछु कहत बनैं न।
अकथ कथा यह प्रैम की जिय जानै कै नैंन॥६२६॥
प्रैम चिन्ह[१] विनु जो हियौ सौ यौं रसिक हजूर।
बिना मुहर की सनद ज्यौं दफतर नहिं मंजूर॥६२७॥

---

६२०. (१) यह प्र। (२) बेंझो द।
६२१. (१) मारियौ प्र, मारजै भा। (२) लीजन प्र, लैजे भा। (३) डाडि भा।
६२२. (१) मन भा।
६२३. (१) अति प्र। (२) सनेहयन प्र।
६२४. (१) उरझै भअे प्र। (२) मैहर भा। (३) इनायत भा।
६२५. (१) तेरी है प्र। (२) भरे भा। (३) बिच प्र, द।
६२७. (१) चह्न प्र। (२) नामंजर भा।

उरझत दृग बंधि जातु मन कहौ कौंन यह रीत।
प्रैमनगर मैं आइ कै देषी बड़ी अनीत[१]॥६२८॥
भरि आये[१] हैं सुमन ये फूलि हिये[२] सरसांन।
हरियाये[३] हैं बन सघन[४] हरि आये बन जांन॥६२९॥
चाह सलिल मैं परतु है गुरूजतु भवर अपार।
षेवट[१] प्रैम लगावही[२] हित जहाज कौ पार॥६३०॥
प्रैम नगर की रीति कछु बैंनन[१] कहत बनैं न।
रूजू रहत चितचोर सौं नैहिनि के मन मैंन[२]॥६३१॥
जैतोई मजबूत कै हित बँध बांधौ[१] जाइ।
तैतौई तामैं सरस भरत प्रैम रसु आइ॥६३२॥
प्रैम नगर कै कांन दै सुनौ चरित ये चारि।
जोई चित बित कौ हरै करै विहै[१] हियहारि॥६३३॥
विहरी[१] कहु निबहत सुनौं लगरि झगरि हित बेस।
तासौ[२] पाउत बैसरा सहो प्रैम के देस॥६३४॥
न्यारौ पैड़ौ प्रैम कौ सहसा धरौं न पाउ।
सिर के पेड़ै भावते चलौ[१] जाउ[२] तौ जाउ॥६३५॥

---

६२९. (१) आयौ है प्र, आए है द। (२) रहै प्र। (३) हरि आये भा। (४) सघर भा।

६३०. (१) केवट भा। (२) लगाइकै प्र, लगाइहै भा।

६३१' (१) बेननि प्र, बैनि द। (२) चैन प्र, नैन द।

६३२. (१) बाधौ भा।

६३३. (१) वहै भा।

६३४. (१) विरही प्र, बिहरी द। (२) तासौ प्र।

६३५. (१) चले प्र, चला द। (२) जाउ प्र, जाइ द।

नैंम न ढूंढैं[1] पाइयै जिह[2] थल बाढ़ै प्रैंम।
रहतु आइ हरि दरस के प्रैम आसरै नैंम॥६३६॥
या रस कौ रसना श्रवन कहन सुनन के नाहिं।
सैना सैंनी बैंन[1] कौ नैंना समुझि सिहाहिं॥६३७॥
गोकुल मैं मौकल फिरै गली गली गज[1] प्रैम।
ऊधौ ह्यां तैं जाउ लै तुम अपनौ सब[2] नेमु॥६३८॥
अमल अपूरब प्रैम कौ जब तक लियौ न होइ।
असुराई[1] की बात तुहि[2] असर कौंन विधि होइ॥६३९॥
जब लगि रसनिधि प्रैम कौ अनुभव होइ न जाइ।
वासौं कहियै कौंन विधि प्रैम कथा समुझाइ॥६४०॥
आन भमायौ[1] जगत जिहिं रसनिधि प्रैम कमाल[2]।
दरस तिनही के दृगन[3] मौहन लाल जमाल॥६४१॥
रसनिधि प्रैम पयौध की अद्भुत सुनौ कथाह।
है अथाह नैहिन वहै[1] असनेहिन[2] कौ थाह॥६४२॥
छूटत जाके नाम तैं जड़ चैतन की गांठि।
तापै छूटत है नहीं तिय कर कंकन गांठि॥६४३॥

---

६३६. (१) नैन न टूटै द, नैन निकट प्र। (२) जेहि भा।

६३७. (१) बैनी प्र, द।

६३८. (१) जग प्र। (२) बस प्र, पन द।

६३९. (१) असुरारी भा। (२) बातै जु सुनि प्र।

६४१. (१) कयायौ प्र, कमायौ द। (२) कबाल भा। (३) डर सौतिन ही के द्रगन प्र।

६४२. (१) वहै प्र, द। (२) नेही प्र।

प्रीति वर्णन

मन मैं वसि कै[1] भावते कहौ कौंन[2] यह हेत।
प्रगट दृगन कौं आइवौ[3] क्यौं न दिषाई देत॥६४४॥
केसी कंस सकौ नहीं[1] जासौं जोरु चलाइ।
तापर अवला सहजही मुरली लेत छिड़ाइ[2]॥६४५॥
हिय दरपन कौं देष[1] जव पारी[2] प्रीत लगा।
तव वा मधि[3] नंदलाल कौ सुन्दर मुष दरसाइ॥६४६॥
दीप ओर की वात तो है दीपक के संग।
प्रीत आपनी ओर तैं देत निवाह[1] पतंग॥६४७॥
प्रीत इमृत फल जे लगै[1] मन द्रिम सौंरितु[2] पाइ।
मीता इनकी[3] नैक तूं लषि बहार तौ आइ॥६४८॥
ज्यौं[1] अनहित कौ चहतु है त्यौंही हित कौ चाहि।
हित अनहित मैं क्या मजा मीत देषि अवगाहि॥६४९॥
घर घर उनिहीं के जुरै बदनामी के पोत[1]।
भाजत जे हित षेत तैं नेकनाम कब[2] होत॥६५०॥

---

६४४. (१) मन बस के मन प्र, मन बसि कर भा। (२) कह्यौ द। (३) आइ कै भा।

६४५. (१) केसी कंसुक कौ नहीं प्र। (२) छिनाइ भा।

६४६. (१) देइ प्र, द। (२) पारौ प्र, द। (३) मह भा।

६४७. (१) द्रिढ़ाइ प्र।

६४८. (१) द्रुम प्र, द्रिग भा। (२) सुरभित भा। (३) इनकौ भा।

६४९. (१) जो प्र।

६५०. (१) तोत भा। (२) कर प्र।

उर अकास जहं आइ कै हित ससि कियौ उदोत।
प्रीत जुन्हैया कौ तहां कहु दुराव क्यौं[१] होत ॥६५१॥
रसनिधि नेहिनमुष[१] सुनौ[२] हम यह बात पुनीत।
हित मगजी दै चाहियै नितही मगजी मीत ॥६५२॥
मिहर लषौ वै मिहटि[१] मै बेपारे[२] है बीच।
दूरि कियौ[३] वे बीच तैं प्रीतम सदा नगीच ॥६५३॥
डीठ डोर[१] नैंना रई[२] छिरक रूपरस तोइ।
मथ मो घट प्रीतम लियौ मन नवनीत बिलोइ ॥६५४॥
रसनिधि यह नैंनन लषौ नवल प्रीति के रंग।
रूप रोसनी दीप[१] मुष नेह लग्यौ[२] मो अंग ॥६५५॥
मीत बात तहकीक[१] कर यह अतिरन मैं होइ।
तन[२] छूटैंहू[३] सुमन तै जात नहीं हित षोइ[४] ॥६५६॥
तौ तुम मेरे पलन तै पलक न होते वोट।
व्यापी होती जो तुमैं[१] ओट[२] भये की[३] चोट ॥६५७॥
इहि विधि भाँवता भयौ[१] हिल मिल नैंनन माहिं।
षैंचत दृग परि जात है मन करि प्रीतम बाहिं[२] ॥६५८॥

---

६५१. (१) कह भा।
६५२. (१) नेहन भौंह द। (२) सुनौ प्र।
६५३. (१) मेहर भा, महिर द। (२) बेमारे प्र। (३) किये प्र, कियौ भा।
६५४. (१) दौरि प्र। (२) दही भा।
६५५. (१) रूप, प्र द। (२) लगौ द।
६५६. (१) तहतीक प्र। (२) वन प्र। (३) हूं प्र, द। (४) जानत हीं द। (५) हित वोइ प्र।
६५७. (१) तुम्है प्र। (२) वोट प्र। (३) भइ पकि प्र।
६५८. (१) बसौ भा। (२) चाहि प्र, वाह द।

जा काहु कौ देत प्रभु तैं लगाइ कै हेतु।
फिर तिहि[१] पलकन वोट पल कहु काहे कर देतु॥६५९॥
वा[१] पीतामर[२] की पवन जब तक लगै न आइ।
सुमन कली अनुराग की तब तक क्यौं बिगसाइ॥६६०॥
कहत पीपलौ पीपलौं नितहि चैपुला[१] आइ।
मीत फूल ता[२] अरथ कौ समझि लेउ[३] चित लाइ॥६६१॥
मौहन रास[१] न आवतौ नैकु[२] सरद कौ रास।
होती कहुं वृषभान की जौ न राधिका पास॥६६२॥
दरजी वा हित थान[१] कौ कतरन लेउ[२] चुराइ।
प्रीत व्यौंत मैं भावते बड़ौ फेरु परि जाइ॥६६३॥
सांची है वह[१] भांवते भय बिनु प्रीतु न होइ।
बिदित प्रीत भय तैं लषौ तनदुति पीरी होइ॥६६४॥
जवहीं मौतन पै करै आइ कांमरी वार।
तवहीं लेतु बचाइ कै आइ कामरी वार॥६६५॥
अद्‌भुत गति यह प्रीति की लषौ सनेही आइ।
जुरै कहूं टूटै कहूं कहूं गांठि परि जाइ॥६६६॥
प्रीत तार अरु तार मैं राग जोति ठहराइ।
लै छूटै करतार तौ[१] फिर कुतार ह्वै जाइ॥६६७॥

---

६५९. (१) तू प्र। (२) फिरत है द।
६६०. (१) वह भा। (२) मीता पर प्र, पीतांबर भा।
६६१. (१) तचैपुल द। (२) खूब यह भा। (३) लेहु भा।
६६२. (१) रस न भा। (२) तनक प्र।
६६३. (१) नारि प्र। (२) लेहु भा।
६६४. (१) वह भा।
६६६. (१) प्रीति प्र, प्रीत द।
६६७. (१) तैं प्र।

देषत तोरै[1] लेतु हैं तन प्रस्वेद सो बोरि[2]।
यामैं तेरी षोरि कहु या कुछ मोरी[3] षोरि[4]॥६६८॥
मीत[1] प्रीत हटतार तैं नेहु जुसरसै आइ।
हिय तामैं कौं रसिकनिधि वेध तुरत हीं जाइ॥६६९॥
औरन के हित तार कै कढि[1] आवत है छोर।
सुनियत सारस प्रीति इक जग मैं निवही वोर[2]॥६७०॥
अरे रसिकनिधि भावते धरौ जिते तूं पाइ।
तिहि[1] मग मैं मो गन कौं लीजे पहिल विछाइ॥६७१॥
हिय सीसा मध[1] हित अतर जितौ राषिये वन्द।
षुसवोई वाकी तिती रसनिध रहै सुछन्द[2]॥६७२॥
ऐसी गति कछु प्यार की सुनिबै[1] जानी यार।
मन तुव तावै रहतु है ज्यौं कर तावेंदार॥६७३॥
बिटते कौ सौंप्यौ[1] हतौ मैं तेरे कर हाल।
द्वै[2] मनु कौ तौ येक मनु कर दीनौ नंदलाल॥६७४॥
यह अचरज करि कै द्रुवौ[1] कछु विहंसी[2] अनषाइ।
चारि दृगन में[3] दुहुन कौं मूरत चारि दिषाइ॥६७५॥

---

६६८. (१) तोरे प्र, तेरे भा। (२) परचै सौ षोर प्र, प्रसेद सौ बोर भा। (३) मैरी प्र। (४) षोरि द।

६६९. (१) मीत प्र, द।

६७०. (१) काठि द। (२) ओर द।

६७१. (१) तहि द।

६७२. (१) मै प्र। (२) सब छंद द।

६७३. (१) सुनियै भा। (२) ताबेतार भा।

६७४. (१) सौयौ प्र। (२) द्वै प्र।

६७५. (१) लख मैं हियौ भा। (२) कहू बहिस द। (३) सौ द।

रंगौ गयौ[1] मनु पट अरी सावलिया[2] के रंग।
कारी कामर पै चढ़ै अब क्यौं दूजौ रंग॥६७६॥
ह्यां लगि रसनिधि प्रीति कौ चटकीलौ रंगु आइ।
मन पट जासौं रंगतही आभा दृग सरसाइ[1]॥६७७॥
प्रीतम चसमा प्रीत कौ टुक तौ देषि लगाइ।
दियै प्रीत चसमा दृगन चहूंदिस प्रीत दिषाइ॥६७८॥
और चोट बच जात है कछुक पाइ कै वोट।
पलक वोट प्रीतम भयैं[1] लागत दूनीं चोट॥६७९॥
बड़ी बेर कौ[1] ज्यो षड़ौ[2] दुषित रावरै पाइ।
रसनिधि हिय के तषत पै[3] बैठि भावतै आइ॥६८०॥
रे नेही मत डगमगै बांधि प्रीति[1] सिरनेत[2]।
सहु वे सरस कटाछ सर साबित ह्वै हित षेत॥६८१॥
मेरे ही अनुराग मैं कछुवक ओट[1] दिषाइ।
जातैं मन पट लाल[2] कौ ह्वै[3] न रंगीलौ जाइ॥६८२॥
चसमन तैं यह रीत तुम[1] चसमन लेउ[2] सिषाइ।
बिन चसमन अनुराग के चहुं दिस लाल दिषाइ॥६८३॥

---

६७६. (१) रंगौ ग्यौ द। (२) स्यामलिया भा।

६७७. (१) दरसाइ भा।

६७९. (१) भयौ प्र, भअै द।

६८०. (१) के प्र। (२) षड़े प्र। (३) पर प्र।

६८१. (१) मींत प्र। (२) हित भा।

६८२. (१) इकखोट भा। (२) लील प्र। (३) ह्,यौ द।

६८३. (१) तुम रीत यह भा। (२) लेहु भा।

स्नेह वर्णन

नेहिन के मन कांच तै निपट करकनै आइ[१]।
दृग ठोकर के लगत ही टूक टूक होइ जाइ॥६८४॥
जा सनेह सौं ब्रजवधू[१] मिली जाइ घनस्यांम[२]।
ता सनेह कौ करतु हौं बार बार परनाम॥६८५॥
सपनैहूँ आये न जे हित गलियां[१] मझि याइ।
तिन सौं दिल का[२] दरद कहु[३] मत दै भरम गमाइ॥६८६॥
नेह लैगे सैये[१] वदन चिकनैं सरस दिषात।
नेह लगायै भावतै[२] क्यों रुषो[३] होइ[४] जात॥६८७॥
सरस सुमन सौं बास कै तिल समतन कौ पेरि[१]।
कीनौ[२] नेह तयार जहं मीत रुषाइ हेरि॥६८८॥
असनेही जानैं कहा नैंही मन अनुराग।
कहूं हंस[१] की चालि कौ चल जानत है काग॥६८९॥
तिल लौं पेरैं[१] भावतौ नेह न्त्याग पिर जात।
पेरैंहूँ छोड़े नहीं नेह नेहिया[२] गात॥६९०॥

---

६८४. (१) मन की चसनि पट प्र।

६८५. (१) बिर्ज द। (२) घंस्याम द।

६८६. (१) गलियन भा। (२) को भा। (३) कहि भा।

६८७. (१) सबके प्र। (२) भावते प्र, भावतौ भा। (३) रूषै प्र। (४) हूय द।

६८८. (१) तिल समान सों भा। (२) कीन्हौ भा।

६८९. (१) कहुं हंसन की भा।

६९०. (१) लौये रे प्र, ताबें है भा। (२) नेहिन ही प्र, नेही नेही भा।

तेरे नट पट[1] नेहियै[2] कछू न जानैं जात।
जाही तन मैं तूं बसै[3] ही पेरे जात॥६९१॥
जारतू दीप पतंग कौ इहि[1] आसा सौं आइ।
लेत[2] सनेही जांन कै जौंत[3] जोत मिलाइ॥६९२॥
जैसै द्वै अछिर[1] मिलै नाम[2] कहावत नेह[3]।
जुगुल किसोरी परसपर इहि[4] बिधि सनै[5] सनेह॥६९३॥
हेरत नैंकु न सामुहै मुष मोरैं ही[1] जात।
चित चौरेई जात हित[2] जोरेई चित जात॥६९४॥
और लतन सौं हित लता अद्‌भुत गति सरसाइ।
सुमन लगैं पहिलै जिहै[1] पाद्दे कैं हरियाइ॥६९५॥
बिधि पांड़े वहु जतन[1] सौं बहुतन मैं तो टोहिं[2]।
हित पाटी मैं लिष दये नेह आंक देव[3] मोहि[4]॥६९६॥
नेह मोह रस[1] रेसमहि[2] गांठि दई हित जोरि।
चाहत हैं गुरुजन तिन्हैं अनष नषन सौं छोरि॥६९७॥
हित बतियन सौं[1] रसिकनिधि लषु[2] अद्‌भुत गति एह।
प्रीतम मुष पर जोति है मेरे हिय[3] मैं नेह॥६९८॥

---

६९१. (१) वट प्र। (२) नैन ये भा। (३) बसत भा।
६९२. (१) या भा। (२) तेल प्र, द। (३) यातै भा।
६९३. (१) दुबि अच्छर भा। (२) लांम प्र। (३) वेह प्र। (४) यह भा। (५) सुनौ भा।
६९४. (१) री भाँ (२) मोरैंई द। (३) जात है हित द।
६९५. (१) जिन्है प्र, इहै भा।
६९६. (१) जन प्र। (२) बैठाइ प्र। (३) द्वै प्र। (४) मोइ भा।
६९७. (१) रसि भा। (२) मैंहि द।
६९८. (१) की भा। (२) लखि भा, प्र। (३) मुष प्र, द।

स्वच्छ सुतिय तन भूमि[१] लषु[२] जहँ पानिप सरसाइ[३]।
मन माली दीनीं[४] तहां हित की लता लगाइ।।६९९।।
नेह लता उर भूमि भइ[१] जो वह[२] दो दो पात।
सुमन सहित अनुराग फल तासौं लागत जात।।७००।।
या झीनै हित तार मैं वलु ह्याँतै[१] अधिकाइ।
अलष[२] लोक कौं ईस जो बांधौ जासौं[३] जाइ।।७०१।।
नेही लोहा नूर लषि कटत कटाछन माहि[१]।
असनेही हित षेत तजि भागिनि[२] लोहे जाहि[३]।।७०२।।
नेहिन के[१] मन भावते बिरह आंच सौं ताइ।
कुंदन सौं कर लेतु है रूप कसौटी लाइ।।७०३।।
नेह नगर मैं हित बया[१] वह कर दीनों भाउ।
मन के साटै मिलतु जहं[२] भावंता रज पाउ[३]।।७०४।।
नेह अतर की चिकनई जिहि दृग परसी जाइ।
झलकन जलकत की रहै[१] बिच तिहि पलकन आइ।।७०५।।
वा[१] घट कैसौ टूक करि दीजै नदी बहाइ।
नेह भरेऊ[२] पै जिन्हैं दौर रुषाई जाइ।।७०६।।

---

६९९. (१) भूत प्र। (२) लहि भा, लषि प्र। (३) दरसाइ प्र (४) दीन्हीं प्र।

७००. (१) भए भा। (२) जोषत प्र, जो यह भा।

७०१. (१) एतो भा। (२) अखिल भा। (३) जासौ बांधौ भा।

७०२. (१) नेह लता हां नूर लै काटत कटाछिन माहि प्र। (२) भागिन द, भागत भा। (३) जांहि द।

७०३. (१) कौ प्र।

७०४. (१) बिया प्र। (२) नाहि प्र, है द। (३) भाव तरजुबा पाय भा।

७०५. (१) झलकन की दुति है रहै द।

७०६. (१) या भा। (२) भरेंहू भा।

रूष रूषे[१] जे रहत हैं नेह बासु नहिं लेइ।
उन तैं वे मखियां भली नेह परसि जिय देइ॥७०७॥
हितराजी मैं राषिवी चित सजी को[१] बात।
इतराजी करि कहुं सुनै[२] प्रीतम नेह निभात॥७०८॥
यामैं कछु धोषो नहीं नेही सूर समांन[१]।
दोऊ सनमुख सहत हैं दृग अनियारे बांन॥७०९॥
कहिबे कौ कोऊ कहौ बातन के बिस्तार।
सुरझाये कहु कौंन वै[१] उर[२] उरझे हित तार॥७१०॥
प्रीतम हीतैं नेह कौ हौन न दीजै छीन।
नेह घटैंही लगतु है दीपक जोति मलीन॥७११॥
मृदु मुसिकन मैं कर लियै तै नेही दृग बंद[१]।
काये कौ षोलतु अरे तैं ये[२] जुलफ[३] कमंद॥७१२॥
बिधिहूं तै यह[१] अधिक है नेह सु मेरे जांन।
मीत दरस कौं देतु करि नैंन मई तन प्रांन॥७१३॥
मन माली हिय भूमि मैं बोयौ[१] हित कौ बाग।
मौहन आंन निहारियै लागौ[२] फल अनुराग॥७१४॥

---

७०७. (१) रुबे रुषे भा

७०८. (१) राज की भा। (२) सनै प्र। (३) बिभात प्र।

७०९. (१) सुर सामान प्र।

७१०. (१) कह कांननै प्र। (२) बर भा।

७१२. (१) मृदु बिहंसन मुसक्यान मैं कर नेही द्रग बंद भा। (२) अरे नये प्र। (३) के मंद प्र, न फंद भा।

७१३. (१) जे भा।

७१४. (१) बोवे भा। (२) लागे द।

सोरठा

गिर तैं गरुवौ नेह, असनेहिन हरूवौ लगै।
व्यापत नहिं वह देह[१] अवनि भोर जहँ[२] बासुकहि ॥७१५॥

दोहा

बिनु दांम सौदा मिलै[१] सुनी न अब तक बात।
बिन दांमन हित हाट मैं नेही सहज बिकात ॥७१६॥
उतै[१] रुषाई है घनीं थोरो[२] मुझपै नेहि।
जाही अंग लगाइयै सोई सोषै लेह ॥७१७॥
बार बार ब्रजबाल[१] कौ[२] इहि डर[३] हियौ डराइ।
नेह लगै मौहन दसा मत हमसी ह्वै[३] जाइ ॥७१८॥
रूप चिराक चिराक की गति एकैई[१] जांनि।
दुवौ नेह सौं करत हैं प्रकट रौसनी आंनि ॥७१९॥
सुंदर पलकन पै लसै ये निसतारे आइ।
रसनिधि नेही दिलन[१] के ये दृग तारे आई ॥७२०॥
बिंग[१] वचन[२] तैं कढ़ति है जौ कोऊ धुनि आइ।
ताहि समझि नेहीं हियौ बार बार अकुलाइ ॥७२१॥
मांगत विध सौं ब्रजवधू प्रन पति कर बरु[१] येह।
हम सौं मौहन नेह[२] कै हम सौं करै न नेह ॥७२२॥

---

७१५. (१) उहि हेतु प्र। (२) ज्यौं प्र, जस भा।
७१६. (१) बिनु दांमन सौं दाम लै भा।
७१७. (१) उनै प्र। (२) थोरा प्र, द।
७१८. (१) ब्रजलाल द। (२) यह विधि भा। (३) होइ भा।
७१९. (१) ये कहीं प्र। (२) नेह अस्तै करत प्र।
७२०. (१) द्रगन प्र।
७२१. (१) व्यंग भा। (२) वाच्य प्र। (३) कोई भा।
७२२. (१) बड़ भा। (२) नाह द।

घनि दृग तारिन के जु तिल जिन मैं स्याम सनेह।
बिना नेह के तिल कितै परे रहत हैं देह॥७२३॥
हितु इक चितु द्वै[1] सजन यह करि देषौ[2] जिय गौर।
धरी जाति कहु कौंन बिध एक वस्तु द्वै[3] ठौर॥७२४॥
हित लालहि लै हिय डवा जेतौ धरौ दुराइ।
होत जोत बाकी तऊ प्रकट[1] दृगन ह्वै आइ[2]॥७२५॥
श्रवन सुनौ है यह नयौ नेह नगर मैं भाउ।
देत न तन[1] मन भाउ तौ मन के सांटे[2] पाउ॥७२६॥
नेहनगर मैं रीत यह लषौ अनौषी चाहु[1]।
रसनिधि चित के चोर यह[2] विदित कहावत साहु॥७२७॥
मन विकगौ हित हाट मैं नन्दनंदन के पांनि।
ऐसौ[1] समयौ जुरत है परम भाग तैं आंनि॥७२८॥
चितबित नेहिन के जहाँ निबहन पावत नाहिं।
ऐसेइ[1] निरभै तहां[2] मन नग लादै जाहिं॥७२९॥
हरुवै हरुवै[1] धरनि पै धरिये प्रीतम पाइ।
सुमन सनेहिन के बिछे मति कहुं मिस लै[2] जाइ॥७३०॥
दरद दवा दौनौ रहै प्रीतम प्यास तयार[1]।
नेहिनि कौ निस्तारिबो[2] वाही के अषत्यार॥७३१॥

---

७२३. (१) चित इक हित बहु भा। (२) हिय भा। (३) है भा।
७२५. (१) प्रगट तऊ भा। (२) मैं जाइ भा।
७२६. (२) तहं भा। (२) साठै भा।
७२७. (१) बाहु भा। (२) वह प्र, हू भा।
७२८. (१) अैसौ द।
७२९. (१) असनेही भा। (२) फिरै भा।
७३०. (१) हरियै हरुयौ प्र। (२) बिह्लै भा।
७३१. (१) पास न पार प्र, पासत्यार द। (२) निरबाहबौ भा।

दरदहिं दै[1] जानत[2] लला सुधि लै जानत नाहिं।
कहौ बिचारै नेहियां तुव घालै कित जाहिं।।७३२।।
अद्भुत बात सनेह की सुनी सनेही आइ।
जाकी सुधि आए[1] हियै सबई सुध बुध जाइ।।७३३।।
कहनावत यह मैं सुनी पौषत तन कौ नेह।
नेह लगायैं अब लगी सूषन सिरती[1] देह।।७३४।।
और जवाहिर की प्रभा जहीं धरौ तहिं होति।
हित मानिक की जगत[1] मैं सरस प्रकासित जोति।।७३५।।
रूषी रावहि कहत सब मोहि अचम्भै येहि।
पटहूं केउर[1] लाग बहु षैंचि नेह कौ लेहि।।७३६।।
बोलन चितवन चलन मैं सहज जनाई देतु।
छिषत चतुरइन कर कहूं[1] अरे हिये कौ हेतु।।७३७।।
बांधि अरे हित प्रैम[1] कौं पहिलै मौहन[2] आइ।
तव गहिरौ हौ कै इहां नेह नीर ठहराई।।७३८।।
मीता तू चाहत कियौ रूषी बतियन जोति।
नेह बिना ही रोसनी देषी सुनी न होति।।७३९।।
नेहिन पै मनभावतै मतियै रूषौ[1] होइ।
रास[2] रुषाई देइगी नेह चिकनई षोइ।।७४०।।

---

७३२. (१) दरद हिदै द। (२) मानत द।
७३३. (१) आवै भा।
७३४. (१) सीरती द, सिगरी भा।
७३५. (१) जग्त द।
७३६. (१) वर भा।
७३७. (१) इन पर कहूं प्र।
७३८. (१) यार भा। (२) मुहकम भा।
७४०, (१) रूषा प्र, द। (२) येक प्र।

तू इनसौं नित व्याज की कथा चलावतु आइ।
नेहिन त मन धन दियौ तुहि निरव्याजौ ल्याइ॥७४१॥
नेह ललक बल सौं भजौ[1] हित सौं[2] झीनौ तार[3]।
मन गयन्द तासौं बंधौ झूमत प्रीतम द्वार॥७४२॥
आपु बसातैं[1] सज्जनां नेह न दीजै जांन।
नेही तिल नेहै तजै षर हो जात[2] निदांन॥७४३॥

तर्क वर्णन

रूप सिन्धु मथि स्यांम दृग मौहन बनिक बनाइ।
दीनौ नेहिन बिरह मधु[1] छबि मद असुरन प्याइ॥७४४॥
तुम गिरि लै नष पै धर्‌यौ इन तुमकौ दृग कोर।
दो मैं तै तुमही कहौ अधिक कियौ केहि जोर॥७४५॥
तन सुष तौ चहियत हतौ[1] हरिविध बिधहि मनाइ।
भली भई जु सुषी भये मौहन मथुरे जाइ॥७४६॥
बारक तुम गिर कर[1] धरौ गिरधर पायौ नांम।
सदा[2] रहौ तुहि उर धरौ उनिकौं अबला नांम॥७४७॥
पौरि पौरि तन आपनौ अनत बिधायौ[1] जाइ।
अब[2] मुरली नन्दलाल पै भई सुहागिल आइ॥७४८॥

---

७४२. (१) बन सौ भये भा। (२) कौ द। (३) मध दुवार द।
७४३. (१) रसातै प्र। (२) षरहौ प्र।
७४४. (१) विष भा।
७४५. (१) धरौ द।
७४६. (१) तनि सुष तौ भा। (२) जो सषी भा।
७४७. (१) पर प्र। (२) वनौ प्र। (३) तुम्हि भा।
७४८. (१) बधायौ प्र। (२) तब भा।

तेरे घर विधि कौ दियौ धरौ[१] न कोऊ षात।
गोरस[२] हित घर घर लला काहे फिरत ललात[३]।।७४९।।
घट बढ़ इनमैं कौन कहु[१] तुही सांवरे[२] ऐंन।
तुम गिरि लै नष पै धर्‌यौ[३] इन गिरधर लै नैन।।७५०।।
जांन अजांन न होत है जगत बिदित यह बात[१]।
वेर हमारी जानिकै[२] क्यौं अजान होइ[३] जात।।७५१।।
नंदलाल संगि लग गये बुधि विचार अरू ग्यान[१]।
अव[१] उपदेसनि जोग ब्रज आये कौन सयान।।७५२।।
यह अव कौंन कलानिधि कहौ कलानिधि आपु।
होइ सुधाकर करत हौ बिरहिनि तन संतापु।।७५३।।
इनसौं घट भर लाजियै यामैं नहीं विवाद।
जान सकै रस कूप[१] कौ रसना कहा सवाद।।७५४।।
कै राषौं कर मैं[१] दला कै मन कौ ब्रजनांथ।
ऐक[२] हाथ मैं ये दुवौ[३] कैसै रहिहैं[४] साथ।।७५५।।
सुमिरत जग के चरन कौ मोह जगत कौ[१] जाहि।
निरमोही जौ होइ वह का अचरज जगु आइ[२]।।७५६।।

---

७४९. (१) दयो भा। (२) गोरख भा।

७५०. (१) है भा। (२) सांवरे प्र, द। (३) पर धरौ द।

७५१. (१) गत बिदित हियें यह बात प्र। (२) जानियौ प्र। (३) हौ प्र, हो द।

७५२. (१) बर ज्ञान भा। (२) अल प्र, द। (३) आयो भा। (४) स्यान द।

७५४. (१) रस रूप प्र, द।

७५५. (१) के प्र। (२) येक प्र, द। (३) दोऊ भा। (४) रहिये। प्र।

७५६. (१) कौ प्र, जग्त कौ द। (२) कौ आचिरज आहि भा।

मौहन तेरे नाम कौ कढौ[2] वा दिनां छोर।
ब्रजवासिन[2] कौ मोह तज[3] चलौ मधुपुरीं[4] वोर॥७५७॥
जौ चकोर सम आउतौ लषि तुहि[1] सरसिज माल[2]।
हौतौ बिदित[3] चकोर तिम ससि तेरौई हाल॥७५८॥
यामै कछु धोषौ[1] नहीं सुनौ सन्त[2] अभिरांम।
नेह चिकनई षोइबौ[3] है षलही[4] कौ कांम॥७५९॥
आपु लसत[1] बैचत मनहिं रसनिधि कर बिनु दाम।
नैंननि मैं नै नाहिनै[2] यातै नैंना नाम॥७६०॥
कहा भयौ तोकौ दियौ विधि जौ[1] सुरसिज माल।
तौ हेरत हरि हौ[2] लला काहू कौ मन लाल[3]॥७६१॥
बचै[1] रहौ चित[2] चोट तैं मेरे मौहन लाल।
चोट लगै ह्वै[3] जाइगौ मेरौई सौ हाल॥७६२॥
अंधियारी निस को जनमु कारे कान्ह[1] गुवाल।
चितचोरी जो करत हौ कहा अचंभौ लाल॥७६३॥

---

७५७. (१) कठौ प्र, कहौ भा। (२) वृजवासी प्र। (३) कै भा। (४) माधुरी द।

७५८. (१) तुव प्र। (२) सरस जमात क। (३) दिरत प्र।

७५९. (१) धौकौ प्र। (२) सजन प्र, सहज द। (३) नेहि चिकनी षोइ कै द। (४) खरही प्र, द।

७६०. (१) लनग प्र। (२) नाहि लै द।

७६१. (१) सौ प्र। (२) कौ प्र। (३) माल प्र, द।

७६२. (१) बचौ भा। (२) हित प्र। (३) हौ प्र।

७६३. (१) काहु प्र।

सुधि लै जानत हौ लला कै[1] भौंहैई तांनि।
यही बूझियै आपु तन[2] वड़े कहावत जांनि।।७६४।।
जिन मौहन नै सहज मैं नष पर धरौ पहार।
भारी कैसे कै लगै तिन्हैं[1] बिरह कौ भार।।७६५।।
गिरधर लियौ छिपाइ कै तनु तिनका की वोट[1]।
और[2] कहा कछु कलिन[3] की अली वांधियतु मोट।।७६६।।
होत सनेहिन[1] कौ कहा[2] कहु कैसौ[3] निरवाहु।
चित वित हरि दृग रावरे तहां[4] कहावतु साहु।।७६७।।
तीन पैर[1] जाकै लषौ त्रिभुवन मैं न समांई।
ताकौ राषत राधिका[2] लोइन कोइन मांहि।।७६८।।
इन्द्र गरव हरि सहज मैं गिर नष पर धर लींन।
इहि इतनै[1] बितना भरै[2] लघु[3] कितना बलु कींन।।७६९।।
गोपी जौ तुहि प्रैम करि करती नहीं सनाथ[1]।
को कहतौ तुहि नंदसुत जग मैं गोपीनाथ।।७७०।।
जदिप भयौ है ससि अरे मनहीं तै उतपन्न[1]।
तऊ चकौरिन मन[1] बिथा नीकै[2] जानत धन्न।।७७१।।

---

७६४. (१) कहू भा। (२) तुम सा। (३) कै भौअै ही द।
७६५. (१) तिनै प्र, तिनहि भा।
७६६. (१) औट द। (२) औरे द। (३) कलनि की द।
७६७. (१) सनेही भा। (२) जहां प्र,। (३) केसौ प्र। (४) जहा भा।
७६८. (१) पैड प्र, द। (२) घन राधे राषत तिन्इहैं भा। माइ द का प्र।
७६९. (१) इतना भा। (२) भरा भा (३) कहु भा।
७७०. (१) सहाइ प्र।
७७१. (१) मथ प्र। (२) नीकौ भा।

जौ नहिं होतौ जगत मैं[1] मोंसौ कुटिल निकाम।
ते[2] क्यौं होतौ प्रगट तुव अधम उधारन नांम॥७७२॥
जो प्रभु तुम हौ भगतपति[1] पतितन कौ पति कौंन।
तुमहीं देउ[2] बताइ मुहि[3] भजौं जाइ हौं जौंन॥७७३॥
अधम उधारन नाम कौ कै फिर[1] धरौ सुधार।
कै प्रभु जू या अधम कौ हरि विधि देहु[2] उधार॥७७४॥
लषि इहि विधि[1] घर सांवरहि अचरिज लागति मोहिं।
अभी बृष्टि[2] तन होति है जाहि दृष्टि सौ जोहि॥७७५॥
यह विधि नै तोईं[1] दई अजब करामत हाथ।
रवि तरवन राषै रहौ[2] तैं निज मुष ससि साथ[3]॥७७६॥
रसनिधि कारे कांन्ह ये[1] रहे मधुपुरी काइ।
विष उगलत ऊधौ फिरै अचरिजु लषि वृज[2] आइ॥७७७॥
रसनिधि मौहन नांम कौ अरथ न लिय निरधार।
प्रथम समझ तव कीजतौ[1] बासौ प्रीत विचार॥७७८॥
हियै नगर वह रहतु है लगतु न गरुवै[1] आइ।
एते पर सबही कहैं[2] तोह नगरुवा[3] आइ॥७७९॥

---

७७२. (१) जग्त द। (२) तो प्र। (३) मै द।

७७३. (१) भक्त पति भा। (२) देहु भा। (३) कै द। (४) तौन भा।

७७४. (१) फिर कै भा। (२) लेउ प्र।

७७५. (१) यह विष भा। (२) वर्षि द।

७७६. (१) तोही भा। (२) रहौ द। (३) हाथ प्र।

७७७. (१) वे प्र। (२) यह भा।

७७८. (१) कीजियो प्र।

७७९. (१) नगरवा भा। (२) कही प्र। (३) तोनहि गरुवा प्र।

बिरह वर्णन

जबही जड़ हुई जात तन[१] मिलन बात लगि सीत।
तबहि तपावन लगतु[२] है बिरह आंच सौं मीत।।७८०।।
बढ़ी[१] बिरह की रैन यह क्यौंहूं कै न बिहाइ।
मीत सुमुष दरसाइ कै इहां सुदिन करू, आइ[२]।।७८१।।
क्यौंन नैक[१] समुझाई मुहि सुरजन प्रीतम आपु।
बसि मन मैं मन कौ हरौ क्यौं न बिरह संतापु[२]।।७८२।।
गोबरधन नष धर लियौ गोपी[१] ग्वाल[२] बचाइ।
अब गिरधर यह बिरह गिर[३] क्यों न उठावतु आइ।।७८३।।
मोहिं जिवायौ चहतु जौ तौ वहि[१] फेरि कहाइ।
सषी कहांनी कांन्ह[२] की कांनन सुनीं सिहाइ।।७८४।।
जौ न मिलौगे स्यांमघन वाहि तुरतही[१] आइ।
बिरह अगिन सौं राधिका दैहै ब्रिजैं[२] जराइ।।७८५।।
छिन भरि बितु प्रीतम लषैं नैंना भरि भहरात[१]।
धीरज पारद[२] कहुं सुनौ बिरह आंच ठहरात।।७८६।।
बिरह अगिन सुलगन लगौ[१] जब जब उर मैं आंनि।
तब तब नैंन[२] बुझावहीं बरस[३] सरस अंसुवांनि।।७८७।।

---

७८०. (१) तन प्र। (२) गलत है प्र।
७८१. (१) बड़ी भा। (२) अन आइ प्र।
७८२. (१) कहौ भा। (२) संताइ प्र।
७८३. (१) लियै प्र। (२) गुवाल द। (३) सिर भा।
७८४. (१) यह भा। (२) काहु भा। (३) बिजैं द।
७८५. (१) चाहत रहती प्र। (२) बिजैं द, ब्रजहि भा।
७८६. (१) भारात द। (२) पारहु भा।
७८७. (१) सिलगत लगौ प्र, सुन सुन भा। (२) तैन प्र। (३) परस प्र।

आपुन तौ हयां[1] भावते सोवत[2] हौ सुष सेज[3]।
मो तन त्रासत रहत हौ बिरह पियादौ भेज।।७८८।।
प्रीतम अपनी बांह ज्यौं निपट निकट दरसाइ।
पै टिहुनी परवत भई मुहि तक सकै न आइ।।७८९।।
रे तबीब उठि जाइ घर मति निकास गुन पोत।
बिरह जरे दोनैं[1] जरी कैसै चंगे[2] होत।।७९०।।
दृग सथिया घायल दिलौ जे टांके दै जात।
लेत न बिरह उसांस के टूटि टूटिते जात।।७९१।।
यह[1] बूझन कौ नैंन यै लगि लगि काँनन जात[1]।
काहू[2] के मुष तुम सुनीं पिय आवन की बात।।७९२।।
आसिक बिछुरन दरद[1] कौ सकतौ नहीं अंगेज[2]।
जोव[3] दिलासा की दवा मीत न देतौ भेज।।७९३।।
सुधि आवै जब मीत की घन जिमि बरसत नैंन।
थकित ह्वै रहैं पथिक जिय हस्त चरन मुष बैंन[1]।।७९४।।
ग्रीषम बासर बिरह के लगे जनावन जोर।
आइ इतै बरसाइयै रस घनस्यांम[1] किसोर।।७९५।।
राषत अंसुवन जलु भरै पलकन आठौं जांम।
तलफत तदिप[1] सुमीन दृग बिनां लषे घनस्यांम।।७९६।।

---

७८९. (१) ह्वै भा। (२) सोहत भा। (३) सेझ भा।
७९०. (१) दोन्हैं प्र, द। (२) चंगा द।
७९२. (१) वह प्र। (२) कहि प्र।
७९३. (१) दरस प्र। (२) अगैज प्र, अवैज द। (३) जोवर प्र, जो अब भा।
७९४. (१) थकित रहे वाही पथिक जिगह सांच सुष चैन भा।
७९५. (१) घंस्याम द।
७९६. (१) जदपि भा। (२) घंस्याम द।

मन घन हतौ बिसात जो सो[1] तोहि[2] दियौ बताइ।
बांकी बाकी बिरह की प्रीतम भरी न जाइ॥७९७॥
गुन षोवत ह्यां आपनौ[1] रे तबीब्र बेकाज।
नैंन जहमतिन कौ लगै मोहन रूप इलाज॥७९८॥
बिन दरसन सरसन लगे[1] बिरह तरनि[2] तन जोर।
आइ स्यांमघन बरसियै मेह नेह इह वोर[3]॥७९९॥

सोरठा

प्रीतम प्रांन अधार निसुदिन हिय मैं बसत हौ।
बिरह अगिन उपचार जानत[1] हौं जारत[2] कछू॥८००॥

दोहा

बिरह सिन्धु अवगाहि मनु लग्यौ करार[1] करार।
प्रीतम अजौ उबार लै कर गहि बांह पसार॥८०१॥
ग्रासत[1] चित्त गयंद कौ बिरह ग्राह जब आइ।
हरि प्यारे मन कमल लै नेही देत छुड़ाइ[2]॥८०२॥
जब लगि कांचे घट पके बिरह अगिन[1] मैं नांहि।
नेह नीर उरमैं[2] अरे भरै कौंन विधि[3] जांहि॥८०३॥

---

७९७. (१) मोसो द। (२) तुहि प्र।
७९८. (१) आइकै प्र।
७९९. (१) लगे द। (२) तरिन भा। (३) जोर भा।
८००. (१) जारत भा। (२) जानत भा।
८०१. (१) करोर द ।
८०२. (१) प्रासत। (२) चढ़ाइ द।
८०३. (१) आंग प्र। (२) उनमैं भा। (३) अरकौ मन विधि प्र।

घट जाती[१] संजोग मैं तब न कियौ मैं घैरु।
भावन्ता बिनु, निस अरी बढ़ि क्यौं काढ़त[२] बैर॥८०४॥
दरस मूर देतो नहीं जब[१] लौं मीत चुकाइ।
बिरह ब्याज बाकौ अरे नितहू[२] बाढ़त जा र॥८०५॥
इहि डर सौ हौं डरपि कै सकौं न नेह लगाइ।
मति बिहि[२] परसै तन उठै[३] बिरह अनिल झहराइ॥८०६॥
रही न तन की सुधि वहै कहत बुलायै आइ।
इहि[१] औसर है वाहि अब मीत आइवौ आइ॥८०७॥
बैगि आइ कै मीत अब करि हिसाब यह साफ।
मेहर[१] जर कै बिरह की बाकी करिदै माफ॥८०८॥
जौ कहुं प्रीति बिसाहनी[१] करतौ मनु नहिं जाइ।
काहे कौ करु मांगतौ बिरह जगाती, आइ॥८०९॥
कंचन से तन मैं इहाँ भरौ सुहाग बनाइ।
बिरह आंच वापै[१] अरे[२] सही कौन विधि जाइ॥८१०॥
अरे कलानिधि निरदई कहा नधी जहि[१] आइ।
पोषत इम्रित कलानि जगु बिरहिनि देतु जराइ॥८११॥

---

८०४. (१) घटी जात प्र। (२) क्यौं बढ़ि करती भा।

८०५. (१) जौ लौ भा। (२) नितही प्र।

८०६. (१) देषि द। (२) मत यह भा। (३) बढ़ै भा।

८०७. (१) यह भा।

८०८. (१) ये हेरे प, मेहर भा।

८०९. (१) निरबाहनी प्र।

८१०. (१) तापै प्र। (२) कहो भा।

८११. (१) यह भा।

किथौ समुद[1] मुनि पांन[2] जौ सो भरतौ क्यौं ऐंन।
करतौ[3] जों न सहाइ जा[4] पानी[5] कर तुव नैन[6] ॥७१२॥

पोरि पोरि पेरतु तर्नहि बिरहा दै दै[1] ताइ।
दृग प्यासिनि कौ रूपरस प्यारे प्यारे आइ॥८१३॥

कागद कागद मैं अरे सहै बिरह की बात।
मस मिस लिखत न अंक तैं हियै पार होइ जात॥८१४॥

तीछन बांन जु[1] बिरह मैं[2] तांनि दियौ तन मांहि।
सज्जन चुंबकै[3] उर बसै तातैं निकसतु नांहि॥८१५॥

रहे जु कहूँ सुहाग सन[2] जे सुवरन से गात।
बिरह ज्वाल[3] की आंच सौं ते कैसै ठहरात॥८१६॥

मिलकर तव सुष देते हैं मौहन प्यारे ईस।
विछुर चलावन अब लगे[1] बिरह आरकस सीस॥८१७॥

हित आचारज दृग सुवन नेह सुघठ भरलेत।
बिरह अनिल[2] मैं नैंन द्विज[3] मन की आंहुति देत॥८१८॥

---

८१२. (१) समद प्र। (२) मुनिपानि द। (३) करते जो द। (४) तौ प्र। (५) पानिप द। (६) पान पकर तव नैन प्र।

८१३. (१) दै है प्र।

८१५. (१) जो भा। (२) कौ भा। (३) चुंब्रक भा, चबुक द। (४) तोतै प्र।

८१६. (१) कान्ह भा। (२) संग भा। (३) धाम भा।

८१७. (१) गे प्र। (२) हे द।

८१८. (१) सुघन प्र, (२) अगिन भा। (३) मैन द्विच भा।

रसनिधि पलभर होतही भावंता पल वोट।
नहीं सम्हारी[1] जात है यह अनचाही चोट॥८१९॥

वात बात मो दरद की पहुंचावै तुम कांन।
इहि[1] आसा घट[2] मैं रहै जे अनुरागी प्रांन॥८२०॥

जे अंषिया वैरा इही[1] लगै विरह की वाइ।
प्रीतम पग रज कौ तिन्हें[2] आंजन देउ[3] लगाइ॥८२१॥

निकसत नाहीं जतन करि रही करेजै साल।
चुम्वक मीत मिले बिना बिरह साल[1] की माल॥८२२॥

रे निरमोही मन हरन[1] आरे आरे आइ।
भारे आरे[2] बिरह के मति मो सीस चलाइ॥८२३॥

कहियौ पथिक संदेस यह मनमौहन सौं टेरि।
बिरह बिथा जौ तुम हरी हरी भई ब्रज[1] फेरि॥८२४॥

पल अंजुरिन सौंपिबत दृग जल अंसुवा भर सांस।
गिनत रहत है अवधि के पल[1] पषवारे मांस॥८२५॥

पलक पानि कुस बरुनिका जल अंसुवा द्रुज मैंन।
पियहि चलत सुष नींद कौ करत संकलप नैंन॥८२६॥

---

८१९. (१) समारी प्र।

८२०. (१) यहि भा। (२) पट प्र।

८२१. (१) रहौं प्र, बौरावही द। (२) तिहँ प्र। (३) अंजन ैउ प्र, देह भा।

८२२. (१) सार प्र, द। (२) आइ द।

८२३. (१) हरत प्र। (२) आर प्र, भारे भा।

८२४. (१) विर्ज भा।

८२५. (१) दिन भा।

अरी नींद आवै[1] चहै जिहि[2] दृग बसत सुजांन।
देषी सुनी[3] धरी कहूं दौ[4] असि एक मयांन[5]॥८२७॥
अबै इसके[1] के दरद कौ मरम न सकिहै पाइ[2]।
जा ताबीब घर आपनै मति तू भरम गमाइ॥८२८॥
मन के संग जु[1] नैंन चलि देष आउते तोहि[2]।
तौ काहे कौ विरह यह नित दुष देतौ मोहि॥८२९॥
एक[1] दिना मैं एक[2] पल सकै न पल भरि देषि।
विरह पीर को भावतौ कैसे होइ विसेषि॥८३०॥
विरह झार तन भसम भौ अवधि पाति भइ जोग[1]।
यहै[2] जान पठयौ इहां हमैं जोगि लिष जोग॥८३१॥
अबलौं यह तन[1] राषियौ अवधि आस के[2] जोर।
अब जीवौ पुरलभ भयौ गरजत[3] घन चहुं वोर॥८३२॥
सुनि पयांन घनस्यांम को जोगु अराधौ[1] वाल।
नैंन मेषला मैं मनौ गूंथत डोरे लाल॥८३३॥
सांसन चाहत सांस अब अवधि आस गइ बीत।
के आइसु कै आइबौ जौ राषत परतीत[1]॥८३४॥

---

८२७. (१) आवै भा। (२) जाहि द। (३) सुने द। (४) अंधेर कहु द। (५) अस ऐंकें भया न द।
८२८. (१) अरे इस्क प्र।
८२९. (१) जौ प्र। (२) सोहि प्र।
८३०. (१) येक प्र, ऐक द।
८३१. (१) भये जोग भा। (२) इहै भा।
८३२. (१) तन यह प्र। (२) कौ भा। (३) गाजत द।
८३३. (१) अराध्यौ भा।
८३४. (१) पत प्रीत भा।

जा दिन तै पियगमन किय बिरह पौरि प्रतिहार।
नींद भूष रोकौ[1] हरषि कियौ आप अधिकार॥८३५॥

विरहिन पै आयौ मनौं मैंन दैंन तरबाह[1]।
जुगनू नाहीं जगमगे[2] सिलगत ष्वाहमष्वाह[3]॥८३६॥

प्रीतम बीतन[1] विरह की बीतन[2] जानत नाहिं।
या अनभव कौ सो लहै उपजै ताही[3] माहिं॥८३७॥

जीवै[1] लै वा जोत्ति सौं[2] दोऊ देत[3] मिलाइ।
ऊधौ[4] जोग वियोग मैं अंतर कह ठहराइ[5]॥८३८॥

सोरठा

प्रगट मिलौ[1] तौ एक[2] बिछुरै समता द्वै रहैं[3]।
साजन करौ[4] विवेक भलौ संजोग वियोग कौं[5]॥८३९॥

दोहा

आपुहिं इहि[1] इनसाफ[2] कै कीजै प्रांन अधार।
विरह भार सहि सकत कहुं[3] हित कै झीनै तार॥८४०॥

---

८३५. (१) राकौ प्र, रोक्यौ भा।

८३६. (१) जरवाह प्र, तरवार द। (२) जामुगी भा। (३) व्याहमि व्याह भा।

८३७. (१) बातन प्र। (२) बिन तिय भा। (३) जाही प्र, द।

८३८. (१) जीवै भा। (२) कौ भा। (२) देहु भा। (४) केधौं प्र (५) गहराइ भा।

८३९. (१) मिले प्र। (१) येक प्र, ऐक द। (३) सब थाहू रहें प्र, सब थाहवे रहे द। (४) करै प्र (५) कै भा।

८४०. (१) यह भा। (२) इनसाफ प्र। (३) सकै न हूं प्र।

नैंन भए अगनिहोत्री[१] मीत दरस कै हेत।
बिरह अगिन हिय कुंड तैं[२] निसुदिन बुझन न[३] देत ॥८४१॥
बिरह तवनि[१] तन अति बढ़ी[२] बरस स्यांम घन आइ।
सीतलता सरसै हियै दरद गरद[३] दबि जाइ ॥८४२॥
दैन लगे मन मृगहि तब[१] बिरह अहेरी पास।
जाइ लेतु है दौरि तब प्रीतम सुमन[२] सुवास[३] ॥८४३॥
बिरह समुद[१] बाढ़ौ[२] अथह थहि[३] गरुवा[४] कित आइ।
इहि बिरिया ऐसे समै तूं[५] गरुवा[६] लगि जाइ ॥८४४॥

ध्यान वर्णन

रसनिधि बिन प्रीतम[१] लषै क्यौं ये[२] लहते चैंन।
ध्यांन जषीरा जो जमां करि नहिं धरते[३] नैंन ॥८४५॥
बिरह बैर आसा गढ़ी[१] छिके प्रांन रनसूर।
भरि राषौं[२] दृग ध्यांन जल रूप जषीरा पूर ॥८४६॥

---

८४१. (१) अग्निहोतरी नैन ये भा। (२) मैं भा। (३) आहुति भा।

८४२. (१) तपन प्र। (२) बड़ी भा। (३) गरद दरद प्र।

८४३. (१) जब भा। (२) सुबन भा। (३) याबास प्र, मवास भा।

८४४. (१) समद वाडौ अथह प्र। (२) बाढचौ अरे भा। (३) यह भा। (४) गरुआं भा। (५) तो प्र। (६) गरु आँ भा।

८४५. (१) प्रतिमा प्र। (२) बचौऐ प्र। (३) देते द।

८४६. (१) बढ़ी प्र, द,। (२) रा[ँ] भा।

सोरठा

रहते कौंन अधार दुसह दुर्ग[१] पिय बैर कौ[२]।
करि न[३] राषतै त्यांर ध्यांन जषीरा नैंन जौ।।८४७।।

दोहा

हरि बिछुरत रहतै नहीं बिरहिन के तन प्रांन।
अमृत[१] रूप लहतै नहीं जौ मनमौहन ध्यांन।।८४८।।
कर गहि ध्यांन मलाह तुव[१] करतौ जौ न सहाइ।
नेहिन बिरह समुद्र तैं कौंन काढ़तौ आइ[२]।।८४९।।
जदपि सुगहिरी[१] लाजतैं ठहर सकै नहिं पाइ।
ध्यान निवारै बैठि कै भावंता इत[२] आइ।।८५०।।

दर्शन वर्णन

मन हरिबै की ज्यौं पढ़े पाटी स्यांम सुजांन।
तौ यहऊ पढ़ते[१] कहूं दीबौ दरसन दांन[२]।।८५१।।
दरसन कौं चलतौ कहूं[१] सुमिरन सौं काज।
दृग चकोर होते नहीं ससिमुष के मोहताज।।८५२।।
कसर न मुझमैं कुछ रही असर न अब तक तोहि।
आइ भावते दोजियै बेगि सुदरसन मोहि।।८५३।।

---

८४७. (१) दुरग प्र। (२) बैर कै प्र, बिरह भौ भा। (३) करज प्र ।
८४८. (१) इमरत द।
८४९. (१) तूं भा।
८५०. (१) नवारै प्र, द। (२) इति द।
८५१. (१) ज्यौं भा। (२) उघटतौ द।
८५२. (१) मुहुताज भा, प्र।

कियौ मीत ने ह्यां[1] उदौ सबही जागौ आइ।
बिरह अंधेरी रैंन जहं[2] उदौ उदौ[3] होइ[4] जाइ॥८५४॥

नेही यामैं पलत हैं अरे मीत अभिरांम।
दरस दैत तुव गिरह के षरच होत कछु[1] दांम॥८५५॥

मीता मातैं लेत क्यौं जिन मुषचंद छिपाइ।
ऊंच नीच घर चंद[1] तौ उवत एक[2] सौं आइ॥८५६॥

जिते नषत विधि दृग तितै[1] जौ रचि देतौ मोहि।
तृपित[2] न होते वे तऊ निरष भावते तोहि॥८५७॥

रसनिधि पल भर होतही भावंता पल वोट।
नहीं सम्हारी जाति है यह अनचाही चोट॥८५८॥

हिय घरिया तामैं[1] सुमन बिरह आंच सौं ताइ।
सुबरन कीनौं मीत नै बूटी दरस मिलाइ॥८५९॥

होती बैदन के[1] करै विरह विथा जो दूरि।
काहे कौ दृग ढूंढ़ते दरस सजीवन मूरि॥८६०॥

बिनु देषै तुव[1] भावते कछु वै भावत नांहि।
जनम[2] अलेषै आइ कै लेषै आवत नांहि॥८६१॥

---

८५४. (१) है भा, इहा द। (२) यह प्र। (३) उधौ उधौ द। (४) हो प्र।

८५५. (१) हो प्र।

८५६. (१) फरफंद भा, छरछंद प्र। (२) येक प्र, ऐक द।

८५७. (१) तिजे द। (२) त्रपति द।

८५९. (१) तामै प्र, द।

८६०. (१) कौं प्र।

८६१. (१) तुम भा। (२) जन्म भा।

नेही दृग जोगी भये बरुनी जटा बनाइ।
अरे मीत तैं[1] दै इन्है[2] दरसन भिच्छा आइ॥८६२॥

दरसन भिच्छा के लियै फ़ैरी दै दै जाइ।
जोगी तैं का घटि कहो[1] नैंन वियोगी आइ॥८६३॥

दै अनुरागी दृगन कौ दरस सजीवन मूर।
उलफति कीजै विरह की कुलफत कीजैं[1] दूर॥८६४॥

भीजे[1] तन अंसुवनि लषौं रवि द्युति मुष अभिरांम।
रसनिधि भीजे वसन कौ दियौ चाहियतु घाम॥८६५॥

पायै विहित[1] अहार कौ सब कौ मन भरि जाइ।
मन भर देषैं[2] मीत कौ पर भर मन न अघाइ॥८६६॥

यामैं अपनी गांठि कौ कहु कछु छोरै देत।
दरसन लव मांगत दृगन क्यों मुष मोरै[1] लेत॥८६७॥

जे पल[1] तकिया छोड़ि दृग सकैं न तुज[2] तक आइ।
दरस[3] भीष उनकौं कहीं दीजतु नहिं पहुंचाइ॥८६८॥

नैंन श्रवन बिच होत तौ झगरौ नित्त[1] नवींन।
मीत सुमुष सरसाइ दृग श्रवनन साचौं कींन॥८६९॥

---

८६२. (१) तू द। (२) इनै प्र।
८६३. (१) घट भयौ भा।
८६४. (१) कीतै द।
८६५. (१) भीजौ द।
८६६. (१) पायौ विदत द। (२) भरि देषै प्र।
८६७. (१) मोरे प्र।
८६८. (१) जो भा। (२) तुव भा। (३) द...स प्र।
८६९. (१) निन्ति प्र।

सोरठा

चाहत भांति अनेक मौहन मुष कौ दरसबौ।
बिधि चूकौ बिधि ऐंक रौम रौम दृग ना रचे॥८७०॥

दोहा

श्रवन सुषारे होत हैं सुनैं[1] संदेसिन बैंन।
तृपित[2] होइ क्यौं दरस बिनु रूपअहेरिन[3] नैंन॥८७१॥

बिरहा ग्रीषम दुपहरी[1] प्यास दुहुन अधिकाति।
बन बन मैं[2] लषि लषि जियैं नैंन लवा इक[3] भांति॥८७२॥

नितहूँ[1] आले रहत ये तुव दृग घाले घाउ।
दरस दवा नकौं कभी[2] प्रीतम आंनि लगाउ॥८७३॥

जौं इन दृगनि पतियाउ नहिं प्रीतम साहु सुजांन[1]।
दरस रूप धन दै इन्हैं धरि गहनै मों प्रांन॥८७४॥

मौहन लषि[1] जो बढ़त सुष सो कछु कहत न बैंन[2]।
नैंनन कै रसना नहीं रसना कै नहि नैंन॥८७५॥

चाकर हइ[1] दृग रूप के जामिन जामनु दीन॥
दरस तलब दै भावतै बड़ै[3] नवासज कींन॥८७६॥

---

८७०. (१) येक प्र, एक भा।
८७१. (१) सुनसु प्र। (२) त्रपति द। (३) अहारी भा।
८७२. (१) मधुपुरी भा। (२) मन बन भा। (३) इह भा।
८७३. (१) मित ही द। (२) कथी भा।
८७४. (१) साउ प्र।
८७५. (१) लगि प्र। (२) बनैन भा।
८७६. (१) है प्र, हुय द। (२) जामिन प्र। (३) बड़े द।

मिलन वर्णन

गजगति मैं घरि[1] प्रथम ही फिरत न कटरौ जाइ।
तव यह पहुंचत मीत लौं सुइयन[2] बदन छिदाइ॥८७७॥
कमला लै कै कमल कर लषि गुरुजन की भीर।
धरि हरि घरि[2] जिय ये भवर मिलहिं[3] तरुनजा तीर॥८७८॥
जुदे रहत मन मिलन की सीष दृगन के अंग।
सोवत जागत संगही जित चाहै[1] तित संग॥८७९॥
प्रगट मिले बिन[1] भावते कैसे नैंन अघात।
भूषे अफरत कहुं सुनै सुरति मिठाई षात॥८८०॥
घरियक कौ घरियार वह आयौ है बरियाइ।
रे घरियारी आपनी घरी राषि घर जाइ[1]॥८८१॥
ऐक ऐंक[1] के अंक मिल गिनती ग्यारह[2] होत।
मिलै चार दृग के लषै[3] द्वै मन ऐकै होत॥८८२॥
व्यापी होती जौ तुमैं[1] मिलि बिछुरन[2] की पीर।
मिलि कै पलक न बिछुरते जैसे पय अरु नीर॥८८३॥
सीषु[1] आपनै दृगन सौं[2] इकताई की बात।
जुरी दीठ इक संग है जदिप जुदे दिषात[3]॥८८४॥

---

८७७. (१) जेगति मैं धरि प्र। (२) सोजन भा।
८७८. (१) कर प्र। (२) थरहर थरहरि द। (३) मिलहै द।
८७९. (१) चाहौ भा।
८८०. (१) नहि प्र।
८८१. (१) आइ प्र, घरयाइ भा।
८८२. (१) एक येक प्र, एक एक द। (२) ग्यारा भा। (३) लखौ भा।
८८३. (१) तुम्है प्र। (२) विछुरे भा।
८८४. (१) सिषे भा। (२) सै भा। (३) जित द्रग तित चित जात है जित चित तित द्रग जात प्र।

मैं जानी रसनिधि सही मिली दुहुनि की बात।
जित दृग तितचितु जात है जितु चितु तित द्रग जात[१] :।८८५।।
वढ़ौं[१] मीत तुव द्रग मिलन[२] चित राजी कौ चाउ।
इतराजी मति कर अरे इत राजी ह्वै आउ।।८८६।।
जलकन तिलकन पलनि[१] मैं कहु[२] आली केहि[३] हेत।
भावंता लषि विरह कौ नैन तिलांजुलि देत।।८८७।।
नहि राती है प्रीति सौं है अरात ये[१] रात।
प्रीतम के संजोग मैं क्या वनही वढ़ि जात।।८८८।।
लगतु कमलदल नैंन जव[१] झपटि लिपट हिय आइ।
विरह लपट उरलाइ[१] जव भाज हिये तैं जाइ।।८८९।।
अमरैया कूकत फिरै[१] कोइल सबै जताइ।
अमल भयौ ऋतुराज कौ रूजू होहू सव आइ।।८९०।।
कहि कहि तुहि समुझाईय तेरौ वाहु सयांन[१]।
अरथमान कौ तौ समुझ तब करि उनसों मांन।।८९१।।
मेघ नए उनऐ[१] लषै नऐ नऐ चित चाइ।
तऊ न इये मानत नये लालन ये पगि आइ।।८९२।।

---

८८५. (१) जुरो डोठ इक सा रहे जद्यपि जुदे दिषात प्र।
८८६. (१) बड़ौ भा, (२) तुव मिलन को भा।
८८७, (१) पलक भा। (२) बहु प्र। (३) किह प्र, कहि द। (४) तिलंजुल द ।
८८८. (१) अतराये प्र, आरतये द। (२) बड़ भा।
८८९. (१) जल भा। (२) अकुलाइ भा।
८९०. (१) रहे प्र।
८९१. (१) स्यान द।
८९२. (१) मैं घन ये भा।

रही कहा चकवाइ चित चलि पिय सारद देष।
लोहौ कंचन होत है पारस परस विशेष॥८९३॥

मानु मनायौ मानिनी मति तै धरै गुमांन।
जातै पाइन परन कौ उनै परै सुष मांन॥८९४॥

अरी मधुर अधरांन तैं[1] कटुक बचन मति बोलाँ
तनक षुटाइ तैं घटै लघु[2] सुबरन को मोल॥८९५॥

अब इतराजी मत करै[1] मुष निस राजी राषु।
अब[2] रस जौ चाहौ[3] लयौ सुरंग हयै अभिलाषु॥८९६॥

इती बात कौ समुझि लै तूं अपनैं मन बार।
प्रीति दुलारी षुलत है लहि कै मगजी लाल॥८९७॥

इहि औसर बरषा समै लिपटत[1] लता तमाल।
अरी या समै लाल सौं मांन कहा जिय[2] बाल॥८९८॥

षंडिता वर्णन

देत जताये प्रकट जौ जावक लागौ[1] भाल॥
नव नागरि ने नेह सौं भले बनै[2] हौ लाल॥८९९॥

मौ[1] की हमसौं कहत हौ जिय कौ बासौं हेत।
सांचे बिनु गुनमांल के सांचे कीनै देत॥९००॥

---

८९५. (१) अरी अधर मधुरान तै द। (२) लषि भा।

८९६. (१) अरवी ताजी मति करै प्र। (२) जब भा। (३) चाहे द

८९८. (१) पलटत प्र। (२) कीजियतु प्र, द।

८९९. (१) लागै द। (२) नए प्र, द।

९००. (१) मुंह भा।

कीनौ जिहि मन भावतौ हरुवा जिमि उर[1] बास।
हरुवाई[2] जैयै चलै[3] हरिवाही[4] के पास॥९०१॥
मैटै मैटै दाह उर कत मेटत मुष पाट।
चाहत हू है बाट[1] वह चले जाउ उहिं[2] बाट॥९०२॥
जुही बसत[1] तासौं कहूं प्रीति निवारी जाइ।
मौरसिरी दिन दिन चढ़ै सदा सुहागिल ताइ[2]॥९०३॥
मेरेई उर गड़ि[1] भये[2] तेरेई दृग लाल।
जनि पतियाउ[3] लषौ इन्हैं दरपन[4] लै कै लाल॥९०४॥
नये चलन पहिलै हते लये[1] कहा पठि[2] हाल॥
नये नेह सौं फिरत हौ कछू नये से लाल॥९०५॥

शिक्षा वर्णन

अरी जाति है[1] ब्रिजै जौ[2] मौहन मुष मति जोइ।
फिर न छिपायै[3] छिपैगी इसक मुसक[4] की बोइ॥९०६॥
मांन कहौ[1] मेरौ अरी भूलि उतै मति जाइ।
ऐहै लषि ब्रजचंद[2] कौ मन नग नैंन गंवाइ[3]॥९०७॥

---

९०१. (१) जिहि बरि भा। (२) हरिवाही भा। (३) जौ पै चलै प्र, जै यै भलै भा। (४) हरवाजी प्र, हरजाई भा।

९०२. (१) काट भा (२) वह भा।

९०३. (१) वस्त द। (२) आइ द।

९०४. (१) उरगट प्र। (२) गए भा। (३) जोन ये पत्याइ प्र। (४) देन प्र।

९०५. (१) नये प्र। (२) पट प्र, भा।

९०६. (१) हौ प्र। (२) ब्रजहि भा। (३) छिपहिगी भा। (४) इस्क मुस्क प्र।

९०७. (१) कही भा। (२) आहै लष विन्दु कैचंद प्र। विर्जद (३) गयाइ द।

कही न मानी प्रथम तैं[१] ताकौ है फल येहु।
मांनि[२] कही तू[३] जिन करै निरमोही सौं नेहु॥९०८॥
मैं न कहा तुजसौं[१] अरे मति परु ससि के ष्याल।
एक षोर[२] कौ प्यार है रे चकोर जंजाल॥९०९॥
हित वित विनु[१] मन घन दियौ क्यौं करि सकियै पाइ।
विनु गठि[२] सौदा हाट तैं[३] लायौ[४] कौंन बिसाइ॥९१०॥
मैं न कही तोसौं अरी मैंन कही मति मांन।
मन मांनिक दै आइहै लषि मौहन मुसिक्यांन॥९११॥
नेह पंथ मैं भावतैं[१] धरियौ[२] पाउ सम्हार।
सावित ह्वै[३] मन आपनै मीत रजा अषत्यार॥९१२॥
मैं न कहा कै बार तुहि मैंन कहा मति मांन।
मुझै देषत वहु[१] छले इन नै षांन मांन॥९१३॥
प्रथम न बरजौं हौं तुम्हैं[१] मति वाहै पतियाइ।
चित चोरिन कर सौंपि चित अब काहै पछिताइ[२]॥९१४॥
भूलैहूँ मति दरद[१] कहु वेदरदिन के पास।
पीनसवारौ कब लहै[२] सरस अतर की बास॥९१५॥

---

९०८. (१) ह्व भा। (२) मैंन भा। (३) तुम प्र।

९०९. (१) तुहिसौं भा। (२) और भा।

९१०. (१) मित भा। (२) गुन प्र, मथ भा। (३) तौ प्र। (४) ल्यायौ भा।

९१२. (१) नावते प्र, भावतौ भा। (२) धरिये भा। (३) हुय द, हुइ भा।

९१३. (१) मुहि देखत बहुतै छले भा।

९१४. (१) तुहै प्र, होत है द। (२) पछतात द।

९१५. (१) दरष भा। (२) लषै द।

लोकरीति वर्णन

जाही[१] तै इहि[२] आदरै जगत मांझ[३] सब कोइ।
बौलै जबै बुलाइयै अनबोलै चुप होइ॥९१६॥
हुक्का[१] सौं कहु कौन पै जात निवाहौ[२] साथ।
जाकी[३] स्वांसा रहति है लगी स्वांस के साथ॥९१७॥
मौहन तूं या वात कौ अपनै हियै बिचार।
वजत[१] तमूरा कहु सुनै गांठि गठीले तार॥९१८॥
जग तरवर तैं फल लगै जौ लग[१] कांचौ गातु।
पाके[१] तै फल आपुही डारिन तैं छुटि जातु॥९१९॥
छबि मुकुता लूटनि लगे आइ जरा बट पार।
वैठ बिसूरैं[१] सहर के वासी करहट[२] तार॥९२०॥
विनु औसर न सुहाइ तन चंदन लावौ[१] गारि।
औसर की नीकी लगै मीता सौ सौ गारि॥९२१॥
चलि आयौ[१] जै है चलौ[२] जगत बिदित[३] व्यौहार।
गाहि लिये जोबन कनहि[४] रहित ठहर इकु प्यार॥९२२॥

---

९१६. (१) याही भा। (२) यह भा। (३) याह भा।

९१७. (१) कहुका प्र, हुका द। (२) निबाह्यौ प्र। (३) याकी प्र।

९१८. (१) तजत प्र।

९१९. (१) जौ लौ प्र, तौलगि द। (२) याकै प्र।

९२०. (१) सूरत प्र। (२) करकट भा।

९२१. (१) ल्यावो भा।

९२२. (१) आये प्र। (२) चले प्र। (३) बिहित प्र। (४) जोवनक नहि प्र।

बार बार नहिं होतु है औसर मौसर यार[1]।
सौ सिर दीबै कौ अरे जौ फिर हूजे त्यार॥९२३॥
वितचोरन चितचोर मैं व्यौरौ इतनौ आइ।
उनै[1] पाइ कै मारियै इनके[2] लगियै पाइ॥९२४॥
समौ पाइ कै लगत हैं नीचहुँ करन गुमाँन।
पाय अमरपष द्रुजिनि लौं काग चहै सनमांन॥९२५॥
झूठेही जर जात है याके साषी पांच[1]।
देषी कै काहू सुनी लगत सांच कौ आंच॥९२६॥

फाग वर्णन

जिन नैंनन मैं वसत है रसनिधि मौहन लाल।
तिन मैं क्यौं घालत अरी[1] तैं भरि मूठि गुलाल॥९२७॥
नेह अतर छबि अरगजा भरि गुलाल अनुराग।
षेलत भरी उछाह सौं पिय संग होरी फाग[1]॥९२८॥
कहत सबै नंदलाल सौं हो हो होरीलाल[1]।
षेलत सब सषियां फिरै मुदित होत गोपाल॥९२९॥

---

९२३. (१) पया प्र, बार भा।

९२४. (१) उन्है प्र, इन्है भा। (२) उनके भा।

९२५. (१) समै भा।

९२६. (१) अंाच प्र।

९२७. (१) क्यौ घालत भा।

९२८. (१) बाल प्र, द।

९२९. (१) मुख मींडत आंजत दृगन प्रेम मुदित ब्रज बाल प्र, भा।

अन्योक्ति वर्णन

रे कुचील तनु तेलिया अपनौ मुष तौ हेरि।
सुमन तिवासै तिलनि कौ काहै डारतु पेरि॥९३०॥
अरे बजावत कौंन ढिग हित[1] रबाब के तार।
जुरै जहां[2] है आइ कै बिरहिन कौ दरबार॥९३१॥
जिहि कनैल की फूल की लेत न बास सुहाइ।
माली सुमन गुलाव के उनपै मति लै जाइ॥९३२॥
करबी मैं जौ ऊष सम रस सरसातौ आइ।
साजन[1] देते वाहितौ[2] सहसा पसुति चराइ[3]॥९३३॥
जदपि सुकोल्हु मैं उनै[1] विदित सुपेरौ आइ।
बासे तिलवा सुमनि संग बासु न ताकि जाइ॥९३४॥
तन मन तापैं वारिबौ[1] यह पतंग कौ नांम।
येतैहूं पै[2] जारिबौ[3] दीप तिहारौ[4] कांम॥९३५॥
चैतन होइ न एक सुर कैसे बनैं वनांइ।
जढ़[1] मृदंग बेसुर भये मुहै थपैरै षाइ॥९३६॥
कूंकत अवध लवा[1] लियै अरे बधिक बेकाज[2]।
फिरि आवत काहू सुनैं वाक[3] चढ़े चित बाज॥९३७॥

---

९३१. (१) इत प्र। (२) जुरौ जात है भा।

९३३. (१) सज्जन प्र, सजनन द। (२) याह क्यौं भा। (३) खवाइ भा।

९३४. (१) उन्हें प्र।

९३५. (१) पारकै प्र। (२) येतै पै विहि प्र, द। (३) जारियौ प्र। (४) तिहारोइ भा।

९३६. (१) जड़ भा।

९३७. (१) अवध लवा भा। (२) के काज प्र। (३) चाक भा।

अलगरजी घन सौं नहीं सुनियौ सन्त सुजान।
अरजी चात्रिक दींन की गरजी सुनैं न कांन॥९३८॥
और कहा देषत न हैं[१] ससि तुव मुष[२] की वोर।
चोर लियौ तैं सवन मैं काहे चित्त चकोर॥९३९॥
कहा भयौ जौ सिर धरौ[१] कांन्ह[२] तुम्हैं करि भाउ।
मोरपंष बिनु और तुम उहां न पैहौ नांउ॥९४०॥
रवि ससि अवनि सघन[१] पवन और अगिन की ज्वाल।
ऊंच नीच घर सम लषै[२] द्रुविधा तजि कै लाल॥९४१॥
होत दूबरौ कूबरौ ससि तूं हरि[१] पषवार।
तोही सौं हितु राषहीं द्रग चकोर रिझवार॥९४२॥
हरी करत है पुहुमि[१] सब घन तूं रस बरसाइ।
आक[२] जवासे कौं अरे काहे देतु जराइ॥९४३॥
मोल तोल[१] मैं देतु है[२] छीरहि सरस बढ़ाइ।
आंच न लागन देत वहि आप पहिल जर जाइ[३]॥९४४॥
लषि वटवारि[१] सुजातिया अनष धरै मन माहि[२]।
वड़े नैंन लषि अपुनि पै नैंना सही[३] सिहाहि॥९४५॥

---

९३९. (१) नही भा। (२) तुव ससि मुष भा।
९४०. (१) धरयौ भा। (२) काहु प्र।
९४१. (१) सुघन प्र। (२) लखै भा।
९४२. (१) तैं हर भा।
९४३. (१) पहुम प्र। (२) आव प्र।
९४४. (१) तोय मोल भा। (२) है भा। (३) है द। (३) बिरह आपुर जरजाइ द।
९४५. (१) बड़वार भा। (२) नाहि भा। (३) पै नैन नहि भा।

अरे निरदई मालिया[१] फूलै सुमननि तोर।
नैंक कसक करि हेरतौ प्रीत डार की वोर॥९४६॥
द्वै[१] मन तौल मिलाइ कै पुनि इकठे करि हेर।
ये गौंहूं अरु बाजरै बड़ौ[२] भाउ मैं फैर॥९४७॥
प्यास सहत पी सकतु नहिं औघट घाटनि पांनि।
गज की गरु वाई परी गजही के गर आंनि॥९४८॥
औघट घाट पषेरुवा पीवत निरमल नीर[१]।
गज गरुवाई तें फिरै प्यासै सागर तीर॥९४९॥
अंधियारी निस[१] विच नदी[२] तामैं भंवर अपर।
पार जवैया दरद कब लहै रहै या बार॥९५०॥
हरौ हरौ रंग देषि कै भूलत है मन हैफ।
नींम पतौवनि मैं मिलै कहू भाग कौ कैफ॥९५१॥
धरि सौनै कै पींजरा राषौ इम्रित[१] पिवाइ।
विष कौ कीरा रहतु है बिषही मैं सुख पाइ॥९५२॥
कोलतु काठ कठोर क्यौं[१] होत कमल मैं बंद।
आई मो मन भंवर की इतनी बात पसन्द॥९५३॥
धरे जदपि वहु मोल के धरिनि[१] जवाहिर हूव।
आनंद के औसर तऊ सीस बांधियतु दूव॥९५४॥

---

९४७. (१) दुइमन भा। (२) बड़े भा।
९४९. (१) जाइ पियत है नीर प्र, द।
९५०. (१) निच प्र, बिस (अस्पष्ट) द। (२) नरी द।
९५२. (१) अमृत भा।
९५३. (१) कौ द।
९५४. (१) धरन भा।

चितचाइन[1] जिहि मुष लहौ स्वाद गगेरी[2] पांन।
ढाक[3] पात भावतु सुनौ तिनकौं कहूं[4] सुजांन॥९५५॥
सवही कौ पोषतु रहै इम्रित कला सरसाइ।
ससि चकोर के दरद कौ अजौं मैंक नहि पाइ॥९५६॥
चार जाम दिन्ह के जिन्हें[1] कलप समांन विहात।
चंद चकोरन दरस अव दैंन लगौ अधरात॥९५७॥
समैं पाइकै रूष घनु मिलतु सवैई आइ।
बिलस न जांनै याहि जौं गंयै[1] पछिताइ॥९५८॥
वैठत[1] इक पग ध्यांन धरि मींनन कौं दुषु देत।
वग[2] मुष कारे हो गये रसनिधि याही हेत॥९५९॥
जब देषौ चाहिये[1] तुहैं तब तूं नहीं दिषाइ[2]।
लीलकण्ठ[3] बीतें दसैं[4] फिरिहै कीरा षाइ[5]॥९६०॥
याके वल[1] वह लेतु है पावक चिनगी षाइ।
चंदहु[2] जौ जारन[3] लगै तौ चकोर कित जाइ॥९६१॥
अमित अथाहै हो भरे जदपि समुद[1] अभिरांम।
कौंन कांम के जौन तुम आये प्यासिन कांम॥९६२॥

---

९५५. (१) चितचाहन भा। (२) नागरी भा। (३) डाक भा। (४) कहा भा।

९५६. (१) अमृत भा। (२) दरस द।

९५७. (१) तिनै प्र, ति, है द।

९५८. (१) गयौ प्र।

९५९. (१) बैठन प्र। (२) बक भा।

९६०. (१) जब चहिये देषौ प्र। (२) दिषात भा। (३) नीलकंठ प्र। (४) दसै भा। (५) खात भा।

९६१. (१) बाल भा। (२) चंदहि भा। (३) जासु द।

९६२. (१) समद प्र।

सरस मधुप गुंजत रहै लेत सुमन की बांस।
कुमिलानैं[1] फिरता[2] नहीं अली रली ता पास॥९६३॥
रती रती के बढ़त हीं मन बढ़ि[2] जात अतौल।
घटै भाउ के मन यहै लहै न कौड़ी मोल॥९६४॥
ससि चकोर के दरद कौ[1] जब तुहि असर[2] न हो ।
कुहू निसा षोड़स कला तब तैं बैठत षोइ॥९६५॥
अरे निरदई मालिया कहि[1] जताउ वह[2] बात।
किहि[3] हित सुमनी तोरि तैं छेदत सुइयन[4] गात॥९६६॥
गुल गुलाव अरु कमल कौ रस लीन्हौं[1] इक ताक।
अव जिव चाहत मधुप ये[2] देषि अकेलौ आक॥९६७॥
काग आपुनी चतुरई जव तक लेउ[1] चलाई।
जव लगि सिर पर देई नहि लगि रसतूना[2] आइ॥९६८॥
जा गुलाव के फूल कौ सदा न रंगु ठहराइ।
मधुकर[1] मति पचि तू अरे वासौं नेहु लगाइ॥९६९॥
सव रंगन[1] मैं नीर तुम मिल कै रंग सरसात[2]।
मींन प्रैम रंग[3] से कहौ क्यौं न्यारे ह्वै[4] जात॥९७०॥

---

९६३. (१) कुम्हिलाने प्र। (२) करता प्र, द।

९६४. (१) बटत प्र। (२) बट प्र।

९६५. (१) चकौर कौ दरत तू द। (२) वह तो प्र, तौ द।

९६६. (१) कहुं भा। (२) यह भा। (३) कहि भा। (४) सोजन भा।

९६७. (१) लीन्हौं भा। (२) अब जीवन चाहत मधुप भा।

९६७. (१) लेहु भा।

९६९. (१) मसुकुर प्र, मधुकुर द। (२) लगरसिताबी प्र।

९७०. (१) जाइ तरंग प्र। (२) रसजात प्र। (३) रस प्र।

कठिन दुहूं विध कमल कौं करै मींत[1] सौं हेत।
उयै सोष[2] जल लैत है विना उयै दुष देत॥९७१॥

जानत सही चकोर कर ससि सौं प्रैम[1] सुलूक।
इम्रित सराबी[2] के रसौ समुझै कहा उलूक॥९७२॥

मौला मौला कहतु हैं फूलै अम्बिया नाउ।
और तरुनि मैं नूत यह तेरो धन्य प्रभाउ॥९७३॥

ससि निरमोही हौ भलै भोर भयौ[1] घर जाउ॥
दिनकर बिरह चकोर कौं[2] भेंट निसा कौ[3] दाउ[4]॥९७४॥

दुर्जन वर्णन

तिनिसौं चाहतु दादि तैं मन पसु कौंन हिसाब।
छुरी चलावत हैं गरै जै बकसक कसाव॥९७५॥

मीत बधिक जे निरदई भूंजि करैजा षाति।
जिवहै[1] करत जे जियन की कब मन मैं कसकात[2]॥९७६॥

मीता कसक कसाव कौ[1] कहि हिसाब अब[2] कौंनु।
कसकै हियौ कसाव जौ[3] छुरी चलावै कौंनु॥९७७॥

---

९७१. (१) प्रीत द। (२) यातै सिष प्र।
९७२. (१) कौ प्र। (२) सरीबी प्र। (३) रसहि भा।
९७३. (१) सुभाउ भा। (२) फलै भा।
९७४. (१) भयै भा। (२) मैं प्र। (३) न सकिहौ भा। (४) याहु प्र।
९७५. (१) जैठै प्र, द।
९७६. (१) जिबबह प्र जबहै भा। (२) कसकाह भा।
९७७. (१) कस्व कसाव सौ द। (२) कह भा। (३) सौ प्र।

हौतै जौपै[1] चलत वै[2] सदा चाम के दांम।
रहन न देतै बेदरद काहु तन पै[3] चांम॥९७८॥

दीनता बर्धन

बूझतु आजिज हाल नहिं यही हियै है सूल।
भई आजि जी[1] भाउतैं प्रभु दरगाह कबूल॥९७९॥
चलि न सकै निजु ठौर तैं जे तन द्रुम अभिरांम[1]।
तहां आइ रस बरसिबौ लाजिम तुहि घनस्यांम[1]॥९८०॥
तेरीऐ है[1] साहिबी बार पार सब ठौर।
रस निधि को निसतारलै तूही करि प्रभु गौर[2]॥९८१॥
रौम रौम मैं[1] अघ भरौ[2] पतितन मैं सिरनांम।
रसनिधि ताहि[3] निवाहिबौ[4] प्रभु तेरौई कांम॥९८२॥
भगतइ मारत साजहीं करनी सौ मनराज।
विन करनी मोपै ढरौ[1] कान्ह[2] गरीबनिवाज॥९८३॥
गंग प्रकट जिहि चरन तैं पावन जग कौ कींन।
तिन[1] चरनन कौ आसरौ आइ रसिकनिधि लींन॥९८४॥
मधुसूदन[1] यह विरह अरु अरि नित मांड़त रार।
करुनानिधि अब इहि[2] समैं आपनौ बिरद विचार॥९८५॥

---

९७८. (१) जैये प्र। (२) कहुं भा। (३) मैं भा।
९७९. (१) जो प्र, जिय भा।
९८०. (१) घंस्याम द।
९८१. (१) तेरी है या भा। (२) प्रभु कर भा।
९८२. (१) जो भा। (२) भर्यौ भा। (३) निवाजियौ प्र।
९८३. (१) ढुरौ भा। (२) कहूं प्र।
९८४. (१) तिहि भा।
९८५. (१) मदसूदन प्र, मदूसूदन द। (२) इह द, यह भा।

लषि औगुन तन आपनै भूलि सबै सुधि जाइ।
अधम उधारन नांम[1] तुव रसनिधि सुमिर सुहाइ[2]॥९८६॥
गनत न मेरे अघन की गिनती नहीं बढ़ाइ।
असरन सरन कहाइ प्रभु मति मोहि[1] सरन छुड़ाई॥९८७॥
भगतन तौ तुम तारिहौ[1] अधम कौन पै[2] जाइ।
अधम उधारन तुम बिना उन्हैं[3] ठौर कहुं[4] नाइ॥९८८॥
हौं अति अघमाइन[1] भरौ अघमति कौ सिरदार।
अधम उधारन नाम तुव सौं मेरै आधार॥९८९॥
मैं गीधौं लषि गीधगति गीधै गीधहि जांनि।
गीधे[1] पतितहिं[2] तारिहौ तव बदिहौं प्रभु बांनि॥९९०॥
जो करुनामय हेरिहौ मो करनी की[1] वोर।
मौसौं पतित न पाइहौ ढूढ़ह छिति छोर॥९९१॥
गह्यौ ग्राह[1] गज जिहि समै पहुंचत लगीं न बार।
और कौंनु ऐसे समैं संकट काटनहार[2]॥९९२॥
तुम जगदीश दयाल प्रभु हौ सबही[1] सुषचेत[2]।
दीननि भूलति हौ हियै दीनबंधु किहि हेत॥९९३॥
अधम उधारन बिरद कौ तुम बांधौ सिरनैत।
रसनिधि अब या अधम की सुधि काहे नहि लेत॥९९४॥

---

९८६. (१) बिरद भा। (२) सिहाइ प्र।
९८७. (१) मुहि प्र।
९८८. (१) तारहौ प्र। (२) कें प्र। (३) उनैं प्र। (४) ठौर हूं प्र।
९८९. (१) अधमारन भा।
९९०. (१) बीधै प्र। (२) पतित है द।
९९१. (१) कौ द। (२) डूढ़ै हू भा।
९९२. (१) बांह प्र। (२) टारनहार प्र।
९९३. (१) साहिबी प्र, द। (२) सुचेत द।

अधम उधारन बिरद तुव[1] अधम उधारन काज।
जौ रसनिधि हौ[2] औगुनी तुमै[3] सौगुनी लाज॥९९५॥
हौं दुरबल तन प्रभु सुनौ उत भव सिंधु अपार।
तुमहीं राषत बार जौ कौंन लगावैं[1] पार॥९९६॥
स्याही[1] बारन तैं गई मन तैं भई न दूरि।
समुझि चतुर चित बात यह रहत बिसूरि बिसूरि॥९९७॥
अधम उधारन प्रभू करतौ[1] जतन सम्हार।
होतौ मो सौं पतितु क्यौं या[2] भवसागर पार॥९९८॥
हेरत कहूं जौ दींन तन वाह् आवती लाज।
प्रीतम तौ न कहावतौ दींन बन्धु ब्रजराज॥९९९॥
जदिप अकरनी हूँ[1] करी मैं हरि भांति मुरारि।
प्रभु करुनाकर[2] आपुहीं हरि विधि लेउ[3] सुधारि॥१०००॥
कहैं अलप मति कौंन विधि तेरे गुन बिस्तार।
दीनबन्धु प्रभु दींन कै लै हरि बिधि निस्तार॥१००१॥

---

९९५. (१) नाम तुम प्र। (२) जो पै रसनिधि भा, जो रसनिधि मैं प्र, द। (३) तुम्है प्र।

९९६. (१) लगावतु प्र।

९९७. (१) स्याई द।

९९८. (१) करिहौ भा। (२) है भा।

१०००. (२) हौ प्र, है भा। (२) करनी करि भा। (३) अपनी सब विध लेहु भा।

छन्दानुक्रमणिका

हिन्दी-हजारा-साहित्य सूची

१. प्रतापहजारा : खेमराज (ओरछा नरेश महाराज रुद्रप्रताप के दरबारी कवि)
२. रतनहजारा : पृथ्वीसिंह 'रसनिधि'
३. प्रतापसिंह सिंगार हजारा : संकलनकर्ता—अज्ञात
४. प्रतापवीर हजारा : संकलनकर्ता—अज्ञात
५. हजारा : तुलसीदास
६. विजयहजारा : संग्रहकर्त्ता मौलवी अब्दुलहक (संवत् १९७१ में लक्ष्मण विजय प्रेस डूंगरपुर से मुद्रित)
७. कालिदासहजारा : संकलनकर्त्ता—कालिदास
८. शब्दहजारे : गुरूगोविंदसिंह
९. रतनहजारा : दलसिंह (रचना काल १९०५)
१०. हफीजुल्ला खां का हजारा—सूक्ति-सुधा : संकलनकर्ता—हफीजुल्ला खां
११. षटऋतुहजारा : संकलनकर्त्ता—परमानन्द सुहाने, प्रकाशक-नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
१२. नखशिखहजारा : संकलनकर्ता परमानन्द सुहाने, प्रकाशक—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
१३. रसमोदक हजारा : कुंवर असकंदगिरि, हिम्मत बहादुर के शिष्य (रचनाकाल १९०५, प्रकाशक वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई)
१४. सुजानहजारा : सूदन कवि
१५. ब्रजविनोदहजारा : बद्रीविशाल
१६. भूषणहजारा : भूषण
१७. होलीहजारा : दीवान प्रतिपाल सिंह

१८. छत्रहजारा : गोरेलाल
१९. वीरहजारा : जगमोहनसिंह
२०. गोविन्दहजारा : गोविन्द गिल्ला भाई
२१. बलदेव हजारा : बलदेव प्रसाद
२२. चम्पत प्रकासहजारा : अज्ञात
२३. वीरहजारा : ठाकुर नरेंद्र सिंह
२४. हजारा : कुलपति मिश्र
२५. होली हजारा : संकलनकर्ता—अज्ञात

हजार छन्दों के अन्य संग्रह-ग्रंथ

१. श्रृंगार सुधाकर
२. श्रृंगार सरोज
३. श्रृंगार तिलक
४. सुन्दरी सर्वस्व
५. सुन्दरी तिलक

[उपर्युक्त हजारा ग्रन्थों की सूची श्री अगरचन्द नाहटा द्वारा लिखित एवं कादम्बिनी के मई १९६७ तथा मई १९६८ के अंकों में प्रकाशित 'हजारा संज्ञक हिन्दी रचनाएं' तथा 'कुछ और हजारे' शीर्षक लेखों के आधार पर प्रस्तुत की गई है। —सं०]